वाणी

वर्ष : 37 अंक : 139 दिसंबर 2023

पत्रिका पढ़ने के लिए, क्यूआर कोड स्कैन करें

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक
तिमाही गृह पत्रिका

मांबलम, चेन्नै में आयोजित विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान केन्द्रीय वित्त मंत्री **श्रीमती निर्मला सीतारमन** का पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी **श्री अजय कुमार श्रीवास्तव**

चेन्नै में आयोजित विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान लाभार्थियों को चेक प्रदान करते हुए केंद्रीय मंत्री **माननीय श्री पीयूष गोयल** साथ में है कार्यपालक निदेशक महोदया **सुश्री एस श्रीमती**

वाणी

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक की तिमाही गृह पत्रिका

वर्ष : 37 अंक 139 दिसंबर 2023

संदेश

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी महोदय का संदेश 3
कार्यपालक निदेशक महोदया का संदेश 4
कार्यपालक निदेशक महोदय का संदेश 5
महा प्रबन्धक महोदय का संदेश 6

संपादकीय

डिजिटल युग और हिंदी 7

विशेष आलेख

अयोध्या बनेगा देश का नया आर्थिक केंद्र 8
भाषा में अनुवाद की प्रासंगिकता 41
हिंदी : एक समुन्नत भारतीय भाषा 45
सरल भाषा में हो न्याय प्रक्रिया 50
यतो धर्म: ततो जय: 54
गुड फ्राइडे 55
"चाँद ये पैगाम लाया है: माह-ए-रमज़ान आया है" 56
वेड इन इंडिया 57

बैंकिंग व अन्य लेख

बैंक में धोखाधड़ी जोखिम प्रबंधन 10
डिजिटल बैंकिंग 12
बैंक अपनी अनुपालन संस्कृति को कैसे सुधार सकते हैं? 14
बैंकिंग उद्योग में प्रौद्योगिकी परिवर्तन: एक विश्लेषण 16
डिजिटल करेंसी : ई-रुपया 22
भारत में साइबर कानून (आइटी कानून) 35
डिजिटल बैंकिंग की दुनिया में
आइओबी के साथ 39
फिशिंग- चुनौतियाँ और समाधान 43
उभरती प्रौद्योगिकी और आइओबी 48

कविता

सिनपा रिकवरी 11
हिन्दी 23
बचपन 49

साहित्य का सफ़रनामा

प्रतिबद्ध हूं, संबद्ध हूं, आबद्ध हूं 19

फोटो फ़ीचर

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय जयपुर के निरीक्षण के दौरान की झलकियाँ 28
विभिन्न नराकासों से प्राप्त पुरस्कारों की झलकियाँ 29

जागरूकता कोना

तत्काल ऋण आवेदनों से सावधान रहें 15
आइओबी डिजिटल बैंकिंग कैलेंडर 2024: आपके वित्तीय संसार की सरलता और सुविधा की कुंजी 27
डेस्कटॉप/लैपटॉप को सुरक्षित करने हेतु महत्वपूर्ण टिप्स 34
धोखाधड़ी वाले ई-मेल पहचान व बचाव 52

कृति दर्पण

डार्क हॉर्स 24

विविधा

शब्द शब्दांतर 26
हंसी की फुलझड़ियाँ 53
ज्ञान के मोती 53
राजभाषा प्रश्नोत्तरी 59
प्रतिस्पन्दन 60

वाणी

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक
की तिमाही गृह पत्रिका

वर्ष : 37 अंक 139 दिसंबर 2023

तुम वहन कर सको जन-मन में मेरे विचार !
वाणी मेरी चाहिए तुम्हें क्या अलंकार ?

मुख्य संरक्षक
अजय कुमार श्रीवास्तव
प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी

संरक्षक
एस श्रीमती
कार्यपालक निदेशक

संरक्षक
संजय विनायक मुदालियर
कार्यपालक निदेशक

परामर्शदाता
रेयाजुल हक
महा प्रबन्धक

संपादक
कृष्ण कुमार गुप्ता
मुख्य प्रबंधक

संपादन सहयोग
फणीष मणि त्रिपाठी
प्रबंधक
केंद्रीय कार्यालय

संपादन सहयोग
नगेन्द्र कुमार सिंह
प्रबंधक
केंद्रीय कार्यालय

संपादन सहयोग
शुभम दीक्षित
प्रबंधक
केंद्रीय कार्यालय

मुद्रक
कृष्णराज प्रिंटर्स
36 देवराजन स्ट्रीट, रॉयपेट्टा
चेन्नै 600 014, तमिलनाडु
दूरभाष : 044-28481125

वाणी में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं ।
बैंक का इससे सहमत होना ज़रूरी नहीं है ।

पत्र व्यवहार का पता
इण्डियन ओवरसीज़ बैंक
राजभाषा विभाग, केंद्रीय कार्यालय,
763 अण्णा सालै, चेन्नै 600002
फैक्स : 044-28551618
दूरभाष : 044-28519572
ई-मेल : official@iobnet.co.in

केवल आंतरिक परिचालन हेतु

संदेश

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी महोदय का संदेश

प्रिय आइओबियन्स,

दिसंबर तिमाही का वित्तीय परिणाम आ चुका है । आप सभी की मेहनत एवं प्रयासों से बैंक ने इस तिमाही में रु. 723 करोड़ का शुद्ध लाभ अर्जित किया है । बैंक ने जो लाभार्जन किया है, हमें उसे बढ़ाते रहने के लिए अनवरत कोशिश करनी होगी । सितंबर तिमाही में बैंक का निवल एनपीए 0.68% था और दिसंबर तिमाही में यह आंकड़ा 0.62% का है, क्रमश: निवल एनपीए में गिरावट अच्छा संकेत है । इस तिमाही में बैंक ने बफर के रूप में प्रावधान कवरेज अनुपात 96.85% रखा है । साथ ही, हमारे बैंक का शेयर मूल्य भी निरंतर नई ऊँचाईयों को छू रहा है । सामान्यत: इससे आमजन के बीच बैंक की विजिबिलिटी बढ़ी है । स्पष्ट है कि बैंक की वित्तीय स्थिति अभी अच्छी है ।

आप सभी अवगत हैं कि इस वर्ष बैंक 10 फरवरी को अपना 88वाँ स्थापना दिवस मनाने जा रहा है । आइये, इस दिन को हम सब मिलकर कुछ खास एवं यादगार बनाएं । इस अवसर का लाभ उठाते हुए शाखाएँ उच्च आय वाले एसबी एवं चालू खाताधारकों, सरकारी संस्थान के खाताधारकों एवं उच्च-मूल्य प्रवर्ग के एनआरई खाताधारकों से मिलकर, बैंक के साथ लंबे समय से जुड़े रहने के लिए उनका अभिवादन करें । साथ ही, प्रयास करें कि उच्च-मूल्य प्रवर्ग के निष्क्रिय पड़े खातों को, यथाशीघ्र सक्रिय किया जा सके । इस अवसर पर वित्तीय समावेशन के उत्पाद यानी एपीवाई, पीएमएसबीवाई, पीएमजेजेबीवाई को प्रोन्नत कर, ग्राहकों को इन योजनाओं के लाभों से अवगत करवाएं । जिससे कि ग्राहक इन योजनाओं को सब्सक्राइव करने में उत्सुक हो सकें । इन योजनाओं के जरिए बड़ी आसानी से राजस्व सृजित किया जा सकता है ।

ग्राहकों के लिए उपलब्ध डिजिटल बैंकिंग यानी बैंक के डिजिटल उत्पादों का भरपूर प्रचार-प्रसार करें । बैंक के पास डिजिटल माध्यम से खुदरा ऋण देने, ऑनलाइन बचत खाता खोलने, ई-बीजी, मोबाइल बैंकिंग ऐप, ऑनलाइन के जरिए जमा लॉकर का तुरंत आवंटन करने आदि की सुविधा उपलब्ध है । हम ऑनलाइन के जरिए ग्राहकों की वित्तीय जरूरतों को पूरा करने में पूरी तरह से सक्षम हैं । ग्राहकों को ऑनलाइन निर्बाध बैंकिंग करने की लिए प्रोत्साहित करें, जिससे कि शाखा पर ग्राहकों की निर्भरता कम होगी और डिजिटल लेन-देन को अधिकाधिक बल मिलेगा ।

हम वित्तीय वर्ष 2023-24 की अंतिम तिमाही में प्रवेश कर चुके हैं । हमें टीम के रूप में कार्य करते हुए चालू वित्तीय वर्ष हेतु निर्धारित सभी लक्ष्यों को साधने हेतु भगीरथ प्रयत्न करना चाहिए । मार्च तिमाही के सफल समापन के लिए सभी कार्यालय एवं शाखाएँ सुदृढ़ रणनीति बनाएँ । आत्मावलोकन करें कि बैंक द्वारा निर्धारित लक्ष्यों का कितना प्रतिशत आपने प्राप्त कर लिया है और कहाँ आपको अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है । उत्साह व ऊर्जा के साथ एकाग्रता से लक्ष्य की ओर बढ़ें, जीत अवश्य होगी ।

आपको दिसंबर तिमाही के सफल समापन पर शुभकामनाएं देते हुए, मुझे गोपालदास 'नीरज' जी की प्रसिद्ध पंक्तियां याद आ रही हैं-

है बहुत अँधियार अब सूरज निकलना चाहिए,
जिस तरह से भी हो ये मौसम बदलना चाहिए ।

शुभकामनाओं सहित,

अजय कुमार श्रीवास्तव
प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी

संदेश

कार्यपालक निदेशक महोदया का संदेश

प्रिय सहकर्मियो,

एक बार फिर वाणी के नवीनतम अंक के माध्यम से आप सभी से संवाद करते हुए बेहद प्रसन्नता हो रही है। यह बेहद हर्ष की बात है कि हमारा राजाभाषा विभाग वाणी के इस अंक में डिजिटल बैंकिंग संबंधी विषयों को प्रमुखता से स्थान दे रहा है । साथियो, डिजिटल बैंकिंग को अगर 21वीं शताब्दी की युगांतकारी घटनाओं में से एक कहा जाए तो यह कोई अतिशयोक्ति न होगी । डिजिटल बैंकिंग ने आज न केवल कहीं भी और कभी बैंकिंग सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की है बल्कि कागज विहीन निर्बाध बैंकिंग का मार्ग भी प्रशस्त किया है । ऐसे समसामयिक विषय पर सूचनापरक पत्रिका का प्रकाशन न केवल स्टाफ सदस्यों को डिजिटल बैंकिंग की क्षमताओं से अवगत करवाएगा बल्कि उनके बीच अद्यतित जानकारी का प्रसार भी करेगा । इस नवोन्मेष पहल के लिए पत्रिका का संपादक मण्डल तथा सभी लेखक बधाई व प्रशंसा के पात्र हैं ।

अब अगर बात बैंकिंग कारोबार की करें तो दिसंबर तिमाही के उत्साहवर्धक परिणाम आ चुके हैं। यह आप सभी के अथक परिश्रम का परिणाम था कि बैंक ने दिसंबर तिमाही में 723 करोड़ का शुद्ध लाभ अर्जित किया । जिसके लिए आप सभी अपनी पीठ थपथपा सकते हैं । लेकिन जहां से मैं देख पा रही हूँ, हम वित्तवर्ष की शुरुआत में एनपीए में कमी लाने हेतु निर्धारित किए गए लक्ष्यों से थोड़ा पीछे नज़र आ रहे हैं । हमने जिस तरह के तुलन पत्र की कल्पना की थी ये आंकड़े उस तुलन पत्र का हिस्सा नहीं हो सकते । साथियो, आज कल करते- करते हम वित्तवर्ष की अंतिम तिमाही में प्रवेश कर चुके हैं । अब यहाँ से चीजों को और आगे के लिए टाला नहीं जा सकता । अब हमें अभी नहीं तो कभी नहीं की नीति अपनानी होगी । हमें अपने प्रयास एनपीए की वसूली की दिशा में केन्द्रित करने होंगे ताकि वह लाभ जो हमने असीम मेहनत से अर्जित किया था और जो प्रावधान की वेदी पर होम हो गया, उसे दोबारा प्राप्त कर सकें ।

चाहें छोटी हो या बड़ी, हमें वसूली पर अधिक ध्यान केन्द्रित करना होगा । मैं प्रत्येक स्टाफ से अनुरोध करती हूँ कि सभी क्षेत्रों यथा वसूली, कासा एवं खुदरा ऋण में विशेष रूप से आवास ऋण के अंदर अच्छे ग्राहक लाकर बैंक के लाभ के प्रतिशत को बढ़ाने में अपना योगदान दें । अंत में देश के भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी बाजपेयी जी की पंक्तियाँ आप सभी को सौंपते हुए अपनी वाणी को विराम दूँगी ।

हार नहीं मानूंगा, रार नहीं ठानूंगा,
काल के कपाल पे लिखता मिटाता हूं
गीत नया गाता हूं ।

स्थापना दिवस की शुभकामनाओं सहित,

श्रीमती

एस श्रीमती
कार्यपालक निदेशक

संदेश

कार्यपालक निदेशक महोदय का संदेश

डिजिटल बैंकिंग में नित नई प्रगति ग्राहकों की जिन्दगी आसान और खुशनुमा बना रही है। हाल ही में भारतीय रिज़र्व बैंक ने एकीकृत भुगतान इंटरफेस (यूपीआई) के जरिए पे-लेटर खातों से भुगतान करने की मंजूरी दी है। ग्राहक अब अपने बैंक द्वारा पहले से स्वीकृत क्रेडिट लाइंस को यूपीआई के साथ लिंक कर सकते हैं। यदि आपके बैंक खाते में बैलेंस नहीं है तब आप इन क्रेडिट लाइंस की मदद से आसानी से भुगतान कर सकते हैं। डिजिटल बैंकिग उत्पादों और सेवाओं से जुड़े ग्राहक चुटकियों में अपनी ख्वाहिशें पूरी कर सकते हैं।

डिजिटल फुटप्रिंट ने सिर्फ शहरों में ही नहीं, ग्रामीण क्षेत्रों में भी रोशनी फैलाने का काम किया है। वित्तीय समावेशन की मुहिम को उपयोगी बनाने में डिजिटल प्रक्रियाओं की अहम भूमिका रही है। कारोबार संवादियों के जरिए आज देश के पिछड़े इलाकों और गरीब लोगों को बैंकिंग से जोड़ना संभव हो पाया है। गांव भले ही बैंक से दूर हों, पर बैंक, एजेंट और बीसी के जरिए, स्वयं उनके दरवाजे पर पहुंचकर बैंकिंग लेन-देन को संभव बना रहे हैं। डिजिटल बैंकिंग की वजह से आज गावों की बड़ी आबादी की जिन्दगी उम्मीदों और आशाओं से भर गई है।

डिजिटल बैंकिंग से लोगों को वित्तीय ताकत मिल रही है जो हमारे देश की आर्थिक तरक्की में योगदान कर रहा है। डिजिटल ऋण ने भी ज़रूरमंदों के लिए संभावनाओं के नए द्वार खोले हैं। वर्ष 2022-23 में डिजिटल ऋण का आंकड़ा करीब एक लाख करोड़ रुपए रहा है। अर्न्स्ट एंड यंग की एक रिपोर्ट के अनुसार डिजिटल ऋण संवितरण वर्ष 2026 तक 47.4 लाख करोड़ रुपए पर पहुंच सकता है।

डिजिटल मोड में संभावनाएं असीमित है तो चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं। डिजिटल धोखाधड़ी की रोकथाम और ग्राहकों की शिकायतों के त्वरित निपटान के लिए मजबूत तंत्र बनाने की आवश्यकता है। हमारे देश की बड़ी आबादी डिजिटल बैंकिंग से जुड़ रही है जो इस क्षेत्र के खतरों से अनजान है और आसानी से धोखाधड़ी का शिकार बन सकती है। हमारी जिम्मेदारी है कि हम अपने ऐसे ग्राहकों को डिजिटल रूप से साक्षर व सक्षम बनाएं ताकि वे सुरक्षित डिजिटल बैंकिंग की आदत अपना सकें।

शुभकामनाओं सहित,

संजय मुदालियर

संजय विनायक मुदालियर
कार्यपालक निदेशक

संदेश

महा प्रबन्धक महोदय का संदेश

प्रिय आइओबियन्स,

बैंक की पत्रिका "वाणी" के माध्यम से आप सभी से संवाद का यह पहला अवसर है, जो कि मेरे लिए अत्यंत गर्व का विषय है। हम वित्त वर्ष की अंतिम तिमाही में प्रवेश कर चुके हैं। यह अपने आप में विशेष मायने रखती है। एक ओर जहां जनवरी माह में विश्व हिन्दी दिवस के दौरान सारा विश्व हिन्दीमय हो जाता है, तो वहीं दूसरी ओर ठीक एक महीने बाद 10 फरवरी को बैंक का स्थापना दिवस हमें अपने बैंक के आदर्शों, मूल्यों और नीतियों की कसौटी पर खुद को परखने का मौका देता है। यह हमारा दायित्व है कि हम अपने संस्थान को शीर्ष पर ले जाने में कोई कसर न छोड़ें।

आज का दौर में विज्ञापन बाजार की दुनिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। एक आंकड़े के मुताबिक ऑनलाइन, अखबार, पत्रिका, बोर्ड, होर्डिंग आदि के माध्यम से औसत व्यक्ति प्रतिदिन 280 से 310 विज्ञापन देखता है। विज्ञापन, बिक्री को बढ़ावा देने की एक शक्तिशाली तकनीक के रूप में, विपणन के क्षेत्र में चमत्कार कर रहा है। विज्ञापन, लोगों को सूचना, उत्पादों आदि के बारे में जागरूक करने का एक शानदार तरीका है। विज्ञापन के माध्यम से हम ग्राहकों के ज़ेहन में ये बात पुख्ता तौर पर स्थापित कर सकते हैं कि उनकी हर ज़रूरत के लिए हमारे पास एक उत्पाद है। उनके सपनों के घर और कार की चाबी हमारे पास है। अब विज्ञापन न केवल हमें अपने लक्षित ग्राहकों तक पहुँचने में मददगार साबित हो रहा है बल्कि यह ग्राहकों को शिक्षित करने का एक सशक्त टूल बनकर भी उभरा है।

साथियो, नई पीढ़ी पूरी तरह टेक्नोलॉजी पर निर्भर है और हम भी। हमार बैंक तकनीक के क्षेत्र में नित नए बदलाव कर रहा है जो कि नई पीढ़ी को बैंक से जोड़ने में मील का पत्थर साबित हो सकते हैं। इन तकनीकी क्षेत्रों में हुए विकास को इस पीढ़ी तक पहुँचने का सबसे ताकतवर माध्यम है सोशल मीडिया। मुझे यहाँ यह बताते हुए बेहद खुशी हो रही है कि अल्प समय में ही हमारे सोशल मीडिया सेल ने जिन ऊंचाइयों को छुआ है वह अकल्पनीय था। आज हमारे यूट्यूब चैनल पर 3,28,000+, फेसबुक पर 1,00,000+, ट्विटर पर 40,900+ सब्सक्राइबर/ फ़ालोवर हैं। साथियो, अगर हम लोगों द्वारा डिजिटल रूप में देखें जाने वाले औसत विज्ञापनों का एक प्रतिशत भी कवर कर पाते हैं तो हमारे ग्राहक आधार में कितना विस्तार होगा इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

इस क्रम में राजभाषा विभाग द्वारा वाणी के इस अंक को डिजिटल होते बैंकिंग परिदृश्य पर केन्द्रित करना एक सराहनीय पहल है। यह हमारे स्टाफ सदस्यों का बैंकिंग के क्षेत्र में हो रहे बदलावों से सरल भाषा में परिचय करवाने में मदद करगी। जब हम स्वयं अद्यतित होंगे तभी अपने ग्राहकों को नए परिवर्तनों से अवगत करवा पाएंगे। हमें न केवल तैयार किए गए विशिष्ट उत्पादों से बल्कि **अपने मिलनसार और सौम्य व्यवहार से भी ग्राहकों का दिल जीतना होगा**।

असीम शुभकामनाओं सहित,

रेयाजुल हक़
महा प्रबन्धक

डिजिटल युग और हिंदी

प्रिय पाठको,

वाणी पत्रिका का नवीनतम 139वां अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है ।

इस अंक के जरिए हमने समाज की मानसिकता में डिजिटलीकरण की सक्रियता के महत्व को दर्शाने का प्रयास किया है । हमारे जीवन के हर क्षेत्र में डिजिटलीकरण का महत्व बिना किसी झिझक एवं ऊहापोह के स्पष्ट है । संप्रेषण तकनीक एवं इंटरनेट के बढ़ते प्रयोग से सुविधा, गति और सरलता बढ़ी है । डिजिटल युग में, हमें अप्रत्याशित तथा दुर्भाग्यपूर्ण स्थितियों का भी सामना करना पड़ रहा है । जिसमें सोशल मीडिया, डिजिटल लेन-देन, ई-कॉमर्स, वीडियो कॉलिंग आदि की महत्वपूर्ण भूमिका है । साथ ही, हमें अब नए चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है यानी साइबर सुरक्षा, डेटा गोपनीयता, एलइडी पॉल्यूशन आदि । इस अंक में प्रकाशित विभिन्न आलेखों के माध्यम से आपको आगे की तैयारी करने में मदद मिल सकती है ।

डिजिटल युग में हिंदी के बढ़ते कदम के हम सभी साक्षी हैं । सोशल मीडिया, समाचार पत्र, विज्ञापन एजेंसियों में हिंदी का वर्चस्व देखते ही बन रहा है । इसका एक छोटा सा उदाहरण है – एक समय था जब विदेशी कम्पनियों के कॉल सेंटरों में अंग्रेजी जानने वालों का दबदबा था । परंतु, अब वहाँ हिंदी के माध्यम से उपभोक्ताओं की बात सुनने और समस्याएं सुलझाने का कार्य किया जा रहा है । अधिकांश अंग्रेजी समाचार पत्रों और टी.वी चैनलों ने अपना हिंदी संस्करण निकालना शुरू कर दिया है क्योंकि उन्हें समझ आ गया है कि हिंदी की उपेक्षा करके आम भारतीयों के दिलों में जगह नहीं बनाया जा सकता ।

पत्रिका की पृष्ठ सं. 28 से 31 डिजिटल कैलेंडर से संबंधित है । जिसे कार्यालयों / शाखाओं में यथोचित स्थान पर प्रदर्शित करें । वाणी के इस अंक में हमेशा की तरह सभी स्थायी स्तंभों को बरकरार रखते हुए, मुख्यत: डिजिटल बैंकिंग विषयक आलेखों को स्थान दिया गया है । एक ओर 'अयोध्या बनेगा देश का नया आर्थिक केंद्र' विषयक आलेख में अर्थव्यवस्था के विकास में पर्यटन के महती योगदान, 'बैंक में धोखाधड़ी जोखिम प्रबंधन' विषयक आलेख में बैंकों में जोखिम संस्कृति के निर्माण पर जोर तथा 'डिजिटल बैंकिंग' विषयक आलेख ग्राहकों के लिए उपलब्ध नए-नए डिजिटल उत्पादों से परिचित करवाता है, वहीं दूसरी ओर बैंकिंग आलेख 'बैंक अपने अनुपालन संस्कृति को कैसे सुधार सकता है', 'भारत में साइबर कानून' और 'डिजिटल करेंसी : ई-रुपया' जैसी गंभीर एवं तकनीक परक विषयों पर चर्चा की गई है । साहित्य का सफरनामा स्तंभ में यशस्वी साहित्यकार वैद्यनाथ मिश्र के 'ढक्कन मिश्र से बाबा नागार्जुन बनने तक के सफर' को समेटा गया है तथा कृति दर्पण स्तंभ में नीलोत्पाल मृणाल की साहित्य अकादमी से पुरस्कृत पुस्तक 'डार्क हार्स' पर विधिवत साहित्यिक समीक्षा प्रस्तुत है । आपके रसास्वादन के लिए विभिन्न हृदयस्पर्शी विषयों पर कविता भी प्रस्तुत है । इस अंक के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी रचनाकारों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ ।

आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा में ...

कृष्ण कुमार गुप्ता
मुख्य प्रबंधक सह संपादक

सुरेश रुंगटा, अंशकालिक निदेशक

अयोध्या बनेगा देश का नया आर्थिक केंद्र

अयोध्या में बन रहा 'श्रीराम जन्मभूमि मंदिर' हिन्दुओं की आस्था के केन्द्र के साथ-साथ देश और प्रदेश की आर्थिक उन्नति को बढ़ाने का एक बड़ा माध्यम भी बनेगा। साधारणतः मंदिर और विकास को दो अलग-अलग नजरियों से देखा जाता है, लेकिन भारत में देश की अर्थव्यवस्था को बढ़ाने में मंदिरों का सकारात्मक योगदान सदियों से भरपूर मिलता रहा है। भारत में धर्म, अध्यात्म और आस्था ऐसी चीज हैं जो सभ्यता के विकास के साथ-साथ हमारे आर्थिक विकास का भी एक महत्वपूर्ण माध्यम रहा है। तथाकथित कुछ अर्थशास्त्री व वामपंथी विचारक अक्सर यह सवाल करते नजर आते हैं कि मंदिर बनने से देश को क्या फायदा होगा? अभी हाल ही में इंडियन ओवरसीज़ कांग्रेस के अध्यक्ष सेम पित्रोदा ने कहा कि देश के सामने बेरोजगारी, गरीबी, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी कई समस्याएं हैं, जिनके बारे में कोई बात नहीं करता। हर कोई मंदिर की बात कर रहा है, जबकि मंदिर से रोजगार नहीं मिलने वाला है। लंबे समय से अमेरिका में रहने के कारण लगता है कि सेम पित्रोदा को भारतीय सभ्यता और संस्कृति की कोई जानकारी नहीं है, और यदि है भी तो वे अपनी पार्टी के आलाकमान को खुश रखने के लिए इस तरह के आधारहीन बयान देकर पार्टी को गरीबों का हितैषी साबित करने का ढोंग कर रहे हैं।

भारत की जनता का अनादि काल से ही धर्म के प्रति विशेष लगाव रहा है जिसकी अभिव्यक्ति मंदिरों में स्थापित देवी-देवाताओं की मूर्तियों के प्रति अपार आस्था, पूजा एवं आराधना से प्रकट होती है। मंदिरों में जाना और अपने आराध्य को फूल-माला, फल-नैवेद्य के साथ-साथ कुछ द्रव्य यहां तक की सोना-चाँदी, हीरे-जवाहरात तक न्योछावर कर हिन्दू अपने को निहाल मानते हैं। यही कारण है कि भारत के मंदिरों में अपार धन-संपदा इक्ट्ठा हो जाती है। मंदिरों के पास अकूत संपत्ति की कहानी सुनकर ही 1025 ई0 में महमूद गजनवी ने गुजरात प्रांत स्थित सोमनाथ मंदिर को 17 बार लूटा और करीब उस समय 20 मिलियन दीनार मूल्य के बराबर हीरे जवाहरात और सोना- चाँदी लूट कर अपने साथ ले गया था। क्या यह किसी से छिपा है की पटना जंक्शन स्थित हनुमान मंदिर के चढ़ावे एवं लड्डू की कमाई से बिहार में सात बड़े अस्पताल चल रहे हैं जिसमे यहाँ की जनता को बराबर स्वास्थ्य लाभ मिलता है ।

मंदिरों से होने वाले फायदों का एक ज्वलंत उदाहरण हमारे सामने बनारस में बना काशी कॉरिडोर है। काशी कॉरिडोर बनने से पहले बनारस में करीब 80 लाख पर्यटक आया करते थे। लेकिन जबसे काशी का जीर्णोद्धार हुआ है, वहां अब लगभग 8 करोड़ लोग प्रतिवर्ष पहुँच रहे हैं। इतना हीं नहीं वर्ष 2022-23 में 1770 करोड़ रूपये का जीएसटी संग्रह हुआ जो 2021-22 में 1120 करोड़ था, कारण है यहां के कारोबार में बेतहाशा बढ़ोत्तरी। पर्यटकों की संख्या बढ़ने से होटलों एवं धर्मशालाओं की आमदनी एवं मांग बढ़ गयी है। शहर की जमीनो का भाव आकाश छू रहा है। दर्शनार्थियों की संख्या बढ़ने से रिक्शा, टैक्सी व बैटरी चलित वाहनों को फुरसत नहीं मिलता है। यों तो काशी विश्वनाथ कॉरिडोर का कायाकल्प सीधे तौर पर धर्म और आस्था से जुड़ा मामला नजर आता है। जबकि इसके पीछे छिपा अर्थ-विज्ञान एक अलग तस्वीर पेश करता है, जो बताता है कि इस एक मंदिर से फूल-माला, पूजन-साम्रगी, प्रसाद, यातायाता के साधन, दवाई, होटल (खाने

और ठहरने), धार्मिक पुस्तक छापने एवं बेचने, मूर्ति एवं फोटो बेचने, हजारों पूजारियों, छोटे-छोटे दुकानदार, दीप और कलश बनाने वाले कुम्हार सभी के रोजगार पाँच से सात गुणा अधिक बढ़ गया है।

यह तो एक मंदिर का उदाहरण है। जब हम राष्ट्रीय फलक पर तीर्थ स्थलों का देश की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव का अध्ययन करते हैं तो एक बड़ी तस्वीर उभर कर सामने आती है, जो आँखें खोलने वाली है। भारत की जीडीपी में धार्मिक यात्राओं का योगदान 2.32 प्रतिशत है और मंदिरों की इकॉनोमी करीब 3.02 लाख करोड़ रूपये की है। 2022-23 में केन्द्र सरकार का राजस्व 19,34,706 करोड़ रूपये था, वहीं केवल छः मंदिरों ने अकेले 24000 करोड़ रूपये नगद एकत्र किये, जबकि देश में 5 लाख से अधिक मंदिर हैं। 2021 में अयोध्या में राम मंदिर के लिए एकत्रित किया गया दान 5450 करोड़ रूपये का है, जो लगभग 5000 करोड़ रूपये के रक्षा व्यय से भी ज्यादा है। नेशनल सैंपल सर्वे ऑर्गेनाइजेशन (एनएसएसओ) के आंकड़ो के अनुसार 55 प्रतिशत हिन्दू मध्यम और छोटे आकार के होटलों में ठहरते हैं तथा उनकी धार्मिक यात्रा में करीब 2717 रूपये प्रतिदिन खर्च होता है। इस प्रकार धार्मिक यात्राओं पर सालाना लगभग 10 लाख करोड़ रूपये खर्च का अनुमान है। एनएसएसओ के अनुसार भारत में मंदिरों या तीर्थ स्थलों में दर्शन करने वाले पर्यटकों या श्रद्धालुओं में 87 प्रतिशत भारतीय हैं तथा 13 प्रतिशत विदेशी या विदेश में रहने वाले हिन्दू हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मंदिरों के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था को पाँच ट्रिलियन डॉलर तक ले जाने के लिए "टेम्पल इकॉनोमी" को एक जरिया बनाकर इसपर काम कर रहें हैं। अयोध्या स्थित श्रीराम मंदिर, महाकालेश्वर ज्योर्तिलिंग के लिए महाकाल लोक, काशी विश्वनाथ कॉरिडोर, केदारनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार एवं शंकराचार्य स्थल, ओमकारेश्वर में एकात्म धाम, कश्मीर में शारदा पीठ का जीर्णेद्धार, उत्तराखंड से कैलाश दर्शन आदि कार्य इस टेम्पल इकॉनोमी के अंतर्गत ही किए गए हैं। जिसके माध्यम से संबंधित राज्य में व्यापार और रोजगार के अवसर बढ़े हैं जिससे उनको आर्थिक लाभ हो रहा है। मोदी जी के टेम्पल इकॉनोमी से प्रभावित होकर कई देश अपने यहाँ भी मंदिरों का निर्माण करवाने में लगे हैं। इसका साक्षात उदाहरण इंडोनेशिया, थाईलैंड, लाओस, संयुक्त अरब अमीरात, अमेरिका, ब्रिटेन आदि देश हैं।

अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण केवल आस्था और आध्यात्म का ही विषय नहीं है, बल्कि यह सरयू नदी के तट पर बसे इस शहर में एक अहम आर्थिक बदलाव भी ला रहा है। ये बदलाव अयोध्या को देश में एक प्रमुख आर्थिक केन्द्र के रूप में बदल देगा। टूरिज्म डिपार्टमेंट की एक रिर्पोट के मुताबिक पिछले तीन-चार साल से अयोध्या आने वाले पर्यटकों की संख्या तेजी से बढ़ी है। साल 2015 में मात्र 1.4 लाख लोग अयोध्या पहुँचे थे जो 2020 में बढ़कर 3 लाख से अधिक हो गये तथा 2022 में आश्चर्यजनक ढ़ंग से बढ़कर यह संख्या 2.40 करोड़ हो गई ।

इसी तरह वर्ष 2023 में यह संख्या बढ़कर 3.5 करोड़ पहुँच गई है। 22 जनवरी को श्रीराम लला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद भारत हीं नहीं दुनिया के टूरिस्ट मैप में अयोध्या सबसे विकसित और भव्य टूरिस्ट डेस्टिनेशन बन जायेगा। मंदिर बनने के बाद यहां करीब 2 लाख लोग हर दिन दर्शन करने आयेंगे यानी साल में करीब 7 करोड़ लोग। इस प्रकार अयोध्या एक ग्लोबल टूरिज्म सेंटर बन जायेगा।

अयोध्या में गजब की रौनक बढ़ी है । हजारों लोग रामलला के नवनिर्मित मंदिर के दर्शन के इरादे से पहुँच रहे हैं । निर्माण कार्य पूर्ण होने के बाद अयोध्या का विकास देखकर आँखे चौंधियां जायेगी। अनुमान है कि इस जनवरी माह में ही 80 हजार करोड़ रूपये से अधिक का व्यापार होगा। अभी हाल में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अयोध्या धाम के नये रेलवे स्टेशन और इंटरनेशनल एयरपोर्ट के उद्‌घाटन के अवसर पर अयोध्या क्षेत्र के विकास हेतु 15 हजार करोड़ रूपये से अधिक की परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण किया है। ये सभी इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट अयोध्या को एक मॉडल स्वरूप देंगे। कनेक्टिविटी में सुधार के कारण अयोध्या, आसपास के क्षेत्र के लिए बड़ा इकोनॉमिक हब बन जायेगा।

इस प्रकार जिस गति से टेम्पल इकॉनोमी भारत में आगे बढ़ रहा है उसे देखेते हुए यह सहज ही कहा जा सकता है कि आने वाले समय में भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में "मंदिर" एक बड़ा क्षेत्र (सेक्टर) बनकर उभरेगा। आर्थिक व्यवस्था की धुरी मंदिर, धार्मिक शिक्षा और भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार की व्यवस्था के निर्माण के माध्यम से धर्नाजन की ओर धूम सकती है। इसके पीछे का एक उद्देश्य भारत का "वसुधैव कुटुम्बकम" के सुविचार को प्रतिस्थापित करना है, ताकि आगे चलकर समस्त विश्व हमारे आदि सनातन धर्म का अनुसरण करने लगे। इस प्रकार ये टेम्पल इकॉनोमी भारत को आर्थिक उँचाई देगा, साथ ही विश्व गुरू के पद पर पुनः स्थापित करने में भी मददगार साबित होगा। जिसमें अयोध्या का योगदान सर्वोपरि होगा।

सुरेश पी, महा प्रबंधक, केंद्रीय कार्यालय

बैंक में धोखाधड़ी जोखिम प्रबंधन

किसी भी अन्य संगठन की तुलना में बैंक धोखाधड़ी के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। चाहे बड़ा बैंक हो मध्यम अथवा छोटा सभी बैंक धोखाधड़ी के प्रति समानरूप से संवेदनशील होते हैं। धोखाधड़ी का प्रभाव काफी व्यापक होता है। धोखाधड़ी बैंक के राजस्व, प्रतिष्ठा आदि को प्रभावित करती ही है साथ ही शेयरधारकों, जमाकर्ताओं आदि जैसे हितधारकों के हितों को भी नुकसान पहुंचाती है जिससे कि वे बैंक के प्रति विश्वास खो देते हैं इस प्रकार धोखाधड़ी का बैंक के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है एवं बैंकों का वर्तमान एवं भविष्य में संभावित व्यवसाय का भी नुकासान होता है।

हालिया दिनों में धोखाधड़ी का जोखिम काफी बढ़ गया है। यह जोखिम दुनिया भर के सभी क्षेत्रों में फैल गया है। प्रमाणित धोखाधड़ी परीक्षक संघ (एसीएफई) की रिपोर्ट के अनुसार, 133 देशों में 2110 घटनाओं में किए गए अध्ययन के आधार पर धोखाधड़ी के कारण कुल $ 3.6 बिलियन का नुकसान हुआ है। अध्ययन में आगे कहा गया है कि धोखाधड़ी की पहचान करने में 12 महीने से 18 महीने का लंबा समय लगता है। अक्सर यह देखा गया है कि औसत धोखाधड़ी पर एक फर्म को उसके वार्षिक राजस्व का लगभग 5% खर्च करना होता है। (संदर्भ: चार्टर्ड एकाउंटेंट, आईसीएआई का जर्नल)।

बैंकिंग क्षेत्र में पूरे वित्तीय वर्ष में जितनी भी धोखाधड़ी होती है वह आरबीआई द्वारा वार्षिक रिपोर्ट में प्रकाशित की जाती है और धोखाधड़ी के ये आंकड़े निश्चित रूप से चौंकाने वाले हैं। धोखाधड़ी के मामलों में पिछले दो वर्षों में लगभग 200% की वृद्धि देखी गई है। भारतीय रिज़र्व बैंक के अनुसार, धोखाधड़ी की घटना की तारीख और पता लगाने की तारीख के बीच औसत समय अंतराल वित्तीय वर्ष 2020-21 में रिपोर्ट की गई धोखाधड़ी के लिए 23 महीने था। हालांकि, 100 करोड़ रुपये और उससे अधिक की बड़ी धोखाधड़ी के संबंध में, औसत अंतराल उसी अवधि के लिए 57 महीने था। (संदर्भ: चार्टर्ड एकाउंटेंट, आईसीएआई का जर्नल)।

मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि प्रौद्योगिकी को व्यापक रूप से अपनाने से धोखाधड़ी के जोखिम में वृद्धि होती है। प्रौद्योगिकी सदैव गतिशील रहती है और इस लिहाज से इसमें संबंधित जोखिम भी बना रहता है। बैंक सहित प्रत्येक संगठन को धोखाधड़ी की घटनाओं को रोकने और धोखाधड़ी के कारण होने वाले नुकसान को कम से कम रखने के लिए एक मजबूत और कुशल जोखिम प्रबंधन प्रणाली स्थापित करनी होगी एवं यह कुछ इस प्रकार की होनी चाहिए जिससे कि हमारे कारोबारी हित प्रभावित न हों।

धोखाधड़ी जोखिम प्रबंधन को संगठन द्वारा उजागर किए गए धोखाधड़ी जोखिमों को समझने और प्रबंधित करने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है। धोखाधड़ी जोखिम प्रबंधन ऐसी संभावित घटनाओं की प्रकृति को समझने और खतरों को दूर करने के लिए उचित उपाय करने के बारे में है। धोखाधड़ी जोखिम प्रबंधन का तात्पर्य जोखिम आकलन करना और उसे कम करने में मदद करना है। जैसा कि पहले ही ऊपर उल्लेख किया गया है, किसी भी धोखाधड़ी गतिविधि के परिणामस्वरूप किसी भी संगठन को भारी वित्तीय हानि, प्रतिष्ठा की हानि, हितधारकों के विश्वास की हानि होती है और बैंक तथा संस्था के कारोबारी एवं प्रतिष्ठा संबंधी हित प्रभावित होते हैं।

प्रौद्योगिकी में प्रगति के साथ – साथ उससे होने वाले खतरे भी उत्पन्न होते रहते हैं जो कि विविध रूपों में या कमियों में जैसे कि क्लाउड सेवाएँ, आउटसोर्सिंग गतिविधियाँ, कर्मचारियों/विक्रेताओं को सौंपे गए कार्यों के लिए अपने स्वयं के उपकरणों का उपयोग करने की अनुमति देना, प्रशासक के विशेषाधिकार प्रदान करना, अत्यधिक उपलब्ध सिस्टम या नेटवर्क में कम सुरक्षा सुरक्षा उपाय होना इत्यादि के रूप में हो सकते हैं।

हालांकि सामान्य तौर पर, तकनीकी उपकरण धोखाधड़ी के जोखिम को काफी कम कर सकते हैं लेकिन उपकरणों को प्रभावी बनाने के लिए उनका नियमित मूल्यांकन, परीक्षण, अद्यतनीकरण और उन्नयन बहुत महत्वपूर्ण है।

धोखाधड़ी के जोखिमों को कम करने में आंतरिक नियंत्रण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कर्मचारियों के कार्यों का वर्गीकरण अलग- अलग होना चाहिए एवं इसके साथ ही नियंत्रण साधनों तक पहुंच और प्राधिकरण तंत्र एक मजबूत नियंत्रण तंत्र के आवश्यक घटक हैं। आंतरिक नियंत्रण का सामान्य अर्थ है कि संभावित धोखाधड़ी से बचने के लिए आवश्यक जांच और संतुलन बनाए रखा जाए। केवल कुछ जाँच और संतुलन रखना पर्याप्त नहीं होगा। सतत एवं समय पर निगरानी के माध्यम से और प्रभावी विश्लेषण द्वारा ही धोखाधड़ी को रोका जा सकता है।

संगठन को जोखिम शमन हेतु यह पता लगाना चाहिए और समझना चाहिए कि कमजोरियां कहां पाई जाती हैं। यह कमजोरियाँ जो कि धोखाधड़ी के लिए उत्तरदायी होती हैं । वे उपयोग की जाने वाली प्रणालियों तथा प्रौद्योगिकियों, संगठन में काम करने वाले कर्मचारियों, संगठन के ग्राहकों या विभिन्न गतिविधियों के लिए आउटसोर्स किए गए विक्रेताओं में हो सकती हैं। इसमें शामिल जोखिम का आकलन करने के लिए मूल्यांकन और परीक्षण, कर्मचारियों और ग्राहकों के व्यवहार का विश्लेषण, विक्रेता ऑडिट आदि के आधार पर किया जाना चाहिए।

धोखाधड़ी जोखिम प्रबंधन वास्तव में धोखाधड़ी कम करने या मिटाने हेतु एक दृष्टिकोण है जो किसी भी संगठन के भीतर अंतर्निहित होता

है। एक सफल रणनीति के लिए वर्तमान और भविष्य के धोखाधड़ी परिदृश्य को देखते हुए धोखाधड़ी रोधी प्रौद्योगिकी के साथ-साथ मजबूत आंतरिक नियंत्रण की आवश्यकता होती है। आम तौर पर, धोखाधड़ी मौजूद होने पर तीन शर्तें मौजूद होती हैं। प्रोत्साहन/दबाव, अवसर और दृष्टिकोण तथा तर्कसंगतता।

नियमित जोखिम मूल्यांकन, निरंतर निगरानी, सहकर्मी समूहों के संपर्क में रहना, बाजार में विकास को समझना, बैठकों, सेमिनारों, प्रशिक्षण आदि के माध्यम से अवगत रहना, नियामकों द्वारा प्रदान की जाने वाली जानकारी को नियमित रूप से पढ़ना और प्रसारित करना आदि के माध्यम से धोखाधड़ी जोखिम प्रबंधन किया जा सकता है एवं इसके अलावा जोखिम बिंदुओं की निरंतर समीक्षा और नए परिदृश्यों को समायोजित करने तथा पुराने और अनावश्यक बिंदुओं को दूर करने के लिए, कर्मचारियों को संवेदनशील बनाना धोखाधड़ी के जोखिम को कम करने के लिए नियमित आधार पर संगठन द्वारा की जाने वाली प्रमुख गतिविधियां हैं।

"अक्सर कहा जाता है, "रोकथाम इलाज से बेहतर है", आंतरिक नियंत्रण, कर्मचारियों की भर्ती, विक्रेताओं के चयन आदि के संबंध में मजबूत नीतियों को अपनाकर कई प्रकार की धोखाधड़ियों से बचा जा सकता है।"

कुछ हद तक हम कह सकते हैं कि निम्न चार चरण धोखाधड़ी प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, अर्थात, अपने ग्राहक को जानें, अपने कर्मचारी को जानें, अपने सिस्टम को जानें और अपने विक्रेता को जानें।

मुझे विश्वास है कि उपरोक्त आलेख धोखाधड़ी के बैंकिंग सेक्टर पर प्रभावों एवं उसके निवारक उपायों के बारे में स्टॉफ सदस्यों को और अधिक जागरूक करने में सहायक होगा और धोखाधड़ी के निवारण तंत्र के प्रति उनकी समझ को और अधिक बढ़ाने में भी सहायक होगा।

सिनपा रिकवरी

कभी - कभी लगता है!
सिनपा रिकवर करते करते मैं भी एसएमए -2 हो गया हूँ,
कैफ, सीएसएस करते-करते,
मैं भी इक अर्ली वार्निंग सिग्नल हो गया हूँ !!

कभी लगता है
रिवाइवल करते-करते अकाउंट्स को,
मैं रीस्ट्रक्चरिंग सा हो गया हूँ !

कभी हुआ करता था
मैं स्टैंडर्ड असेट जिन नज़रों में,
आज उन्हीं नज़रों में सब- स्टैंडर्ड सा हो गया हूँ!!

लगा के अपना सब कुछ, दांव पेंच ,
अकाउंट्स की ख़ातिर ,आज मैं लॉस हो गया हूँ !
नहीं बच पाता जब कोई सिनपा अकाउंट,
घुट-घुट के मैं अंदर ही अंदर,
दोगुना दोष हो गया हूँ !!

सपने में भी अब तो, सिनपा-सिनपा नज़र आता है,
इतनी मशक्कत के बाद,
क्रिटिकल अमाउंट रिकवर करने पे,
मज़ा सा ना आता है!
एफ़आईटीएल, जीईसीएल भी खूब रंग जमा जाता है,
जो बेगाना हो के भी ,
अपनो सा साथ निभा जाता है !!

यहाँ हर रोज़ हर पल,
इंट्रस्ट इनकम, प्रोवीजंस के लिए लड़ जाता हूँ,
कैसे ना कैसे अकाउंट्स को बचा के,
बैंक की नेट इनकम बढा लूँ,
यही सोच के आगे बढ़ जाता हूँ!!

कभी - कभी रविवार को भी आराम कहाँ मिलता है!
अचानक से उभरता सिनपा ,
रिकवरी में परेशान बड़ा करता हैं !!

भले ही यहाँ ख़ुशी कुछ सेकेंड्स की है,
कड़ी मशक़्क़त हर रोज़ ,हर पल की है!
क्या कुछ भी कह लो पर,
काबिले तारीफ़ ,शाखा के हर दल की है!!

पुष्पेंद्र
वरिष्ठ प्रबन्धक
क्षेत्रीय कार्यालय
चंडीगढ़

रंजय कुमार मिश्र, मुख्य क्षेत्रीय प्रबन्धक, हैदराबाद

डिजिटल बैंकिंग

डिजिटल बैंकिंग ऑनलाइन बैंकिंग का व्यापक स्वरूप है, जहां बैंकिंग सेवाएं इंटरनेट द्वारा दी जाती हैं। पारंपरिक से डिजिटल बैंकिंग में बदलाव क्रमवार हुआ है । डिजिटल बैंकिंग में उच्च स्तर की स्वचालन प्रक्रियाएं और वेब-आधारित सेवाएं शामिल हैं तथा इसमें एपीआई शामिल हैं जो बैंकिंग उत्पादों को वितरित करने और लेन-देन प्रदान करने के लिए क्रॉस-संस्थागत सेवा संरचना को सक्षम करते हैं। यह उपयोगकर्ताओं को डेस्कटॉप, मोबाइल और एटीएम सेवाओं के माध्यम से वित्तीय डेटा तक पहुंचने की क्षमता प्रदान करता है।

डिजिटल बैंकिंग बैंक में नवीकरण को ट्रैक करता है। निहितार्थ यह है कि बैंकों को डिजिटल होना चाहिए और यह एक चुनौती है क्योंकि डिजिटल बैंक बनने के लिए 21 वीं सदी की प्रौद्योगिकियों पर केंद्रित नई सेवाओं की आवश्यकता होती है।

डिजिटल बैंक एक आभासी प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें ऑनलाइन बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग और कई माध्यम शामिल हैं। एंड-टू-एंड प्लेटफॉर्म के रूप में, डिजिटल बैंकिंग में सामने का छोर शामिल होना चाहिए जिसे उपभोक्ता देखते हैं, बैक एंड जो बैंकर अपने सर्वर और व्यवस्थापक नियंत्रण पैनलों के माध्यम से देखते हैं, और मिडलवेयर जो इन नोड्स को जोड़ता है। अंततः एक डिजिटल बैंक को सभी सेवा वितरण प्लेटफार्मों पर बैंकिंग के सभी कार्यात्मक स्तरों की सुविधा प्रदान करनी चाहिए। दूसरे शब्दों में, इसमें ऑनलाइन सेवा, बैंक कार्ड, एटीएम और पॉइंट ऑफ सेल (पीओएस) मशीनों के समान सभी कार्य होने चाहिए।

डिजिटल बैंकिंग का इतिहास

डिजिटल बैंकिंग की शुरुआती रूप 1960 के दशक में एटीएम और कार्ड के आगमन से पहले की है। जैसा कि 1980 के दशक में शुरुआती ब्रॉडबैंड के साथ इंटरनेट उभरा, डिजिटल नेटवर्क ने खुदरा विक्रेताओं को आपूर्तिकर्ताओं और उपभोक्ताओं के साथ जोड़ना शुरू कर दिया ताकि शुरुआती ऑनलाइन कैटलॉग और इन्वेंट्री सॉफ्टवेयर सिस्टम की जरूरतों को विकसित किया जा सके।

1990 के दशक तक,इंटरनेट व्यापक रूप से उपलब्ध हो गया था और ऑनलाइन बैंकिंग आदर्श बनने लगी थी। 2000 के दशक की शुरुआत में ब्रॉडबैंड और ई-कॉमर्स सिस्टम में सुधार आज के आधुनिक डिजिटल बैंकिंग की ओर बढ़ते कदम थे ।

बैंकों के लिए डिजिटल बैंकिंग का अर्थ

एक बैंक की सफलता इस बात में निहित है कि ग्राहक अधिग्रहण और ग्राहक प्रतिधारण कितने प्रभावी ढंग से किया जाता है; और बैंक द्वारा पारंपरिक बैंकिंग से डिजिटल बैंकिंग प्लेटफार्मों पर ग्राहक

स्थानांतरण कितनी जल्दी और कुशलता से किया जाता है। ग्राहक वफादारी शब्द अब विलुप्त हो गया है और ग्राहक केवल उन बैंकों को पसंद करते हैं जो प्रौद्योगिकी में मजबूत हैं और निर्बाध सेवा की गुणवत्ता के साथ मिलकर सर्वोत्तम डिजिटल बैंकिंग अनुभव प्रदान करने में सक्षम है।

हालांकि, परिवर्तन की गति केवल निचले दायर स्तर से हो सकती है, विशेष रूप से फ्रंट डेस्क कर्मियों से, जिन्हें बैंक के सभी उत्पादों के बारे में पूरी तरह से जानकार होना चाहिए, विशेष रूप से डिजिटल बैंकिंग उत्पादों के बारे में। इसके अलावा, उन्हें बैंक के डिजिटल बैंकिंग उत्पादों के लिए खुद को अनुकूलित करना चाहिए, तभी वे ग्राहकों के उत्पादों को एक ठोस तरीके से विपणन करने की स्थिति में होंगे।

2015 में किए गए एक अध्ययन से पता चला है कि 47% बैंकर डिजिटल बैंकिंग के माध्यम से ग्राहक संबंधों को बेहतर बनाने की क्षमता रखते हैं, 44% इसे प्रतिस्पर्धात्मक लाभ उत्पन्न करने के साधन के रूप में देखते हैं, 32% इसे नए ग्राहक अधिग्रहण के लिए एक चैनल के रूप में देखते हैं। केवल 16% ने लागत बचत की क्षमता पर जोर दिया।

डिजिटल बैंकिंग के प्रमुख लाभ हैं

1. **व्यावसायिक दक्षता -** डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म न केवल ग्राहकों के संबंधों में सुधार करता है और उनकी आवश्यकताओं को अधिक तेज़ी से वितरित करता है, वे आंतरिक कार्यों को अधिक कुशल बनाने के तरीके भी प्रदान करते हैं। बैंक दशकों से उपभोक्ता छोर पर डिजिटल तकनीक में सबसे आगे रहा है, बैंक उत्पादकता में तेजी लाने के लिए डिजिटल बैंकिंग के सभी लाभों को पूरी तरह से गले नहीं लगाया है।

2. **लागत बचत -** बैंकों के लिए लागत में कटौती करने की कुंजी में स्वचालित अनुप्रयोग है जो अनावश्यक मैनुअल श्रम को

प्रतिस्थापित करता है। मैकिन्से एंड कंपनी के अनुसार, पारंपरिक बैंक का प्रसंस्करण महंगा, धीमा और मानव त्रुटि से ग्रस्त है। कार्यालय में मानव, ऊर्जा और भण्डारण लागत बढ़ती है। अधिक गुणात्मक डेटा के तालमेल और बाजार में बदलाव के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म का प्रयोग कर सकते हैं।

3. **बढ़ती हुई सटीकता -** पारंपरिक बैंक जो मुख्य रूप से पेपर प्रोसेसिंग पर भरोसा करते हैं, उनमें 40% तक की त्रुटि दर हो सकती है, जिसके लिए फिर से काम करने की आवश्यकता होती है। शाखा और बैक ऑफिस कर्मियों के बीच आईटी एकीकरण की कमी के साथ युग्मित, यह समस्या व्यावसायिक दक्षता को कम करती है। सत्यापन प्रक्रिया को सरल बनाकर, व्यवसाय सॉफ़्टवेयर के साथ आईटी समाधान को लागू करना आसान है, जिससे अधिक सटीक लेखांकन होता है। बैंकों के लिए सरकारी नियमों का पालन करने के लिए वित्तीय सटीकता महत्वपूर्ण है।
4. **बेहतर प्रतिस्पर्धात्मकता -** डिजिटल समाधान विपणन सूचियों को प्रबंधित करने में मदद करते हैं, जिससे बैंकों को व्यापक बाजारों तक पहुंचने और तकनीक प्रेमी उपभोक्ताओं के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने का मौका मिलता है। सीआरएम प्लेटफ़ॉर्म से ग्राहक इतिहास को ट्रैक कर सकते हैं और ई-मेल एवं ऑनलाइन संचार के अन्य रूपों तक त्वरित पहुंच प्रदान कर सकते हैं।
5. **अधिक चपलता -** स्वचालन का प्रयोग बाहरी और आंतरिक दोनों प्रक्रियाओं को गति दे सकता है, दोनों ग्राहकों की संतुष्टि में सुधार कर सकते हैं। 2008 में वित्तीय बाजारों के पतन के बाद, जोखिम प्रबंधन पर जोर दिया गया था। जोखिम प्रबंधन सॉफ्टवेयर द्वारा अधिक तेज़ी से बाजार परिवर्तनों का पता लगाना और प्रतिक्रिया देना संभव है।
6. **बढ़ती सुरक्षा -** सभी व्यवसाय, बड़े या छोटे, साइबर खतरों की बढ़ती संख्या का सामना करते हैं जो उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचा सकते हैं। फरवरी 2016 में आंतरिक राजस्व सेवा ने घोषणा की कि इसके सिस्टम को पिछले वर्ष हैक कर लिया गया था। डेटा सुरक्षा के लिए बैंक सुरक्षा की अतिरिक्त परतों से लाभ उठा सकते हैं।

डिजिटल नकदी की और दिशा

भौतिक नकदी से जुड़ी कई समस्याओं को डिजिटल नकदी समाप्त करती है, जैसे कि गलत प्लेसमेंट या पैसे चोरी या क्षतिग्रस्त होने की संभावना। इसके अतिरिक्त विवाद के मामलों में सटीक रूप से हिसाब लगाया जा सकता है। चूंकि उपभोक्ताओं को अपनी उंगलियों पर खरीद का अवसर मिलता है इसलिए उनके वॉलेट में भौतिक नकदी ले जाने की कम आवश्यकता होती है।

डिजिटल नकदी की मांग बढ़ने का एक अन्य संकेत पीयर टू पीयर भुगतान प्रणालियों जैसे पे पाल के उपयोग और बिटकॉइन जैसी अप्राप्य क्रिप्टोकरेंसी के उदय से उजागर होते हैं। भौतिक नकदी के साथ भुगतान की जा सकने वाली लगभग किसी भी कल्पनीय चीज का भुगतान सैद्धांतिक रूप से बैंक कार्ड के स्वाइप के साथ किया जा सकता है, जिसमें पार्किंग मीटर भी शामिल है। समस्या यह है कि यह तकनीक अभी भी सर्वव्यापी नहीं है।

निष्कर्ष :

हमारे बैंक द्वारा समय-समय पर डिजिटल साक्षरता दी जाती है। 'आइओबी अन्ना' सीरीज डिजिटल लेन-देन एवं स्कैम की जानकारी कार्टून के माध्यम से देता है। बैंक का 'डिजी ज्ञान' पुस्तक विभिन्न जानकारी तथा डेटा की जानकारी देता है। इसमें डिजिटल बैंकिंग प्रोडक्ट की विस्तृत जानकारी दी गई है:

1. डेबिट कार्ड
2. एटीएम संबंधित परिचालन
3. इंटरनेट बैंकिंग
4. मोबाइल बैंकिंग
5. यूपीआई
6. मर्चेंट यूपीआई क्यू आर
7. आइएमपीएस
8. आइओबी – फास्टैग
9. क्रेडिट कार्ड
10. पीओएस
11. आइओबी पे
12. भारत बिल पेमेंट सिस्टम
13. भीम आधार पे

डिजिटल बैंकिंग की अवधारणा अब सिर्फ सपना नहीं है। यह उन सभी पारंपरिक बैंकिंग गतिविधियों, कार्यक्रमों व सेवाओं का डिजिटलीकरण है जो ऐतिहासिक रूप से केवल ग्राहकों के लिए उपलब्ध है। इसमें पैसे जमा, आहरण और ट्रांसफर, चेकिंग / जमा खाता प्रबंधन, वित्तीय उत्पाद के लिए आवेदन करना, ऋण प्रबंधन , बिल पे, सेवाएँ आदि गतिविधियां शामिल हैं । परंतु, इसकी अपनी चुनौतियाँ हैं- डिजिटल भुगतान को अपनाने में इंटरनेट का उपयोग ही एकमात्र बाधा नहीं है। उपयोगकर्ताओं को शिक्षित करने के साथ-साथ उनके डेटा की सुरक्षा सुनिश्चित करना भी आवश्यक है।

आशीष कुमार शुक्ल, वरिष्ठ प्रबन्धक, निरीक्षण विभाग, केन्द्रीय कार्यालय

बैंक अपनी अनुपालन संस्कृति को कैसे सुधार सकते हैं?

बैंकों के लिए अनुपालन उनके परिचालन क्षेत्र से संबंधित नियामक आवश्यकताओं के एक समूह के विश्लेषण से संबंधित है। यदि कोई बैंक एक से अधिक क्षेत्र में कार्यरत है, तो संभावना है कि कई नियामक मुद्दे हैं, जिन पर ध्यान दिया जाना है। बैंकों के लिए अनुपालन किसी भी समस्या, जो उन्हें गैर-अनुपालन की ओर ले जा सकता है, का पता लगाने, जांच करने और उसका निवारण करने के लिए आवश्यक है।

किसी वित्तीय संस्थान की अनुपालन संस्कृति को बेहतर बनाने के लिए कई कदम उठाए जाते हैं । इसके लिए नियमों और विनियमों का संपूर्ण दस्तावेज़ीकरण, कर्मचारियों को अनुपालन के महत्व को समझने के लिए व्यापक प्रशिक्षण प्रणाली, अनुपालन से संबंधित जानकारी संग्रहीत करने के लिए एक केंद्रीकृत प्रणाली जो कर्मचारियों के लिए आसानी से उपलब्ध हो, कानूनों और विनियमों में परिवर्तनों के संबंध में निरंतर संप्रेषण , कर्मचारियों को प्रेरित करने के लिए प्रोत्साहन के साथ साथ नैतिक विषयों को रिपोर्ट करने हेतु एक मजबूत प्रणाली की आवश्यकता होती है। इस आलेख के माध्यम से हम इस विषय पर विचार करेंगे कि किस प्रकार बैंक में ठोस अनुपालन संस्कृति को स्थापित किया जा सकता है:

नीतियों और प्रक्रियाओं का दस्तावेज़ीकरण

नीतियों, विनियमों, प्रशिक्षण, रिपोर्टिंग आदि के संदर्भ में प्रत्येक संस्थान की अपनी विशिष्ट ज़रूरतें/ आवश्यकताएं होती हैं। नैतिकता के उन क्षेत्रों को चिन्हित किया जाना है, जिन पर संस्थान/ संस्था द्वारा कार्य किया जाता है । अपनी कर्मचारी पुस्तिका में महत्वपूर्ण नियमों, विनियमों, नीतियों और प्रक्रियाओं का दस्तावेजीकरण किया जाना है । जब आपके पास सभी अनुपालन-संबंधी जानकारी एक ही स्थान पर उपलब्ध होगी तो ऐसी स्थिति में कर्मचारियों को संस्थान की अनुपालन संस्कृति से जुड़े रहने के लिए प्रशिक्षित करना बहुत आसान हो जाता है।

सुनिश्चित करें कि कर्मचारी नियमों और कानूनों को जानें

कर्मचारियों को अनुपालन के बारे में प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण और अन्य संबंधित नैतिक साहित्य आवश्यक हैं। लेकिन यह जवाबदेही ही है जो इस शिक्षा चक्र को पूरी तरह से पूरा करती है। दूसरे शब्दों में, जब कर्मचारी स्वीकार करते हैं (और हस्ताक्षर करते हैं) कि उन्होंने आपकी कंपनी की बैंकिंग प्रक्रियाओं और नीतियों को समझ लिया है, तब ही वे अपने आचरण के लिए जवाबदेह होने की जिम्मेदारी लेते हैं।

इसके अलावा, बैंकिंग सेवाएं के नियामक परिदृश्य में निरंतर परिवर्तन देखने को मिलते हैं। इसका अर्थ यह है कि प्रक्रियाओं और नीतियों में भी लगातार बदलाव देखने को मिलेंगे। हर बार जब ये परिवर्तन होते हैं, तो यह महत्वपूर्ण है कि आप उन्हें अपने कर्मचारियों के मध्य परिचालित करें। इस प्रकार यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि कर्मचारी अपनी रोजमर्रा के कार्यों में नए/ संशोधित नियमों का अनुपालन कर रहे हैं ।

सभी कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान करना

अनुपालन की मजबूत संस्कृति के लिए अनुपालन संबंधी प्रशिक्षण सबसे महत्वपूर्ण व ठोस आधार है। यह कर्मचारियों को सभी प्रासंगिक नीतियों और प्रक्रियाओं के बारे में प्रशिक्षित करता है। सही प्रशिक्षण कर्मचारियों को सीखे गए ज्ञान को क्रियान्वित करने में भी सक्षम बनाता है। प्रशिक्षण के माध्यम से कर्मचारी इस बात को समझते हैं कि नैतिक निर्णय कैसे लें और कार्यस्थल के भीतर नैतिक दुविधाओं से कैसे निपटें।

एक नैतिक संस्कृति बनाने के लिए एक ठोस अनुपालन प्रशिक्षण कार्यक्रम बनाना महत्वपूर्ण है लेकिन यह सुनिश्चित करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि कर्मचारी जो जानकारी हासिल करते हैं, उसे ध्यान में रखे और उसका उपयोग करे। दूसरे शब्दों में, अनुपालन प्रशिक्षण के उचित परिणाम हेतु यह महत्वपूर्ण है कि इसे यथासंभव आकर्षक, परस्पर संवादपूर्ण और मज़ेदार बनाया जाए ।

रोलप्ले, क्विज़, गेम्स और अन्य कुछ प्रयास का उपयोग कर यह सुनिश्चित करें कि कर्मचारी प्रशिक्षण के सार को समझने के साथ-साथ प्रशिक्षण में उत्साह से सहभागिता कर रहे हैं ।

विनियमों के बारे में जानकारी आसानी से सुलभ बनाएं

ठोस प्रशिक्षण प्रदान करने के अलावा, नियमों और विनियमों के बारे में जानकारी को आसानी से सुलभ बनाना भी महत्वपूर्ण है। यह कर्मचारियों को आसानी से नैतिक आचरण करने, समझने और अभ्यास करने में सक्षम बनाता है।

इसके अलावा, बैंकिंग नियमों में लगातार बदलाव देखने को मिलते हैं। उपलब्ध जानकारियों में हुए परिवर्तन (या परिवर्तनों) के संबंध में कर्मचारियों को सूचित करने की आवश्यकता होती है। जानकारियों को सुलभ बनाने हेतु बैंकिंग सेवाओं के सभी दस्तावेजों को सुरक्षित रूप से संग्रहीत करने के लिए एक केंद्रीकृत समाधान होना महत्वपूर्ण है।

अनुपालन की शुरुआत शीर्ष प्रबंधन से होती है

कर्मचारियों से अक्सर कार्यस्थल पर सर्वोत्तम नैतिक आचरण की अपेक्षा की जाती है। अनुपालन की संस्कृति को सुदृढ़ करने का एक शानदार तरीका है शीर्ष प्रबंधन से लेकर सभी श्रेणी के कर्मचारियों तक परिवर्तन लाना । दूसरे शब्दों में, आपके संस्थान के वरिष्ठ नेतृत्व, बोर्ड के सदस्य और मुख्य कार्यपालक अधिकारियों को कर्मचारियों का रोल

मॉडल बनना चाहिए। इसके अलावा, शीर्ष प्रबंधन को भी इन मूल्यों को नियमित रूप से संप्रेषित करना चाहिए। नियमित आधार पर अनुपालन को लागू करने, कार्यस्थल में इसकी निगरानी करने और उभरने वाले किसी भी नैतिक जोखिम को व्यक्तिगत रूप से संबोधित करने के लिए अनुपालन टीमों के साथ मिलकर कार्य करना उनकी जिम्मेदारी है।

नए विनियमों और परिवर्तनों को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करें

बैंकिंग सेवाओं के लिए अनुपालन कानूनों और विनियमों में अंतहीन परिवर्तन देखना अपरिहार्य है। यदि प्रबंधन समय पर कर्मचारियों के साथ इन परिवर्तनों को सूचित करने में विफल रहता है, तो संभावना है कि संस्थान को गैर-अनुपालन के कई जोखिमों की समस्या से गुजरना होता है। दूसरी ओर, जब कर्मचारियों को इन परिवर्तनों के बारे में पता होता है, तो वे यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि वे अपनी रोजमर्रा के कार्यों में नए नियमों और विनियमों का अनुपालन करें।

नैतिक व्यवहार के लिए प्रोत्साहन प्रदान करें

प्रोत्साहन आपके कार्यबल को अनुपालन की संस्कृति बनाए रखने के लिए प्रेरित करने का एक शानदार तरीका है। जब कोई प्रबंधक किसी कर्मचारी को "सही काम करते हुए" देखता है, तो उसे रुकना चाहिए और इसे अनदेखा करने के बजाय इसे स्वीकार करना चाहिए। अच्छे कार्य के लिए किसी कर्मचारी की सार्वजनिक रूप से प्रशंसा करना, दोपहर की छुट्टी देना या अन्य बोनस जैसे छोटे प्रोत्साहन सामूहिक नैतिक व्यवहार को प्रोत्साहित करने के बेहतरीन तरीके हो सकते हैं।

कुशल रिपोर्टिंग तंत्र का निर्माण

आइए इसका सामना करें: अधिकांश कर्मचारी प्रतिशोध के डर से कदाचार की रिपोर्ट करने से झिझकते हैं। लेकिन इसके पीछे मुख्य कारण क्या हो सकता है? उत्तर? एक ठोस अनाम रिपोर्टिंग प्रणाली का अभाव। एथिक्स हॉटलाइन जैसी अनाम रिपोर्टिंग प्रणाली कर्मचारियों को किसी भी नकारात्मक परिणाम (जैसे कि उनकी नौकरी खोने या उनके करियर को खतरे में डालने) के बारे में चिंता किए बिना कदाचार की रिपोर्ट करने में सक्षम बनाती है।

कदाचार रोकने के लिए तत्काल कदम उठाएं

सही अनुपालन प्रशिक्षण प्रदान करने और एक ठोस रिपोर्टिंग प्रणाली बनाने के अलावा, यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि शिकायत प्राप्त होने के बाद संस्थान/ संस्था उस शिकायत के संबंध में उचित कदम उठाएं। तत्काल कार्रवाई और नैतिक समस्याओं का त्वरित समाधान कर्मचारियों के मध्य इस बात को दर्शाता है कि आपकी संस्था अनुपालन को बहुत गंभीरता से लेती है। फलस्वरूप यह अधिक लोगों को उनके द्वारा देखी गई या अनुभव की गई किसी भी नैतिक समस्या को रिपोर्ट करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

तत्काल ऋण आवेदनों से सावधान रहें

प्रस्तावना:

हाल के दिनों में, जनता के अनधिकृत ऋण देने वाले ऐप्स की अवैध गतिविधियों का शिकार होने की घटनाएं बढ़ रही हैं। ये ऐप नियमित बैंकिंग चैनलों के बाहर हैं और विशेष रूप से कमजोर और निम्न-आय वर्ग के लोगों को अत्यधिक उच्च ब्याज दरों और प्रसंस्करण /अप्रत्यक्ष शुल्कों पर ऋण/माइक्रो क्रेडिट की पेशकश कर रहे हैं, और ब्लैकमेलिंग, आपराधिक धमकी आदि सहित हिंसक वसूली प्रक्रियाओं का पालन करते हैं। जनता के जरूरतमंद/कमजोर वर्गों का फायदा उठाकर धोखाधड़ी, गोपनीयता के उल्लंघन और डेटा की दुरूपयोग की भी संभावना बनी रहती है।

अवैध ऋण ऐप्स और घोटालों से खुद को बचाने के लिए कुछ सुझाव:

- किसी एप्लिकेशन को प्ले स्टोर से डाउनलोड करने से पहले उसकी प्रामाणिकता की जांच करें क्योंकि नियमित बैंकिंग चैनलों के बाहर भी ऐसे ऐप्स हैं जो आकर्षक दरों पर ऋण प्रदान करते हैं। ऐसे ऐप्स कभी भी डाउनलोड न करें।
- एसएमएस/ ईमेल के माध्यम से भेजे गए किसी भी संदिग्ध लिंक पर क्लिक न करें।
- अनधिकृत एप्लिकेशन का उपयोग करने से बचें जो डेटा चुरा सकते हैं या निजी डेटा को मिटा सकते हैं और उपयोगकर्ता की पहचान चुरा सकते हैं।
- अधिकांश ऐप्स को इंस्टॉल करते समय उपयोगकर्ताओं को ऐप्स को टेक्स्ट, कॉन्टैक्ट्स, इमेज, कैमरा आदि तक पहुंच प्रदान करने की आवश्यकता होती है। ये ऐप्स संपर्क सूचियों और फ़ोटो की प्रतिलिपि बना सकते हैं और उनका उपयोग पीड़ितों को परेशान करने के लिए कर सकते हैं। इसलिए, किसी भी ऐप को उन अनुमतियों को देने से बचना चाहिए जो किसी ऐप के काम करने के लिए आवश्यक नहीं हैं।
- यदि आपको धन उधार देने वाले ऐप के बारे में कुछ भी संदिग्ध लगता है, तो अपंजीकृत ऋण देने वाले ऐप्स के खतरे को रोकने के लिए तुरंत राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल (एनसीआरपी) को इसकी रिपोर्ट करें।

"अवैध ऋण देने वाले ऐप्स की अवैध गतिविधियों का शिकार न बनें"

निष्कर्ष:

आइए हम बेहतर ऑनलाइन वित्तीय सुरक्षा सुनिश्चित करें और अपंजीकृत ऋण देने वाले ऐप्स के अवैध कृत्यों पर अंकुश लगाएं।

मुनमुन दत्ता, वरिष्ठ प्रबन्धक, चेन्नै-1 क्षेत्र

बैंकिंग उद्योग में प्रौद्योगिकी परिवर्तन: एक विश्लेषण

प्रस्तावना

भारत में बैंकिंग उद्योग के पास इतिहास का एक विशाल कैनवास है, जो उस समय की पारंपरिक बैंकिंग प्रथाओं, अंग्रेजों के समय से लेकर सुधारों का दौर, राष्ट्रीयकरण से लेकर बैंकों का निजीकरण और अब भारत में विदेशी बैंकों की बढ़ती संख्या को कवर करता है।

भारत में बैंकिंग एक लंबी यात्रा से गुजरी है। भारतीय बैंकिंग सेक्टर में कई बदलाव देखने को मिले हैं। विशेष रूप से आज़ादी के बाद के वर्षों में बहुत बड़ा परिवर्तन आया है। वर्ष1990 और 2000 के दशक में परिवर्तन की दर विशेष रूप से उच्च थी, जब कई नवाचारों ने बैंकिंग को समझने के तरीके को बदल दिया और यह पर्यावरण की स्वायत्त और प्रेरित आवश्यकताओं का परिणाम था। वर्ष 1990 के दशक में, भारत में बैंकिंग क्षेत्र में प्रौद्योगिकी और नवाचार पर अधिक जोर दिया जाने लगा। बैंकों ने अधिक गति से बेहतर गुणवत्ता वाली सेवाएँ प्रदान करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना शुरू किया। सूचना प्रौद्योगिकी ने ग्राहकों के लिए भौगोलिक रूप से विविध स्थानों से बैंकिंग करना सुविधाजनक बना दिया है जो पहले भी छद्म रूप से मौजूद थे।

कोविड महामारी ने बीएफएसआई क्षेत्र के प्रक्षेप पथ को पूरी तरह से बदलकर बैंकिंग क्षेत्र और वित्तीय उद्योग में डिजिटलीकरण की गति को मौलिक रूप से बढ़ा दिया है। बैंकिंग क्षेत्र में डिजिटल परिवर्तन पारंपरिक मोड से डिजिटल वातावरण में परिवर्तन से कहीं आगे है। बैंकिंग क्षेत्र तेजी से प्रौद्योगिकी और डेटा-संचालित व्यवसाय बनता जा रहा है। भारत में डिजिटल बैंकिंग हाल के वर्षों में बड़े पैमाने पर अपनाए जाने के साथ काफी बढ़ी है। बैंकिंग और फिनटेक क्षेत्र में डिजिटलीकरण की मौलिक रणनीति उपभोक्ता व्यवहार, प्राथमिकताओं और मांगों के विश्लेषण से शुरू होती है।

पारंपरिक से डिजिटल बैंकिंग की ओर

डिजिटल बैंकिंग भारतीय वित्तीय परिदृश्य के एक अभिन्न अंग के रूप में विकसित हुई है। डिजिटलीकृत वित्तीय यात्रा में प्रमुख घटकों के रूप में लचीली और सुविधाजनक बैंकिंग शामिल है। डिजिटल बैंकिंग व्यक्तिगत रूप से बैंक में आए बिना चौबीसों घंटे सभी पारंपरिक बैंकिंग गतिविधियों तक पहुंचने और उन्हें पूरा करने का प्रमुख लाभ लाती है। वर्ष 2024 तक डिजिटल बैंकिंग उपयोगकर्ताओं की संख्या 3।6 बिलियन का आंकड़ा पार करने की उम्मीद है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग के उपयोग, ब्लॉकचेन तकनीक की शुरूआत और रोबो-सलाहकार सेवाओं के बढ़ते अनुप्रयोग के साथ भारत में फिनटेक नवाचारों ने वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र को नया आकार दिया है।

वित्तीय नवाचार

वित्तीय नवाचार समकालीन बैंकिंग परिवेश में बैंकों के अस्तित्व की कुंजी है। वित्तीय नवाचार के महत्व को व्यापक मान्यता मिली है। मिलर (1986) और मेर्टन (1992) सहित कई प्रमुख विद्वानों ने वित्तीय क्षेत्र में उत्पादों और सेवाओं के महत्व पर प्रकाश डाला है। नवोन्मेषी विचार विविध उद्योगों और अलग-अलग क्षेत्रों में प्रकट होते हैं। वित्तीय आधुनिकीकरण के शुरुआती चरण से ही नवप्रवर्तन वित्तीय बहिष्करण को कम करने और लोगों को बैंकिंग सेवाएं प्रदान करने के तरीकों में सुधार करने में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं। वित्तीय नवाचार आमतौर पर इस्तेमाल की जाने वाली बैंकिंग शब्दावली में से एक है। इसका उपयोग वित्तीय सेवाओं के पैमाने, दायरे और वितरण में किसी भी बदलाव का वर्णन करने के लिए किया जाता है।

वित्तीय सेवा उद्योग के विनियमन और निवेश बैंकिंग में बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने निस्संदेह नए उत्पादों को डिजाइन करने, बेहतर प्रक्रिया विकसित करने और तेजी से जटिल वित्तीय समस्याओं के लिए अधिक प्रभावी समाधान लागू करने की क्षमता पर जोर दिया है। ये वित्तीय नवाचार कई सरकारी नियमों, कर नीतियों, वैश्वीकरण, उदारीकरण, निजीकरण, अंतरराष्ट्रीय वित्तीय बाजार के साथ एकीकरण और घरेलू वित्तीय बाजार में बढ़ते जोखिम का परिणाम हैं। वित्तीय नवाचार वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से वित्त प्रबंधक या मध्यस्थ संस्थान वित्तीय बाजार मौजूदा सादे वेनिला उत्पादों में मूल्य जोड़ते हैं जो उपयोगकर्ता की जरूरतों को पूरा करते हैं।

जॉन फिनर्टी के अनुसार, "वित्तीय नवाचार में नवीन वित्तीय उपकरणों और प्रक्रियाओं का डिजाइन, विकास और कार्यान्वयन और वित्त में समस्याओं के रचनात्मक समाधान तैयार करना शामिल है"। बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र में विभिन्न नवाचार हैं ईसीएस, आरटीजीएस, एनईएफटी, एटीएम, रिटेल बैंकिंग, डेबिट और क्रेडिट कार्ड, मुफ्त सलाहकार सेवाएं, उपयोगिता बिलों का भुगतान, फंड ट्रांसफर, इंटरनेट बैंकिंग, टेलीफोन बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, बीमा उत्पाद बेचना, मुफ्त चेक बुक जारी करना, यात्रा चेक आदि कई और मूल्य वर्धित सेवाएँ।

बैंकों के बीच तीव्र प्रतिस्पर्धा ने संपूर्ण बैंकिंग प्रणाली की अवधारणा को फिर से परिभाषित किया है। बैंक न केवल आकर्षित करने के लिए बल्कि ग्राहकों को बनाए रखने और अपने प्रतिस्पर्धियों पर प्रतिस्पर्धात्मक लाभ हासिल करने के नए तरीके ढूंढ रहे हैं। बैंक अन्य व्यवसायिक संगठनों की तरह वर्चस्व हासिल करने के लिए नवीन बिक्री तकनीक और उन्नत विपणन उपकरण तैनात कर रहे हैं। इस परिवर्तन का मुख्य चालक ग्राहकों की बदलती ज़रूरतें और अपेक्षाएँ हैं। शहरी भारत में ग्राहक अब लंबी कतारों में इंतजार नहीं करना चाहते और बैंकिंग लेन-देन में घंटों बर्बाद नहीं करना चाहते। ग्राहकों के रवैये में यह बदलाव एटीएम, मोबाइल फोन और नेट बैंकिंग के विकास के साथ-साथ ग्राहक के दरवाजे पर सेवा की उपलब्धता के साथ-साथ आया है। सार्वभौमिक बैंकिंग के उद्भव के साथ, बैंकों का लक्ष्य सभी बैंकिंग उत्पाद और सेवाएँ एक ही छत के नीचे प्रदान करना है और उनका प्रयास ग्राहक केंद्रित होना है। जबकि बैंक ग्राहक संबंधों को मजबूत करने और 'रिलेशनशिप बैंकिंग' की ओर बढ़ने का प्रयास कर रहे हैं, ग्राहक तेजी से पारंपरिक शाखा बैंकिंग की सीमाओं से दूर जा रहे हैं और दूरस्थ इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग की

सुविधा की तलाश कर रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी और संचार नेटवर्किंग प्रणालियों ने दुनिया भर में बैंकों और वित्तीय संस्थाओं की कार्यप्रणाली में क्रांति ला दी है।

बैंकिंग में डिजिटलीकरण को बढ़ावा देने वाले निम्न लिखित प्रमुख कारक हैं:

• ग्राहक अनुभव में सुधार की आवश्यकता:

आज तेजी से विकसित हो रहे बाजार के रुझान में, निर्बाध सेवा वितरण, उच्च-स्तरीय उपयोगकर्ता अनुभव, व्यक्तिगत उत्पाद ज्ञान, जवाबदेही और सुरक्षा उपभोक्ता संतुष्टि के प्रमुख पहलू हैं। अब बीएफएसआई क्षेत्र का प्रत्येक संगठन अपने प्रयासों को डिजिटल बनाना चाह रहा है और चाहता है कि ग्राहक अपने घरों में आराम से उनकी सेवाओं का अनुभव करें। बैंकिंग परिवेश में डिजिटल हस्तक्षेप ने ग्राहक अनुभव को बढ़ाया है और यह प्रवृत्ति सभी उद्योगों में प्रचलित होगी।

• त्वरित लेन-देन:

आज के डिजिटल युग में, उपभोक्ताओं को अब वित्तीय लेनदेन पूरा करने के लिए बैंक में जाने की आवश्यकता नहीं है। सभी बैंकों ने अपनी हर संभव पेशकश को बैंकिंग एप्लिकेशन पर लाने का प्रयास किया है और उपयोगकर्ता-अनुकूल इंटरफेस के कारण वे इसमें अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं, जो किसी भी आयु वर्ग के ग्राहकों के लिए समझना आसान है। वे मोबाइल और इंटरनेट बैंकिंग सेवाओं का उपयोग करके अपने खातों के बीच धन हस्तांतरित कर सकते हैं, बिलों का भुगतान कर सकते हैं और अपने खातों की शेष राशि की जांच कर सकते हैं। वे बैंक में कदम रखे बिना ही ऋण प्राप्त कर सकते हैं।

• डेटा सुरक्षा:

बैंकिंग में डिजिटलीकरण को बढ़ावा देने में डेटा सुरक्षा एक महत्वपूर्ण कारक है क्योंकि यह ग्राहकों का विश्वास बनाने और बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है। बैंक अब संवेदनशील डेटा की सुरक्षा और ग्राहक खातों को धोखेबाजों, साइबर हमलों, फ़िशिंग और अन्य खतरों से सुरक्षित करने के लिए उन्नत सॉफ़्टवेयर निर्माण सेवाओं का उपयोग कर रहे हैं। मोबाइल प्रौद्योगिकी विश्लेषक और साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ बीएफएसआई खंड द्वारा नियुक्त शीर्ष पेशेवरों में से हैं।

• एआई समर्थन:

भारतीय बैंकिंग में एआई का सकारात्मक प्रभाव व्यक्तिगत वित्तीय सहायता, सक्रिय धोखाधड़ी का पता लगाने और व्यवसाय मॉडल में सुधार करके बड़े पैमाने पर बदलाव ला सकता है। एआई प्रौद्योगिकियों का रणनीतिक उपयोग कर्मचारी और उपभोक्ता अनुभवों को बढ़ा रहा है। ग्राहक सहायता, वैयक्तिकृत समाधान और वित्तीय नियोजन की पेशकश के अलावा, एआई समर्थन ने सुरक्षा चिंताओं को भी काफी बढ़ा दिया है।

• प्रतिस्पर्धा में बने रहना:

बैंक लगातार डिजिटल बुनियादी ढांचे में निवेश कर रहे हैं, उभरती डिजिटल प्रौद्योगिकियों की खोज कर रहे हैं और प्रतिस्पर्धा में बने रहने के लिए अपने बिजनेस मॉडल को अपना रहे हैं। आज के डिजिटल युग में, बैंक खुद को नवोन्मेषी और ग्राहक-केंद्रित संस्थानों के रूप में स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं। डिजिटल तकनीकों के बढ़ते चलन से फिनटेक कंपनियों का उदय हुआ है जो उपभोक्ताओं को नवीन वित्तीय समाधान प्रदान करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ब्लॉकचेन, मशीन लर्निंग और इंटरनेट ऑफ थिंग्स जैसी अत्याधुनिक तकनीकों का लाभ उठा रही हैं।

कुशल पेशेवरों की मांग में वृद्धि

जब बड़ी मात्रा में डेटा संसाधित करने और लेनदेन पूरा करने की बात आती है तो ब्लॉकचेन और एआई/एमएल प्रौद्योगिकी के बढ़ते उद्योग उपयोग ने मशीनीकरण को बढ़ाया है। परिणामस्वरूप, बीएफएसआई क्षेत्र को ऐसे विशेषज्ञों की आवश्यकता है जो नियामक परिदृश्य को समझते हुए अनुपालन सुनिश्चित कर सकें। इसके अतिरिक्त, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म, नवीन उत्पाद निर्माण, ग्राहक संबंध, मोबाइल प्रौद्योगिकी विश्लेषण और साइबर सुरक्षा में विशेषज्ञता आवश्यक है।

जैसे-जैसे व्यवसाय नवप्रवर्तन करते हैं और आपूर्ति शृंखला अधिक उन्नत होती जाती है, संसाधन प्रबंधन की देखरेख और अनुकूलन के लिए पेशेवरों की मांग बढ़ती है। इसके अतिरिक्त, वित्तीय लेनदेन प्रबंधन, जोखिम प्रबंधन और वित्तीय सलाह में विशेषज्ञता आवश्यक है, जो धन प्रबंधकों, बीमा एजेंटों, वित्तीय विश्लेषकों और निवेश बैंकरों के लिए अवसर पैदा करती है। बीएफएसआई उद्योग विविध पृष्ठभूमि और विशिष्टताओं वाले योग्य व्यक्तियों के लिए नौकरी की व्यापक संभावनाएं प्रदान करता है।

प्रौद्योगिकी परिवर्तन बैंकों के दृष्टिकोण से:

प्रौद्योगिकी, बैंकों को नए मॉडल और प्लेटफ़ॉर्म बनाने का अवसर प्रदान करती है जिनमें ग्राहकों की ज़रूरतों के अनुरूप ढलने की क्षमता होती है। केवल ग्राहकों की आवश्यकताओं की जटिलता और बहुलता के बारे में नहीं है, बल्कि ग्राहक अब उन सेवाओं की मांग कर रहे हैं जो उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप हों। यदि, अगर ये ज़रूरतें पूरी नहीं होतीं तो वे अपने बैंक बदलने से भी नहीं कतराते। इसके लिए बैंकों को ग्राहकों के प्रति अधिक संवेदनशील, जागरूक और प्रासंगिक बनने की आवश्यकता है, न केवल अपने संचार को बढ़ाकर, बल्कि सही समय और स्थान पर सही सेवा प्रदान करके।

- **बैंक को लाभ**

सेवाएं प्रदान करने के लिए डिजिटल माध्यमों का उपयोग करना बैंकों के हित में है। यह बैक ऑफ़िस संचालन में कटौती करके परिचालन लागत को कम करता है, त्रुटियों को कम करता है, और संचालन के लिए आवश्यक हाथों की संख्या को कम करता है। यह बैंक को अपने शाखा नेटवर्क को छोटा करने और नवीन और आकर्षक तरीके से सेवाएं प्रदान करने में सक्षम बनाता है। इससे सेवा की गुणवत्ता, वितरण और दक्षता को बढ़ावा मिलता है, जो डिजिटल प्रौद्योगिकियों को नियोजित करने वाले बैंकों के लिए प्रतिस्पर्धात्मक लाभ के स्रोत के रूप में कार्य कर सकता है। भौगोलिक सीमाओं को हटाकर, यह छोटे बैंकों के संचालन के विस्तार का मार्ग प्रशस्त करता है। इतना ही नहीं, बल्कि डिजिटल तकनीक ने बैंकों को डेटा संग्रह, प्रबंधन और वित्तीय इंजीनियरिंग की गति बढ़ाने में सहायता की है, जिससे संभावित उधारकर्ताओं की साख का आकलन करने के लिए लेनदारों की क्षमता में सुधार हुआ है। विभिन्न अध्ययनों से पता चला है कि प्रौद्योगिकी के उपयोग में वृद्धि के कारण बैंकिंग क्षेत्र का प्रदर्शन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

प्रौद्योगिकी परिवर्तन ग्राहकों के दृष्टिकोण से,

बैंकके ग्राहकों को गुमराह नहीं कर सकते हैं, वे जानते हैं कि अपने हितों की रक्षा कैसे करनी है । सेवाओं से असंतुष्टि की स्थिति में वे आसानी से बैंकों के बीच स्विच कर सकते हैं। एक अध्ययन के अनुसार, 67% भारतीय ग्राहक कई चैनलों के माध्यम से अपने बैंक के साथ बातचीत करना पसंद करते हैं। हालाँकि, ये चैनल एक-दूसरे को प्रतिस्थापित नहीं करते हैं, बल्कि उन तरीकों का विस्तार करते हैं जिनसे बैंक अपने ग्राहकों के साथ बातचीत कर सकता है। इसके अलावा, डिजिटल-बैंकिंग के ग्राहक केवल ऑनलाइन अस्तित्व की तलाश नहीं कर रहे हैं। वे जो चाहते हैं उसमें शामिल हैं (i) बेहतर मूल्य और अच्छी गुणवत्ता वाली बुनियादी सेवाएं, (ii) एक मजबूत ब्रांड प्रतिष्ठा, (iii) पेश किए गए वित्तीय उत्पादों की रेंज, विविधता, प्रतिस्पर्धात्मकता, और (iv) उच्च प्रतिबद्धता ग्राहक सेवाएँ, आवश्यकताएँ, शिकायतें और सकारात्मक अनुभव।

- **ग्राहकों को लाभ**

प्रौद्योगिकी आधारित बैंकिंग का प्रमुख बदलाव बैंकिंग सेवाओं की 'कभी भी, कहीं भी उपलब्धता' से प्राप्त होता है। इससे न केवल ग्राहकों को सुविधा होती है बल्कि समय और मेहनत में भी काफी कमी आती है। इससे सेवाओं का लाभ उठाने की लागत में गिरावट के साथ-साथ सूचना तक निरंतर पहुंच में कमी आएगी। बैंकिंग सेवाओं का स्वचालन किसी के लेन-देन का रिकॉर्ड रखने की सुविधा भी देता है, जिससे एक वित्तीय निशान छूट जाता है जिसे आसानी से ट्रैक किया जा सकता है। निगमों और फर्मों के लिए, यह बेहतर फंड प्रबंधन का समर्थन करता है, और चलते-फिरते विभिन्न सेवाओं तक पहुंच प्रदान करता है, जिससे दक्षता बढ़ती है । चेतावनियाँ, सूचनाएं, बजटिंग जैसी कई नई सेवाएँ भी डिजिटल का उत्पाद हैं।

- **ग्राहक की चिंताएँ**

डिजिटल बैंकिंग की ओर बदलाव शाखा-आधारित बैंकिंग में गिरावट का संकेत नहीं देता है। शाखा नेटवर्क प्रासंगिक बने रहेंगे, जब तक कि ग्राहकों को परेशान करने वाली विभिन्न चिंताओं को दूर नहीं किया जाता। प्रमुख मुद्दा इंटरनेट का उपयोग करके लेनदेन की सुरक्षा है । पहचान की चोरी, निजी जानकारी की हानि और संवेदनशील डेटा के दुरुपयोग के मामले कम नहीं हैं - विशेष रूप से जोखिम से डरने वाले ग्राहकों के बीच प्रौद्योगिकी के उपयोग में बाधा के रूप में कार्य कर रहे हैं। लेन-देन करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक साधनों का उपयोग ग्राहकों की बैंकरों से व्यक्तिगत रूप से जुड़ने और जटिल उत्पादों और सेवाओं पर सलाह लेने की क्षमता को छीन लेता है। साथ ही, कुछ का मानना है कि ऑनलाइन उत्पाद अपने आप में इतने जटिल हैं कि उन्हें उनके उपयोग को समझाने के लिए किसी की आवश्यकता होती है - जिससे मैनुअल बैंकिंग अधिक सुविधाजनक और लचीली लगती है ।

कार्यान्वयन में चुनौतियाँ

वे कारक जो देश में डिजिटल बैंकिंग के विकास को बाधित करती हैं । उनमें प्रमुख हैं:

- किसी देश को प्रौद्योगिकी को अपनाने और इसके विकास और उपयोग के लिए आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए पर्याप्त स्तर के बुनियादी ढांचे की आवश्यकता होती है। हालाँकि, भारत में बुनियादी ढांचा अभी भी शुरुआती चरण में है। इंटरनेट कनेक्टिविटी अभी भी कई लोगों तक नहीं पहुंच पाई है।
- चूंकि इंटरनेट संचार का एक खुला स्रोत है, इसलिए नेटवर्क पर स्थानांतरित डेटा की गोपनीयता और सुरक्षा चोरी, अनधिकृत पहुंच और शोषण के प्रति संवेदनशील है। भारत में साइबर अपराध और हैकिंग एक बड़ी वास्तविकता है और यहां तक कि सबसे भरोसेमंद कंपनियां भी इससे सुरक्षित नहीं हैं। इससे बैंकों की डिजिटल गतिविधियों पर भरोसा कम हुआ है।
- हालाँकि भारत में बैंकिंग क्षेत्र पूंजी पर्याप्तता आवश्यकताओं, प्रावधान और परिसंपत्ति पहचान मानदंडों, निवेश, दिवालियापन मानदंडों आदि के मामले में अत्यधिक विनियमित है, लेकिन इन दिशानिर्देशों को डिजिटल बैंकों तक विस्तारित करना मुश्किल है। हालाँकि आरबीआई विशिष्ट गतिविधियों (जैसे पीयर-टू-पीयर ऋण देने वाले प्लेटफार्मों को एनबीएफसी का दर्जा देना) के लिए रूपरेखा लेकर आ रहा है, जिसके नियामक मानदंडों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करने की आवश्यकता है। इसके अलावा, कुछ नियम, जैसे केवाईसी आवश्यकताएं, बैंकर और ग्राहक के बीच व्यक्तिगत संपर्क और आमने-सामने की बैठकों की गारंटी देते हैं, जो शुद्ध डिजिटल बैंक के मामले में संभव नहीं हो सकता है।
- बैंकिंग क्षेत्र में तकनीकी उछाल ने नए प्रकार के उत्पादों/सेवाओं और उन्हें वितरित करने के नए तरीकों को जन्म दिया है। हालाँकि, इसके लिए विभिन्न अतिरिक्त कानूनी परिभाषाओं की आवश्यकता होती है, जैसे इलेक्ट्रॉनिक हस्ताक्षर का अर्थ और अनुमतियाँ। साथ ही, मौजूदा कानूनी परिभाषाओं और अनुमतियों पर भी पुनर्विचार करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

हम बैंकिंग और वित्तीय प्रौद्योगिकी में एक क्रांति का अनुभव कर रहा है जो तकनीकी प्रगति से प्रेरित है । वित्तीय क्षेत्र का डिजिटलीकरण एक परिवर्तनकारी यात्रा रही है क्योंकि इसने वित्तीय सेवाओं को वितरित करने और उन तक पहुंचने के तरीके को बदल दिया है । बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र डिजिटल रूप से सक्षम वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र के साथ आगे विकास और नवाचार के लिए तैयार है । दुनिया के विभिन्न हिस्सों में बैंक डिजिटलीकरण द्वारा प्रदान किए गए अवसरों का दोहन करने के लिए अपनी दीर्घकालिक रणनीतियों में सुधार कर रहे हैं ।

'केवल इंटरनेट' मॉडल या 'शुद्ध' डिजिटल बैंक का अस्तित्व और सफलता भारत में धूमिल है । बाज़ार की कमी के कारण नहीं, बल्कि इसलिए कि 'ईंट और मोर्टार' शाखाएँ भारतीय ग्राहकों, विशेषकर वृद्ध पीढ़ी को सुरक्षा और आत्मविश्वास की भावना प्रदान करती हैं। इसलिए, डिजिटल ऑफ़र की अपील के बावजूद, बैंकों को अपनी पारंपरिक भौतिक उपस्थिति को डिजिटल उपस्थिति के साथ संतुलित करने की आवश्यकता है। ग्राहकों के बीच सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करने में भारत सरकार की भूमिका भी अपरिहार्य है ।

नगेन्द्र कुमार सिंह, प्रबन्धक, केन्द्रीय कार्यालय

प्रतिबद्ध हूं, संबद्ध हूं, आबद्ध हूं

प्रत्येक वस्तु एवं घटना हम पर किसी न किसी रूप में प्रभाव डालती है, जैसे पानी में कंकड़ फेंकने से लहर उठती है, वैसे ही हम कुछ देखते व सुनते हैं या हमें कुछ होता है तो हम स्वभाविक रूप से प्रतिक्रिया देते हैं। हमारा हृदय प्रभावित होता है और उसी के अनुरूप भाव उत्पन्न होते हैं। वस्तुओं का हृदय पर पड़ने वाला यही प्रभाव और उससे उत्पन्न प्रतिक्रिया संवेदना कहलाती है। आदिकवि वाल्मीकि का प्रसिद्ध प्रसंग है, जब एक क्रौंच पंक्षी की हत्या से आहत कवि के मुंह से अचानक छंद फूट पड़ा था। यही संवेदना है। इस अंक में हम जिस साहित्यकार से परिचित होंगे – उनकी रचनाओं में महर्षि वाल्मीकि, 'कविकुल गुरु' कालिदास का अमिट प्रभाव देखने को मिलता है। वे समाज के वंचित, शोषित, सर्वहारा वर्ग के साथ खड़े दिखाई पड़ते हैं। उन्होंने स्वतंत्रता पूर्व एवं स्वातंत्र्योत्तर भारत में हुए राजनीतिक परिवर्तन तथा राजनीतिक अस्थिरता को ढंके की चोट पर कलमबद्ध किया है। उन्होंने तत्कालीन समाज में व्यापत भुखमरी, महंगाई, बेरोजगारी, सामाजिक विषमता, आपातकाल आदि प्रमुख विषयों पर मुखर होकर लिखे हैं। उनके उपन्यासों में महिलाओं की दुर्दशा को बेबाकी से चित्रित किया गया है। उनकी रचनाओं में ग्रामीण भारत की सुगंध को महसूस किया जा सकता है। प्रकृति से भी उनका बेहद लगाव है। वे हिंदी, संस्कृत, मैथिली एवं बांग्ला भाषा पर बराबर का अधिकार रखते हैं। कहते हैं शब्दों की धार, तलवार की धार से भी अधिक तीव्र होती है। आज चर्चा करेंगे ऐसे ही धारदार कवि की, जो कहता था – "जनता मुझसे पूछ रही है, क्या बतलाऊँ ? जन कवि हूँ मैं, साफ कहूँगा, क्यों हकलाऊँ।" जी हाँ, यह भूमिका संवेदनशील व जनकवि एवं प्रगतिशील लेखक बाबा नागार्जुन के लिए गढ़ी गई है। आइये, इस अंक में इस कवि एवं उपन्यासकार के साहित्यिक सफर एवं जीवनी का अवलोकन करते हुए उनके विचारों व लेखनी से परिचित होते हैं।

कवि जितना बड़ा होगा वह उतना ही अधिक संवेदनशील होगा यानी उसकी दुनिया बहुत बड़ी होगी। एक बड़ा कवि प्रत्येक जीव से जुड़ाव अनुभव करता है। शेक्सपीयर की प्रसिद्ध उक्ति है – 'मैंने उन सबके साथ दु:ख भोगा, जिन्हें दु:ख भोगते देखा।' नागार्जुन प्रसिद्ध कविता 'प्रतिबद्ध हूँ' में अपनी संवेदना को प्रकट करते हुए लिखते हैं –

प्रतिबद्ध हूँ, जी हाँ, प्रतिबद्ध हूँ-
बहुजन समाज की अनुपल प्रगति के निमित्त...
संबद्ध हूँ, जी हाँ, संबद्ध हूँ –
सचर-अचर सृष्टि से...
आबद्ध हूँ, जी हाँ, आबद्ध हूँ –
स्वजन-परिजन के प्यार की डोर में...

पूरी कविता का पाठ करने से पता चलेगा कि जीवन के कितने सारे पक्ष कवि को संवेदित करते हैं। जितनी तरह के पक्ष हैं, जितनी तरह के प्रसंग हैं, उतनी तरह की संवेदनाएं भी हैं।

जन-जन के हृदयों पर अपनी गहन छाप अंकित करने वाले 'बाबा' के नाम से प्रख्यात जनकवि नागार्जुन हिन्दी साहित्य के वह हस्ताक्षर बन गए हैं, जिनकी रचनाएँ जन-जीवन के छोटे-बड़े सरोकारों की यथार्थ व व्यंग्य की तीखी धार से युक्त होते हुए भी पाठक एवं श्रोताओं का मनोरंजन करने में पीछे नहीं रही। ऐसी विलक्षण प्रतिभा से संपन्न बाबा नागार्जुन का जन्म 30 जून 1911 को बिहार में मधुबनी ज़िले के सतलखा गाँव में अपने ननिहाल में हुआ जबकि उनका पुश्तैनी निवास बिहार में दरभंगा ज़िले के तरौनी गाँव में है। उनके पिता गोकुल मिश्र देवघर स्थित बाबा वैद्यनाथ के परम भक्त थे, वे पेशे से कृषक और कर्मकांड करवाने वाले पंडित थे। नागार्जुन पिता गोकुल मिश्र और माता उमादेवी के छठे संतान थे। नागार्जुन से पूर्व गोकुल मिश्र जी के पांच संतान शैशवकाल में ही गुजर गए थे। माता-पिता ने इन्हें भगवान वैद्यनाथ का आशीर्वाद समझकर, इनका नामकरण वैद्यनाथ मिश्र किया। पर, गाँव-घर के लोगों को भय सताता रहा कि एक दिन यह भी माँ-बाप को ठगकर चला जाएगा, तब टोटकों से बचाने के लिए लोगों ने इन्हें 'ढक्कन मिसिर' कहना शुरु कर दिया। मान्यता है कि गावों में आज भी बच्चों को बुरी नजर से बचाने के लिए एक अनगढ़ सा नाम दे देते हैं, जिससे कि बुरी नजर पहले बच्चे के नाम से चिपक जाएगी और बच्चा स्वस्थ रहेगा। उनके परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। वे अपने बारे में लिखते हैं – 'मेरा क्षुद्र व्यक्तित्व रुद्ध है, सीमित है, आटा-दाल नमक-लकड़ी के जुगाड़ में।' उनकी आरंभिक शिक्षा तरौनी के स्थानीय संस्कृत विद्यालय से प्रारम्भ हुई और फिर उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए वाराणसी और कलकत्ता में अध्ययनरत रहें। अध्ययन के दौरान ही ये

संस्कृत में कविता करने लगे थे। 18 वर्ष की आयु में वर्ष 1932 में, उनका विवाह 16 वर्षीय अपराजिता देवी से हुआ । उन्हें अपनी घुमक्कड़ी प्रवृत्ति के कारण परिवार का सान्निध्य अधिक नहीं मिला। नागार्जुन के तीन-तीन वर्ष बीत जाते और वे अपने गाँव नहीं आते । उनके परिवारवाले और रिश्तेदारों का कहना था कि ऐसे गृहस्थ से सन्यासी नही अच्छा है।

वे राहुल सांकृत्यायन से प्रभावित होकर वर्ष 1932 से लेकर 1940 तक अधिकतर समय विदेशी यात्राओं पर रहे। नागार्जुन ने व्यवसाय के रूप में अध्यापन कार्य को ही सर्वप्रथम चुना था । उन्हें एक अध्यापक की स्थायी नौकरी उत्तर प्रदेश के सहारनपुर शहर में मिली, किन्तु वहाँ पर वे ज़्यादा दिन तक न रह पाए। हिंदू धर्म में व्याप्त कर्मकांड, जाति व्यवस्था एवं ऊँच-नीच से क्षुब्ध होकर, वे बौद्ध धर्म के प्रति आकर्षित हुए। उस समय राहुल सांकृत्यायन बौद्ध धर्म में दीक्षित होकर श्रीलंका में धार्मिक ग्रन्थों पर गहन अध्ययन कर रहे थे। उन्होंने ही नागार्जुन का नाम बौद्ध धर्म में दीक्षा ले कर अध्ययन करने के लिए प्रस्तावित किया था और वर्ष 1936 में राहुल सांकृत्यायन के संरक्षण में नागार्जुन श्रीलंका गए। वहाँ बौद्ध धर्म की दीक्षा लेकर दो वर्षों तक धार्मिक ग्रंथों का गहन अध्ययन किया। बौद्ध धर्म में दीक्षित होने के बाद ही बाबा वैद्यनाथ मिश्र का नया नामकरण 'नागार्जुन' के रूप में हुआ।

बाबा नागार्जुन वर्ष 1938 में भारत वापस आने पर किसान नेता स्वामी सहजानंद सरस्वती द्वारा संचालित किसान सभा (समर स्कूल ऑफ पॉलिटिक्स) के साथ सक्रिय रूप से जुड़ गए। उन्होंने 1939 में बिहार के छपरा में किसानों के साथ मिलकर जमींदारों के खिलाफ सत्याग्रह का नेतृत्व किया। जिसके लिए उन पर मुकदमा चला और वे दस महीनों के लिए जेल भी गए। शोषित-उपेक्षित जनसामान्य की निम्न स्तरीय जीवन-शैली में जीने की मजबूरी से द्रवित और ओछी राजनीति की गहरी पहचान कर उनकी ग़लत नीतियों की धज्जियाँ उड़ाने के लिए नागार्जुन ने व्यंग्य कविता का सुदृढ़ आधार अपनाया।

वर्ष 1939 से, वे साहित्य क्षेत्र से सक्रिय रूप से जुड़ गए । यह समय भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए महत्वपूर्ण था, जिसमें जन-जन की भूमिका चाहिए थी । उनकी कविताओं में सामाजिक संघर्ष मुख्य रूप मुखरित हुआ है । वे मानव कल्याण का मार्ग कम्युनिज्म को मान कर चलने लगे। नागार्जुन जीवन और साहित्य दोनों में पीड़ित जन के पक्षधर रहे हैं । उन्होंने साहित्य में पदार्पण किया तब मार्क्सवाद का प्रभाव अधिक था । तत्कालीन लेखकों पर समाजवादी यथार्थवाद का प्रभाव बढ़ता जा रहा था । वे स्वयं अभावग्रस्त, अर्थपीड़ित व उच्च वर्ग द्वारा शोषित थे, तो उनका मार्क्सवाद की तरफ झुकाव लाजमी था। उन्होंने लेनिन और मार्क्सवाद दार्शनिक विचारधारा को भी बड़ी शिद्दत से पढ़ा। वे लिखते हैं:

रोजी रोटी हक की बातें जो भी मुख पर लाएगा,
जो भी हो वो, निश्चय ही कम्युनिस्ट कहलाएगा।

उनकी सर्वप्रथम प्रकाशित कविता 'राम के प्रति' थी, जो वर्ष 1935 में विश्वबंधु पत्रिका में छपी थी । उनकी पहली कविता होने के कारण इस कविता का विशेष महत्व है । इसी समय मैथिली भाषा में उनकी कुछ कविताएं एवं उपन्यास प्रकाशित हुए । हिंदी साहित्य में आने के पूर्व नागार्जुन 'यात्री' नाम से मैथिली भाषा में लिखा करते थे।

नागार्जुन हिंदी कविता धारा के उन प्रमुख स्तंभों में से हैं जिन्होंने कविता को रचा ही नहीं बल्कि जिया है। जन-जन से जुड़ने की जो कला उन में दिखाई पड़ती है, वह अन्य कवियों में दुर्लभ है। उनमें शोषित, प्रताड़ित जन के प्रति प्रेम है, प्रकृति के प्रति रागात्मक भाव, देश के प्रति राष्ट्रप्रेम तथा आततायियों को मार भगाने का संकल्प है। उन्होंने अपने जीवन के लगभग 50 वर्षों में हजारों कविताएं लिखी हैं।

नागार्जुन ने व्यंग्य के माध्यम से समाज का यथार्थ चित्रण किया है । आजादी के बाद सामाजिक स्थितियों में कितनी तेजी से बदलाव आया और आजादी के अर्थ को कुछ जननायकों ने कुछ इस तरह उलट दिया, जिसे स्वीकारा नहीं जा सकता था । इसके अतिरिक्त अकाल के बाद फैली भुखमरी को कवि ने 'अकाल और उसके बाद' कविता में कुछ इस तरह व्यक्त किया है –

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास,
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उसके पास,
कई दिनों तक लगी भींत पर छिपकलियों की गश्त,
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।

उनकी रचनात्मक विशेषता यह है कि कोई भी तत्कालीन घटना उनकी नजर और कलम से छूट नहीं पायी। वर्ष 1955 में कांग्रेसी सरकार के विरुद्ध बिहार में छात्र आंदोलन हुआ । उन दिनों पंडित नेहरू पटना आए थे और छात्रों को कुछ झिड़का था । छात्रों ने उन्हें काले झंडे दिखलाए। कवि इसी प्रसंग में नेहरू के भाषण को ध्यान में रखकर एक कविता 'झण्डा' शीर्षक से लिखते हैं:

दस हजार, दस लाख मरे, पर झण्डा ऊंचा रहे हमारा
कुछ हो कांग्रेसी शासन का डंडा ऊंचा रहे हमारा।

नागार्जुन अपनी बात रखने के लिए बिम्ब विधान की सहायता नहीं लेते थे। वे सपाट शब्दों में अपनी बात रखते थे। उन्हें सत्ता पक्ष को खुली चुनौती देना स्वीकार था । वे पंडित नेहरू की खूब प्रशंसा किए, पर जरूरत पड़ने पर उन्हें बख्शा भी नहीं। वर्ष 1961 में आजाद भारत में पहली बार ब्रिटेन की महारानी एलिज़ाबेथ आईं थीं, तब जवाहरलाल नेहरू प्रधानमंत्री थे। उनके स्वागत के लिए भव्य तैयारी की गई थी, जो कि बहुतों को रास नहीं आई। इस प्रसंग पर नागार्जुन ने अद्भुत व्यंग्य कविता लिखी है। यह कविता इन पंक्तियों से शुरू होती है –

आओ रानी हम ढोएंगे पालकी
यही हुई है राय जवाहरलाल की।

भारत की राष्ट्रीयता का किस तरह क्षरण हुआ, यह कविता अच्छी तरह बता रही है । बात यह है कि, भारत स्वतंत्र होने के बावजूद ब्रिटिश कामन्वेल्थ का सदस्य रह गया था। कुछ लोगों ने इस कविता का विरोध यह कहते हुए किया कि नेहरू जी हमारे प्रधानमंत्री हैं वे हमारे श्रद्धेय हैं, आप उनकी आलोचना कैसे कर सकते हैं। तब, नागार्जुन प्रतिउत्तर देते हुए लिखते हैं – **'लोकतंत्र में नए देवता गढ़ते हो और हमसे पूछते हो कि कैसे आलोचना कर सकते हैं।'**

अपनी बात बेबाकी से कहने की कला बाबा नागार्जुन के पास उपलब्ध है। वे समाज के प्रति कितने सजग थे, उनकी लेखनी में स्पष्ट झलकता है । पद लोलुपता, अनमने ढंग से मिला सम्मान उन्हें कभी रास नहीं आई। कहा जाता है कि पंडित नेहरू के जन्मदिन पर कविता पाठ करने के लिए इंदिरा गाँधी उन्हें आमंत्रित करने शांतिनिकेतन आईं थीं। बाबा इंदिरा गाँधी को इंदु कहा करते थे । इंदिरा गाँधी को देखकर उन्होंने कहा – 'इंदु तुम्हारे पापा हमारी कविता सुन नहीं पाएंगे।' इंदिरा गाँधी ने

कहा कोई बात नहीं आप चलिए । ताकत देखिए उस जवान नागार्जुन की सामने हिंदुस्तान का मसीहा बैठा हुआ है, फिर भी बेबाकी से उन्होंने कविता पाठ किया :

वतन बेचकर पंडित नेहरू फूले नहीं समाते हैं,
बेशर्मी की हद है फिर भी बातें बड़ी बनाते हैं,
अंग्रेजी अमरीकी जोंकों की जमात में हैं शामिल,
फिर भी बापू की समाधि पर झुक-झुक फूल चढ़ाते हैं ।

आश्चर्य यह है कि बाबा की कविता को तत्कालीन प्रधानमंत्री ने सुना और मुस्कुरा भर दिए । शायद अपनी इन्हीं खूबियों के चलते पंडित नेहरू धैर्य और शालीनता के मिसाल भी कहे जाते हैं ।

राजनीतिक कविताओं के प्रसंग में, यह उल्लेखनीय है कि नागार्जुन ने इंदिरा गांधी पर कई कविताएं समर्थन में तो कई विरोध में लिखीं । जब इंदिरा गांधी ने अपने प्रधानमंत्रित्व में चौदह बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया था, तब बाबा ने उनके समर्थन में लिखा, उन्हें लक्ष्मी तक कहा । लेकिन जब उन्होंने जन-विरोधी काज किये, तो विरोध में भी लिखा और जम कर लिखा । वे 'बाघिन' शीर्षक कविता में लिखते हैं –

लंबी जिह्वा, मदमाते दृग झपक रहे हैं
बूंद लहू के उन जबड़ों से टपक रहे हैं
चबा चुकी है ताजे शिशुमुंडों को गिन-गिन
गुर्राती है, टीले पर बैठी है बाघिन ।

वे वर्ष 1974 में जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में बिहार में हुए सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन में शामिल हुए । यह जेपी आंदोलन के उदय और भारतीय राजनीति में भूचाल का समय था । यह आपातकाल के लगने के पूर्व का समय था । बाबा नागार्जुन आपातकाल के दौरान जेल गए, एक साल से ज्यादा जेल में रहें । जेल से ही सम्पूर्ण क्रांति के खिलाफ कविताएं लिखीं, जिनसे पूरा एक संग्रह बना – 'खिचड़ी विप्लव देखा हमने' व्यवस्था पर सीधी चोट, क्रांतिकारी विचारधारा से मिश्रित इस संग्रह की कविताएं – 'इंदु जी क्या हुआ आपको' , 'लाइए, मैं चरण चूमूं आपके' , 'जाने तुम कैसी डायन हो' , 'चंदू, मैंने सपना देखा', 'तुनुक मिजाजी नहीं चलेगी' आदि हर काल-खंड में पाठकों को प्रभावित करेंगी ।

कालिदास भारतीय काव्य जगत के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं । मैंने भूमिका में उल्लेख किया है कि बाबा नागार्जुन कालिदास से बहुत प्रभावित थे । कालिदास कविता में बाबा कालिदास से पूछते हैं कि कवि और उसके पात्र के बीच कैसा संवेदनात्मक संबंध है? वे लिखते हैं –

अमल धवल गिरी के शिखरों पर
प्रियवर तुम कब तक सोए थे?
रोया यक्ष है कि तुम रोए थे?

कालिदास सच-सच बतलाना ।

हिंदी उपन्यास में लोकोन्मुखी रचनाशीलता की जिस परंपरा की शुरुआत प्रेमचंद ने की थी, उसे पुष्ट करने वालों में नागार्जुन अग्रणी हैं । 'रतिनाथ की चाची' लेखक का पहला हिंदी उपन्यास है । सर्वप्रथम इसका प्रकाशन 1948 में हुआ था । इसके बाद उनके कुल बारह उपन्यास आए । सबमें दलितों-वंचितों-शोषितों की कथा है । रतिनाथ की चाची जैसे चरित्रों से आरंभ हुई यात्रा में बिसेसरी, उगनी, इंदिरा, चंपा, गरीबदास, लक्ष्मणदास, बलचनमा, भोला जैसे चरित्र जुड़ते गए । उनके नारी पात्र जारूक हैं, अपने अधिकारों के प्रति लड़ने के लिए तत्पर हैं । उनके उपन्यास में नारी चरित्रों को मिली प्रमुखता 'रतिनाथ की चाची' की ही कड़ी है । इसलिए इस कृति का ऐतिहासिक महत्व है । रतिनाथ की चाची विधवा है । देवर से प्रेम के चलते गर्भवती हुई तो मिथिला के पिछड़े सामंती समाज में हलचल मच गई । गर्भपात के बाद तिल-तिल कर वह मरी । यह उपन्यास हिंदी का गौरव है ।

बाबा नागार्जुन को कई आलोचकों ने कबीर के समतुल्य का कवि माना है और कईयों ने तो उन्हें कबीर से एक कदम आगे का कवि भी कहा है । बाबा के पास भी कबीर जैसा फक्कड़ अंदाज है और व्यवस्था को आड़ों हाथ लेने का सामर्थ्य । उनके उपन्यास लेखन की शैली को देखते हुए उन्हें प्रेमचंद के परंपरा का लेखक भी कहा जाता है । उनके उपन्यास के पात्र भी प्रेमचंद के पात्रों की तरह ग्रामीण परिवेश से आते हैं और अपने अधिकारों एवं हक के लिए जागरूक हैं ।

जनकवि की सहज स्वाभाविक उपाधि से विभूषित बाबा नागार्जुन को सर्वप्रथम 'पत्रहीन नग्न गाछ' मैथिली काव्य संग्रह पर साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया । उत्तर प्रदेश सरकार ने 'भारत भारती पुरस्कार' से अलंकृत किया, तो मध्य प्रदेश सरकार ने 'मैथिली शरण गुप्त' पुरस्कार प्राप्त से । वे बिहार सरकार से 'डॉ राजेन्द्र प्रसाद' पुरस्कार अर्जित किये तथा दिल्ली की हिंदी अकादमी ने उन्हें शिखर सम्मान से विभूषित किया । यह सार्वभौमिक सत्य है कि हर शताब्दी का सूर्यास्त होता है । बाबा नागार्जुन 5 नवंबर 1998 को अपने नश्वर शरीर का त्याग कर देते हैं और इसी के साथ व्यवस्था का कान समय-समय पर मरोड़ने वाले एक फक्कड़ कवि एवं आलोचक को देश खो देता है ।

आइये साहित्य की विभिन्न विधाओं में दिए उनके योगदान से रूबरू होते हैं –

कविता संग्रह : युगधारा, सतरंगे पंखोंवाली, प्यासी पथराई आँखें, तलाब की मछलियाँ, चंदना, खिचड़ी विप्लव देखा हमने, तुमने कहा था, पुरानी जूतियों का कोरस, हजार-हजार बाँहों वाली, पका है यह कटहल, अपने खेत में, मैं मिलिटरी का बूढ़ा घोड़ा

उपन्यास : रतिनाथ की चाची, बाबा बटेसरनाथ, दुखमोचन, बलचनमा, वरुण के बेटे, नई पौध

खंड काव्य : भस्मांकुर, भूमिजा

अनूदित कविता संग्रह : चित्रा, पत्रहीन नग्न गाछ (मैथिली से हिंदी में अनुवाद)

मुकुल व्यास, सहायक प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय मेरठ

डिजिटल करेंसी : ई-रुपया

डिजिटल करेंसी वित्तीय दुनिया की नई खोज है जिसमें किसी भी देश का पिछड़ना आर्थिक रूप से महंगा साबित हो सकता है। यही कारण है कि वर्तमान समय में दुनिया के 105 देश डिजिटल करेंसी पर काम कर रहे हैं। इनमें से 50 देश करेंसी लांच करने के एडवांस स्टेज पर पहुंच चुके हैं। जिन 105 देशों में डिजिटल करेंसी पर काम चल रहा है वह विश्व जीडीपी में 95% हिस्सेदारी रखते हैं। जी-20 समूह के भी 90 परसेंट देश (16 देश) अपनी डिजिटल करेंसी पर काम कर रहे हैं। बहामास, वर्ष 2020 में अपना राष्ट्रव्यापी सीबीडीसी - सैंड डॉलर लॉन्च करने वाली पहली अर्थव्यवस्था रही है। नाइजीरिया वर्ष 2020 में eNaira शुरू करने वाला दूसरा देश है। अप्रैल 2020 में चीन डिजिटल मुद्रा e-CNY का संचालन करने वाला दुनिया की पहली प्रमुख अर्थव्यवस्था बन गया है।

भारतीय रिज़र्व बैंक ने नवंबर 2022 में थोक और दिसंबर 2022 में खुदरा क्षेत्र में डिजिटल रुपये के लिये प्रायोगिक योजना लॉन्च की । डिजिटल पेमेंट हेतु यह एक कैशलेस और कॉन्टैक्टलेस तरीका है। यह एक त्वरित प्रतिक्रिया (क्यूआर) कोड या एसएमएस स्ट्रिंग-आधारित ई-वाउचर है, जो उपयोगकर्त्ताओं के मोबाइल पर भेजा जाता है । उपयोगकर्त्ता कार्ड, डिजिटल भुगतान एप या इंटरनेट बैंकिंग एक्सेस की आवश्यकता के बिना इस वाउचर को भुनाने में सक्षम होंगे। यह सेवाओं के प्रायोजकों को बिना किसी भौतिक इंटरफेस के डिजिटल मोड में लाभार्थियों और सेवा प्रदाताओं के साथ जोड़ता है। यह भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा डिजिटल रूप में जारी वैध मुद्रा या लीगल टेंडर है। यह 'फिएट करेंसी' के समान है और फिएट करेंसी के साथ परस्पर विनिमेय है। एनपीसीआई ने ई-रुपी लेन-देन के लिए एक्सिस बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, केनरा बैंक, एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, इंडियन बैंक, इंडसइंड बैंक, कोटक महिंद्रा बैंक, पंजाब नैशनल बैंक, भारतीय स्टेट बैंक या यूनियम बैंक ऑफ इंडिया सहित 11 बैंकों के साथ साझेदारी की है।

ई-रुपया केंद्रीय बैंक पर दावे का प्रतिनिधित्व करने वाले डिजिटल टोकन के रूप में होगा और बैंक नोट के डिजिटल समतुल्य के रूप में प्रभावी रूप से कार्य करेगा जिसे इलेक्ट्रॉनिक रूप से एक धारक से दूसरे धारक को स्थानांतरित किया जा सकता है। डिजिटल रुपए के उपयोग और इसके द्वारा किये जाने वाले कार्यों के आधार पर, साथ ही पहुँच के विभिन्न स्तरों पर विचार करते हुए, भारतीय रिज़र्व बैंक ने डिजिटल रुपए को दो श्रेणियों में विभाजित किया है:

खुदरा ई-रुपया : यह मुख्य रूप से खुदरा लेन-देन के लिये नकदी का इलेक्ट्रॉनिक संस्करण है, जिसका संभावित रूप से लगभग सभी व्यक्तियों द्वारा उपयोग किया जा सकता है और यह भुगतान एवं निपटान के लिये सुरक्षित धन तक पहुँच प्रदान कर सकता है।

थोक सीबीडीसी : इसे चुनिंदा वित्तीय संस्थानों तक सीमित पहुँच के लिये डिज़ाइन किया गया है।

सरकारी प्रतिभूतियों और इंटरबैंक लेन-देन से जुड़े वित्तीय लेन-देन को इस तकनीक के माध्यम से रूपांतरित किया जा सकता है। यह परिचालन लागत, संपार्श्विक के उपयोग और तरलता प्रबंधन के संदर्भ में पूंजी बाज़ार को अधिक कुशल एवं सुरक्षित भी बनाता है।

ई-रुपए कागज़ी मुद्रा और सिक्कों के समान मूल्यवर्ग में जारी किये जाएँगे तथा मध्यस्थों, यानी बैंकों के माध्यम से वितरित किये जाएँगे। लेन-देन इसमें भागीदार बैंकों द्वारा पेश किये गए डिजिटल वॉलेट के माध्यम से होगा और मोबाइल फोन एवं उपकरणों पर संग्रहीत होगा। लेन-देन व्यक्ति से व्यक्ति और व्यक्ति से व्यापारी दोनों रूपों में हो सकते हैं। पी2एम लेन-देन (जैसे खरीदारी) के लिये व्यापार स्थल पर क्यूआर कोड होंगे। उपयोगकर्त्ता बैंकों से डिजिटल टोकन उसी तरह निकाल सकेंगे जैसे वे वर्तमान में भौतिक नकद राशि निकालते हैं। वे अपने डिजिटल टोकन को वॉलेट में रख सकेंगे और उन्हें ऑनलाइन या व्यक्तिगत रूप से खर्च कर सकेंगे या उन्हें ऐप के माध्यम से हस्तांतरित कर सकेंगे।

ई-रुपए के लाभ:

डॉलर पर निर्भरता कम करना: भारत अपने रणनीतिक साझेदारों के साथ व्यापार के लिये डिजिटल रुपए को एक अधिभावी मुद्रा के रूप में स्थापित कर सकता है, जिससे डॉलर पर उसकी निर्भरता कम हो सकती है। यह प्रगति एक ऐसे समय हो रही है जब भारत पहले से ही रूस, संयुक्त अरब अमीरात और सऊदी अरब के साथ भारतीय रुपए में व्यापार के निपटारे के लिये वार्तारत है।

भौतिक मुद्रा को बनाए रखने की लागत में कटौती: सीबीडीसी में नकदी पर निर्भरता कम करने की क्षमता है। जिस सीमा तक बड़े नकदी उपयोग को सीबीडीसी द्वारा प्रतिस्थापित किया जा सकता है, उस सीमा

तक मुद्रा की छपाई, परिवहन, भंडारण और वितरण की लागत को कम किया जा सकता है।

विनियमित मध्यस्थता: परिचालन लागत को कम करने के साथ-साथ, यह लोगों को किसी भी निजी वर्चुअल मुद्रा (क्रिप्टोकरेंसी) के समान ही सुविधाओं की पेशकश करेगा जबकि इसके साथ कोई जोखिम संलग्न नहीं होगा।

क्रिप्टो के विपरीत, ई-रुपया विनियमित मध्यस्थता एवं नियंत्रण व्यवस्था से लैस है जो मौद्रिक एवं वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र की अखंडता और स्थिरता सुनिश्चित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भुगतान प्रणाली का वैश्वीकरण: सीबीडीसी भुगतान प्रणालियों का एक अधिक वास्तविक-समय और लागत-प्रभावी वैश्वीकरण भी सक्षम कर सकता है। यह सीमा-पार भुगतानों के निपटान के लिये सहयोगी/प्रतिनिधि बैंकों के महंगे नेटवर्क की आवश्यकता को समाप्त कर सकता है।इससे विदेशों में कार्यरत भारतीयों के लिये घर पैसा भेजना आसान और सस्ता हो जाएगा, जिसके परिणामस्वरूप विश्व में विप्रेषण के शीर्ष प्राप्तकर्ता देश भारत के लिये बड़ी बचत होगी।

ई-रुपी से संबद्ध चुनौतियाँ:

गोपनीयता और सुरक्षा संबंधी चिंता: ई-रुपए में संवेदनशील उपयोगकर्ता एवं भुगतान डेटा को बड़े पैमाने पर संचित करने की क्षमता है। इस डेटा का दुरूपयोग नागरिकों के निजी लेन-देन की जासूसी करने के लिये आसानी से किया जा सकता है।

यदि उचित सुरक्षा प्रोटोकॉल के बिना इसे लागू किया जाता है तो एक ई-रुपया वर्तमान वित्तीय प्रणाली में पहले से मौजूद विभिन्न सुरक्षा एवं गोपनीयता संबंधी खतरों के दायरे और पैमाने को काफी हद तक बढ़ा सकता है।

"डिजिटल डिवाइड और वित्तीय निरक्षरता: डिजिटल निरक्षरता का उच्च स्तर भारत में ई-रुपए की सफलता के मार्ग की सबसे बड़ी चुनौती और बाधा है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2021 में इंटरनेट साक्षरता के मामले में भारत 120 देशों के बीच 73वें स्थान पर था। इसके अलावा, डिजिटल सेवाएँ स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध नहीं हैं, जो वित्तीय साक्षरता के लिये एक बड़ी बाधा है।

स्वीकार्यता चिंता : ई-रुपए लेन-देन का पता लगा सकने की क्षमता भारत में इसके प्रचलन के लिये एक बाधा बन सकती है जहाँ नकद लेन-देन अभी भी, मुख्यतः उनकी गोपनीयता के कारण, अत्यंत लोकप्रिय है। सरकारी आँकड़ों के अनुसार वित्तीय वर्ष 2022 में प्रचलित बैंक नोटों की मात्रा में 5% वृद्धि हुई।

व्यक्तिगत डेटा उल्लंघन से बचने के लिये भारत की विनियामक प्रणालियों को डेटा गोपनीयता के उभरते जोखिमों को समझना होगा और बैंकिंग संस्थानों को उचित सुरक्षा एवं रोधी उपायों के कार्यान्वयन के लिये मार्गदर्शन प्रदान करना होगा। डिजिटल रुपया एक वरदान सिद्ध हो सकता है, लेकिन आतंकवाद के वित्तपोषण या मनी लॉन्ड्रिंग हेतु डिजिटल मुद्रा के उपयोग को रोकने के लिये 'अपने ग्राहक को जानो' मानदंडों के सख्त अनुपालन को लागू करने की आवश्यकता है।

हिन्दी है अपने विचारों और संवाद की भाषा...
जुड़ी है इससे हर जन की, मन की आशा....

खेत में लहलहाती फसल में, किसान की हिन्दी,
सीमा पर बरसे गोली बनकर, जवान की हिन्दी !!

विश्व कप के मैदान में, भीड़ के उत्साह में हिन्दी,
सिनेमा की स्क्रीन के आगे, शोर मचाए हिन्दी !

नेताओं के नारों में, उमंग जगाए अपनी हिन्दी,
चाय के प्यालों संग, चर्चा करवाए अपनी हिन्दी !!

रेलगाड़ी में अजनबी को भी अपना बनाए हिन्दी,
सोशल मीडिया पर धूम मचाए, अपनी हिन्दी !

दर्पण सी है, रहती संग, साथ मुस्काए अपनी हिन्दी,
पानी सी बेरंग ये, हर भाषा में घुल-मिल जाए हिन्दी !

हर मन में संगीत के साथ, बस जाए अपनी हिन्दी,
कश्मीर से कन्याकुमारी तक, चलती जाए हिन्दी !!

शबनम बानो
सहायक प्रबन्धक
क्षेत्रीय कार्यालय
रायपुर

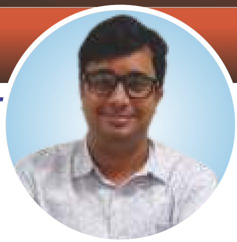

शुभम दीक्षित, प्रबन्धक, केन्द्रीय कार्यालय

डार्क हॉर्स

हाल ही में बहु चर्चित विधु विनोद चोपड़ा की डॉकयुमेंट्रीनुमा फिल्म ने ध्यान उस किताब की ओर खींचा जिसका ताना-बना यूपीएससी के एस्पेरेंट्स के चारो ओर बुना गया था । एक किताब जो उस दुनिया से तआरूफ़ करवाती है जो दिल्ली मुखर्जी नगर और नेहरू विहार के दस बाई दस के कमरों में आबाद है । दुनियाँ, जहां देर रात की अधजगी आँखों में सपने पलते हैं । सपने, देश की सर्वोच्च परीक्षा में सफल होने के । अपने इस स्तम्भ के माध्यम से आज हम बात करने जा रहे हैं वर्ष 2015 में प्रकाशित हुए नीलोत्पल मृणाल और 'शब्दारंभ प्रकाशन' के पहले उपन्यास 'डार्क हार्स' की ।

नई हिन्दी के लेखन में नीलोत्पल मृणाल, दिव्य प्रकाश दुबे, गीत चतुर्वेदी और विमल चंद्र पाण्डेय के नाम से शायद ही कोई अपरिचित हो । विशेष रूप से अगर इस उपन्यास के लेखक नीलोत्पल मृणाल की बात करें तो उनकी खास बात ये है कि लेखक साहित्यिक शुचिता के नाम पर अपने किरदारों का कॉलर पकड़ कर नहीं चलाता है । उनकी की जुबान नहीं काटता है । उसके किरदार जब चाहें, जो चाहें बोल देते हैं । शायद इन्हीं सब के चलते नीलोत्पल को शब्द, शिल्प, बिंब आदि साहित्यक पैमानों में नहीं बंधा जा सकता । अपनी इसी खूबी के चलते नीलोत्पल ने डार्क हॉर्स और औघड़ के माध्यम से नई हिन्दी के लेखकों के बीच खासा नाम कमाया है ।

डार्क हॉर्स महज़ उपन्यास न होकर नीलोत्पल के स्वअनुभवों का निचोड़ है । उपन्यास की भूमिका में नीलोत्पल खुद स्वीकारते हैं कि "संभवतः जिस उम्र में आदमी के पास सबसे अधिक ऊर्जा रहती है, कुछ करने का पुरजोर उत्साह होता है और दुनिया देखने-समझने की सबसे ज्यादा जिज्ञासा होती है, मैंने अपने जीवन का सबसे चमकदार दौर आइएएस की तैयारी में मुखर्जी नगर में गुज़ार दिया । शायद यही कारण रहा होगा कि मैंने अपने पहले उपन्यास में यहीं की ज़िंदगी को पन्नों पर उतारना सही समझा ।" नीलोत्पल खुद भी यह दावा करते हैं कि उन्होंने इस उपन्यास के रूप में कोई साहित्य नहीं रचा है, बल्कि उन्होंने जो देखा है, उसे ही अक्षरों, शब्दों और वाक्यों में पिरोकर एक कहानी कह डाली है । इस उपन्यास को पढ़ते हुए, किरदारों के मुंह से 'गंवई गालियों' को सुनते हुए ऐसा नजर भी आया है, जिससे यह कहा जा सकता है कि वह अपने दावे पर खरे उतरे हैं । लेकिन नीलोत्पल ने इस उपन्यास से यह साबित कर दिया है कि उनमें लेखन की यह एक नई हुमक है ।

एक सफल लेखक वही है जिसका हर किरदार अपने किरदार में नज़र आए । डार्क हॉर्स' का मुख्य किरदार संतोष का कथन **"जेतना दिन में लोग एमए - पीएचडी करेगा, हौंक के पढ़ दिया तो ओतना दिन में तो आईएसे बन जाएगा।"** क्या उन सभी छात्रों की संवेदना को व्यक्त करने के लिए पर्याप्त नहीं है, जो ग्रेजुएशन के बाद गांवों, कस्बों और छोटे शहरों से निकलकर सिविल सर्विसेज़ की तैयारी करने के लिए दिल्ली और एलाहाबाद की ओर कूच कर जाते हैं । घर से बोरिया-बिस्तरा उठा कर निकले ये नवनिहाल अपने कंधों पर घर से निकलते हुए सिर्फ कुछ कपड़े, माँ के हाथ का बना आचार और बाप का दुलार ही लेकर नहीं निकलते । इनके कंधों पर पूरे परिवार या यूं कहने कि पूरे कुनबे की आशाओं का बोझ होता कि कभी को इनके हाथों में एक कुशल प्रशासक बनने का प्रमाणपत्र होगा तो ये घर-परिवार, रिश्ते-नाते, गांव-जवार, जनपद-क्षेत्र आदि को शानो-शौकत से नवाजती हुई अगली कई पीढ़ियों के तारणहार बनके उभरेंगे । कितना तो सटीक ही कहता है संतोष **"हाँ डॉक्टर बनकर आप अपना करियर बना सकते थे, इंजिनियर बनकर आप अपना करियर बना सकते थे, पर अगर अपने साथ-साथ कई पीढ़ियों का करियर बनाना है तो आईएएस बनना होगा।"**

'डार्क हॉर्स' का मुख्य किरदार संतोष बिहार के भागलपुर से सिविल सर्विस की तैयारी के लिए दिल्ली आता है । उत्तर प्रदेश, बिहार जैसे हिंदी पट्टी के राज्यों से सिविल सर्विस की तैयारी करने वालों के लिए तो इलाहाबाद और दिल्ली ही मक्का-मदीना हैं । खास तौर से हिंदी माध्यम से तैयारी करने वालों के लिए ये दो जगहें ही खास मानी जाती हैं । जो थोड़े कमजोर घर से होते हैं, वे इलाहाबाद रह कर तैयारी करते हैं, और जो थोड़े साधन-संपन्न होते हैं, वे दिल्ली के मुखर्जी नगर में अपना आशियाना बनाते हैं । संतोष भी दिल्ली के मुखर्जी नगर को अपना आशियाना बनाता है और अपना सपना पूरा करने तक के लिए वहीं रुक जाता है ।

उपन्यास का कथानक कुछ ऐसा है कि आप किसी ऊंची मंजिल की आखरी खिड़की पर बैठ हों और वहाँ से सारे किरदारों को आते-जाते, उठते-बैठते, पढ़ते-लिखते, खाते-पीते देख रहे होते हैं । वहीं उसी खिड़की से आप देख पाते है कि किस तरह बरसों से वैष्णव परंपरा का निबाह करते चले आ रहे छात्र दिल्ली में कदम रखते ही कैसे समझौतावादी हो जाते हैं और 'गुरूत्व' और 'चेलत्व' के भावों में उतरकर फौरन ही सोचने लगते हैं कि अब तो आइएएस की पोस्ट ज्यादा दूर नहीं । चाय पर चकल्लस के दौरान हुई किसी से एक छोटी सी गलती भी कैसे इतिहास की बड़ी से बड़ी गलती साबित हो जाती है । इसी गलती को जो पकड़ के अच्छी तरह से समझ लेता है, उसके लिए परिणाम के दिन जश्न और जो नहीं समझ पाता

है उसके लिए मातम । इसी जश्न और मातम के पहले की संघर्षपूर्ण मगर सच्ची तस्वीर है 'डार्क हार्स' ।

डार्क हॉर्स में संघर्ष के सिरे सिर्फ एक परीक्षा की तैयारी तक ही सीमित नहीं नहीं है; ये गांव-शहर की संस्कृतियों का भी संघर्ष है, खान-पान और रहन-सहन से लेकर भाषाई सुचिता और भदेसपन का भी संघर्ष है, बौद्धिकता और सहजता का संघर्ष है, गंवई बाप और शहर से समझौतावादी हो चले उसके पुत्र के बीच के संवाद का संघर्ष है, सफलता और असफलता का संघर्ष है, कोचिंग क्लास में अपनी पहली प्रेमिका या प्रेमी खोजने का संघर्ष है, भारी-भरकम सिलेबस के बोझ के बीच - बीच कहीं कोई मस्ती का कोना ढूंढने का संघर्ष है, मर्यादाएं-परंपराएं बनाए रखने या झट से तोड़ देने का संघर्ष है । खुद के मिजाज और व्यवस्था के लिजलिजेपन का संघर्ष है ।

ऐसे में संतोष जब गाँव डुमरी से दिल्ली के लिए चलता तो उसकी आँखों में आइएएस बनने का सपना तो था लेकिन वो दिल्ली के माहौल से नावाकिफ़ था । मुखर्जी नगर आकर जो अहम सबक संतोष सीखता है वो ये कि सिविल सेवा की तैयारी करने वालों से ज्यादा भयंकर आशावादी मानव संसार में और कहीं मिलना मुश्किल है । उसमें भी मुखर्जी नगर नंबर एक पर है । बार-बार फेल होने पर भी लोग एक दूसरे को लगातार सांत्वना देकर यहाँ रहने लायक बना ही देते हैं और यूपीएससी की परीक्षा तो एक खुला मैदान है, जिसमें हर अभ्यर्थी एक योद्ध है – आ सोल्जर ऑफ फॉर्च्यून । ऐसे में हर्ज़ ही क्या है दिल्ली जा कर बैचलर ऑफ मुखर्जी नगर बन जाने में ? जम कर पढ़िये, ऊपर वाले पर आस्था रखिए, भारत सरकार आपको सेवा का मौका अवश्य देगी । और असफल रहे तो राज्य सरकारें, बैंक पीओ आदि भी तो हैं ।

दिल्ली पहुंचते ही संतोष अपने पुराने परिचित रायसाहब से मिलता है । ये वही रायसाहब हैं जिन्होंने संतोष को दिल्ली आने के लिए प्रोत्साहित किया था । रायसाहब और उसके दोस्त मनोहर संतोष के लिए कमरे ढूंढ़ने में मदद करते हैं । लेकिन एक बार जब आप दोस्ती कर लें तो आपको दोस्तों को उनके गुण और अवगुण दोनों के साथ अपनाना पड़ता है । हश्र कुछ यूं होता है कि कमरा मिलने पर संतोष के ही कमरे में आयोजित पीने-पिलाने की पार्टी में संतोष ही ढंग से शरीक नहीं हो पाता है । आगे चलकर संतोष और रायसाहब में गुरु-चेले का संबंध विकसित होता है । रायसाहब का परिचय लेखक कुछ इस तरह देता है - **ये चेला पालने में फिरोज शाह तुगलक के साढ़ू भाई थे । चेला बनाना और चेले से खाना बनवाना कोई इनसे सीखे । ये या तो आदमी को अपना चेला बनाते थे या जिससे इनको दहशत होती थे उसको गुरु बना लेते थे, पर अपने समकक्ष किसी को नहीं रखते थे ।**

रायसाहब संतोष का एडमिशन उसी कोचिंग में करवाते हैं जिसमें वो पहले से पढ़ते थे । आने वाले दिनों में संतोष की मुलाक़ात अन्य किरदारों यथा रंगबाज़ मनोहर, प्रखर गुरु, मेहनती जावेद खान, फोकस्ड विमलेंदु और आज़ाद विचारों की दो युवतियों – पायल और विदिशा से होती है । धीरे-धीरे आपस में होने वाली ये मुलाकातें दोस्ती से कुछ आगे और प्रेम के बीच कहीं जा फँसती हैं । इन मित्रताओं में ही प्रेम, जलन, संदेह, डाह, कामरेडी, वासना, भाईचारा और भी जाने क्या-क्या छुपा है । कहानी आगे बढ़ती है तो बदलते लोग और लोगों की बदलती सलाहों के बीच संतोष कई बार असफलता का स्वाद चख लेता है । इतना सब देख के संतोष आखिर में अपना कमरा बदल कर किसी दोस्त से भी मेल -जोल रखे बिना खुद को तैयारी में डुबो देता है । आखिर में जब संतोष यूपीएससी के विजेताओं के बीच अपनी जगह बना लेता है तो मनोहर उसके बारे में किसी को समझाते हुए बताता है कि वो संतोष को डार्क हॉर्स क्यूँ कहता है । **डार्क हॉर्स का मतलब है रेस में दौड़ता ऐसा घोड़ा जिस पर किसी ने भी दांव नहीं लगया था, जिससे किसी ने जीतने की उम्मीद न की थी मगर आखिर में वो घोड़ा सबसे आगे निकल जाता है ।**

समय का पहिया रुकता नहीं, ये सच यहाँ रहने वाले विद्यार्थियों से बेहतर भला कौन जानता । ये पहिया न केवल रुकता नहीं, बल्कि कितने नसीबों को अपने नीचे कुचलता जाता है और कईयों की तकदीर इसी पहिये पे सवार हो कर बहुत आगे निकल जाती । मुखर्जी नगर का सम्पूर्ण कालचक्र पीटी, मेंस और इंटरव्यू के बीच ही घूमता है । यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि ''डार्क हॉर्स' महज एक उपन्यास भर नहीं है, बल्कि छात्र जीवन की अनगिनत अनकही कहानियों का ऐसा दस्तावेज है, जो यथार्थ के धरातल पर एक तरफ सफलता के आस्वाद को चिन्हित करता हुआ एक अदद नौकरी के लिए सिविल सर्विस को ही पैमाना मानता है, तो वहीं दूसरी तरफ बीए-एमए-पीएचडी की डिग्रियां हासिल करने के बाद भी उसी एक अदद नौकरी के न मिलने पर हमारी शिक्षा व्यवस्था पर कई सवाल भी खड़े करता है ।

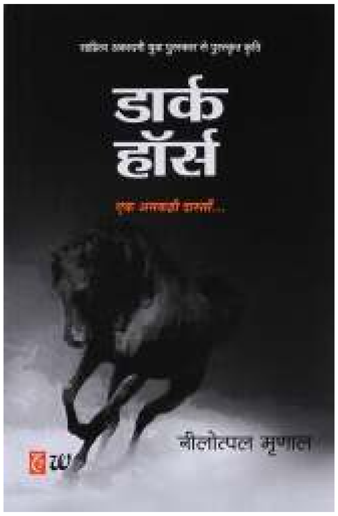

पुस्तक : **डार्क हॉर्स**
लेखक : नीलोत्पल मृणाल
प्रकाशक : हिंदी युग्म
मूल्य : 199 रुपये मात्र

शब्द	उच्चारण	उद्भव	अर्थ
Somnolent	Som-nuh-luhnt	लैटिन	निद्रा लानेवाला
Polyhistor	Pol-ee-his-ter	लैटिन+ ग्रीक	बहुविद्/ विविध शास्त्रों का ज्ञाता
Aberration	Ab-uh-rey-shuhn	लैटिन	हटना/ विपथन
De rigueur	Duh ri-gur	फ्रेंच	कठिन
Muster	Muhs-ter	लैटिन	जायज़ा/ गिनती
Aplomb	Uh-pluhm	फ्रेंच	अभिमान/ संयम/ शान्तचित्तता
Largess	Lahr-jes	मध्यकालीन अंग्रेज़ी	उदारता/ पारितोषिक
Felicific	Fee-luh-sif-ik	लैटिन	प्रसन्नतापूर्ण/ आनंददायक
Kerfuffle	Ker-fuhf-uhl	स्कॉटिस	बहस
Serendipity	Ser-uhn-dip-i-tee	मध्यकालीन अंग्रेज़ी	नसीब
Zeitgeist	Zahyt-gahyst	जर्मन	युगचेतना
Transmogrify	Tranz-mog-ruh-fahy	लैटिन	परिणत हो जाना
Perspicuity	Pur-spi-kyoo-i-tee	लैटिन	अंधकार से छुटकारा
Salubrious	Suh-loo-bree-uhs	लैटिन	स्वास्थ्यप्रद
Pernicious	Per-nish-uhs	लैटिन	हानिकारक
Glissade	Gli-sahd	प्राचीन फ्रेंच	फिसलना
Coruscate	Kor-uh-skeyt	लैटिन	टिमटिमाहट
Exsiccate	Ek-si-keyt	लैटिन	सुखाना/ सोखना
Auberge	Oh-bairzh	फ्रेंच	सराय, मुसाफिरखाना
Convivium	Kuhn-viv-ee-uhm	लैटिन	दल
Refulgent	Ri-fuhl-juhnt	लैटिन	चमकीला/ प्रकाशमान

संकलनकर्ता
श्री द्रोहित शिवहरे
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय
भोपाल

आइओबी डिजिटल बैंकिंग कैलेंडर 2024: आपके वित्तीय संसार की सरलता और सुविधा की कुंजी

उज्ज्वल नव वर्ष के वायदों की कामना करते हुए, हम इण्डियन ओवरसीज बैंक (आइओबी) की ओर से आपको एक अनूठा तोहफा देना चाहते हैं: "आइओबी डिजिटल बैंकिंग कैलेंडर 2024"। यह साधारण कैलेंडर से कहीं बढ़कर आपके लिए वित्तीय सेवाओं की दुनिया को आसान और सुविधाजनक बनाने का एक गाइड है।

इस कैलेंडर से आइओबी के रोमांचक डिजिटल समाधानों की जानकारी प्राप्त करें:

- **आइओबी भीम यूपीआई:** कैशलेस लेन-देन की सरलता का अनुभव करें। कैलेंडर आपको शक्तिशाली आइओबी भीम यूपीआई ऐप को सेटअप करने और इस्तेमाल करने के तरीके बखूबी बताएगा।
- **आइओबी मोबाइल बैंकिंग:** अपने मोबाइल से ही अपना बैंक + खाते प्रबंधित करें। खाता विवरण, फंड ट्रांसफर, बिल पेमेंट और बहुत कुछ, सब कुछ आइओबी मोबाइल बैंकिंग ऐप में मिलेगा।
- **आइओबी इंटरनेट बैंकिंग:** ऑनलाइन बैंकिंग क्रांति का हिस्सा बनें। खाता विवरण, लेन-देन, निवेश और अन्य सेवाएं, सब कुछ आपकी उंगलियों पर ।
- **आइओबी डेबिट कार्ड:** विभिन्न आइओबी डेबिट कार्ड देसों और अपनी ज़रूरतों के हिसाब से सही कार्ड चुने। संपर्क रहित भुगतान और सुरक्षित लेन-देन का आनंद उठाएं।
- **आइओबी क्रेडिट कार्ड:** अपने लाइफ स्टाइल के लिए सही आइओबी क्रेडिट कार्ड ढूंढें, ट्रैवल पॉइंट्स, कैशबैक ऑफर और खरीद सुरक्षा का लाभ उठाएं।
- **आइओबी फास्टैग:** हाईवे पर बिना रुके, बिना झंझट आगे बढ़ें। आइओबी फास्टैग सेवा के साथ, टोल भुगतान का लाभ उठाएँ टाएँ एक बार मे ।
- **आइओबी यूपीआई क्यूआर:** अपने निजी आइओबी यूपीआई क्यूआर कोड के ज़रिए कैशलेस भुगतान स्वीकार करना कितना आसान और सुरक्षित है, यह जानें।
- **आइओबी पे:** संस्थानों के लिए प्यारे सुरक्षित और सुविधाजनक पेमेंट गेटवे समाधान के बारे में जानें, कैशलेस लेन-देन की एक नई दुनिया में प्रवेश करें।

यह कैलेंडर सिर्फ जानकारी नहीं देता, बल्कि आपको हर सेवा से गहराई से जुड़ने का मौका भी देता है। इसमें लगे त्वरित स्कैन क्यूआर कोड स्मार्टफोन से स्कैन करें और विस्तृत जानकारी, ट्यूटोरियल और डाउनलोड लिंक तुरंत पाएं।

प्रिंटेड क्यूआर कोड या मोबाइल फ़ोन में प्राप्त पीडीएफ या सॉफ्टकॉपी से क्यूआर कोड स्कैन करने की बिन्दुवार जानकारी:

- **क्यूआर कोड ढूंढें:** पीडीएफ या डिजिटल दस्तावेज़ में क्यूआर कोड को खोजें। यह एक वर्गाकार बॉक्स होगा जिसमें छोटे-छोटे काले और सफेद बिंदु होंगे।
- **क्यूआर कोड रीडर ऐप खोलें:** अपने मोबाइल फ़ोन में एक क्यूआर कोड रीडर ऐप इंस्टॉल करें। अगर आपके फ़ोन में पहले से यह सुविधा शामिल नहीं है, तो आप गूगल प्ले स्टोर या एपल एप स्टोर से निशुल्क क्यूआर कोड रीडर ऐप डाउनलोड कर सकते हैं।
- **दस्तावेज़ को कैमरे के सामने रखें:** पीडीएफ या सॉफ्टकॉपी को अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरे के सामने इस तरह रखें कि क्यूआर कोड पूरी तरह से स्क्रीन पर दिखाई दे।
- **फोकस करें:** फ़ोन को स्थिर रखें और क्यूआर कोड पर कैमरे का फोकस करें।
- **स्वचालित स्कैनिंग:** अधिकांश क्यूआर कोड रीडर ऐप्स क्यूआर कोड का स्वतः ही पता लगा लेते हैं और उसे स्कैन कर लेते हैं। यह प्रक्रिया आमतौर पर एक से दो सेकंड में पूरी हो जाती है।
- **जानकारी प्राप्त करें:** स्कैनिंग सफल होने पर, क्यूआर कोड में निहित जानकारी आपके मोबाइल फ़ोन पर प्रदर्शित हो जाएगी। यह एक वेबसाइट का लिंक, संपर्क जानकारी, टेक्स्ट संदेश, या अन्य डेटा हो सकता है।

गैलरी या सॉफ्टकॉपी से क्यूआर कोड स्कैन करने के चरण, जब सीधे कैमरे से स्कैन करना संभव न हो:

- **क्यूआर कोड रीडर ऐप खोलें:** क्यूआर कोड रीडर ऐप इनस्टॉल करें जो गैलरी से स्कैन करने में सक्षम हो। कई क्यूआर कोड रीडर ऐप्स में यह सुविधा शामिल होती है।
- **गैलरी खोलें:** ऐप में ही "गैलरी से स्कैन करें" या "चित्र से स्कैन करें" जैसा विकल्प ढूंढें। इस विकल्प का चयन करें और क्यूआर कोड वाली फोटो को खोलें।
- **कोड का चयन करें:** कुछ ऐप्स में, आपको फोटो में क्यूआर कोड को उंगली से चिन्हित या टैप करना पड़ सकता है ताकि ऐप को पता चल सके कि किस हिस्से को स्कैन करना है।
- **स्कैनिंग का इंतज़ार करें:** ऐप क्यूआर कोड को पढ़ने और उसकी जानकारी को डिकोड करने का प्रयास करेगा। यह प्रक्रिया आमतौर पर कुछ सेकंड में पूरी हो जाती है।
- **जानकारी देखें:** सफल स्कैनिंग पर, क्यूआर कोड में शामिल जानकारी आपके मोबाइल फ़ोन पर प्रदर्शित हो जाएगी।

आइए, हम सभी आइओबी के साथ वित्तीय सशक्तिकरण और एक उज्ज्वल भविष्य को अपनाएं। आने वाला वर्ष आपके और आपके प्रियजनों के लिए खुशियों, सफलता और समृद्धि से भरा हो।

नव वर्ष की मंगलमय शुभकामनाएं!

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय जयपुर के निरीक्षण के दौरान की झलकियाँ

विभिन्न नराकासों से प्राप्त पुरस्कारों की झलकियाँ

क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलुरु – प्रथम पुरस्कार

क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई – द्वितीय पुरस्कार

क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली– द्वितीय पुरस्कार

क्षेत्रीय कार्यालय लुधियाना – द्वितीय पुरस्कार

क्षेत्रीय कार्यालय पटना – तृतीय पुरस्कार

क्षेत्रीय कार्यालय बड़ौदा – तृतीय पुरस्कार

क्षेत्रीय कार्यालय विजयवाड़ा – तृतीय पुरस्कार

क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर – प्रोत्साहन पुरस्कार

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक
Indian Overseas Bank

आपकी प्रगति का सच्चा साथी
Good People to grow with

भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्

डिजिटल कैलेंडर - 2024

BHIM IOB UPI

IOB Mobile Banking

IOB Internet Banking

IOB Debit Cards

जनवरी - 2024

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

फरवरी - 2024

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29		

मार्च - 2024

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

अप्रैल - 2024

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

मई - 2024

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

जून - 2024

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30						

जुलाई - 2024

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

अगस्त - 2024

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

सितम्बर - 2024

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

अक्तूबर - 2024

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

नवम्बर - 2024

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

दिसम्बर - 2024

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

IOB Credit Cards

IOB FASTag

IOB UPI QR

IOB Pay

डेस्कटॉप/लैपटॉप को सुरक्षित करने हेतु महत्वपूर्ण टिप्स

हमारे आज के जीवन में, डेस्कटॉप और लैपटॉप का उपयोग सूचनाओं को संग्रहीत करने, संचारित करने और डिजिटल दुनिया या साइबर स्पेस से जुड़ने के लिए बड़े पैमाने पर किया जाता है। इन प्रणालियों पर उपयोग की गई किसी भी लापरवाही अथवा तकनीकी चूक के परिणामस्वरूप सूचना की चोरी और गोपनीयता का उल्लंघन हो सकता है। साइबर खतरों से बचाव के लिए नीचे कुछ प्रमुख प्रक्रियाएँ दी गई हैं:

क्या करें

- हमेशा लाइसेंस प्राप्त सॉफ़्टवेयर इंस्टॉल करें और अपने ऑपरेटिंग सिस्टम और एप्लिकेशन को नियमित रूप से अपडेट करें। ओपन-सोर्स सॉफ़्टवेयर के मामले में, अपडेट हमेशा वास्तविक स्रोतों से करना सुनिश्चित करें।
- किसी भी सॉफ़्टवेयर को इंस्टॉल करते समय, डिफ़ॉल्ट कॉन्फ़िगरेशन के बजाय अपनी आवश्यकता के अनुसार सुविधाओं को सक्षम करने के लिए चेकबॉक्स पर टिक/अनटिक करना सुनिश्चित करें।
- उपयोग के बाद और जब आप कार्यालय छोड़ें तो अपने व्यक्तिगत कंप्यूटर को उचित रूप से शटडाउन और स्विच ऑफ करें।
- एंटीवायरस सॉफ़्टवेयर संगठन द्वारा उपलब्ध कराया जाना चाहिए या नवीनतम सिग्नेचर के ऑटो अपडेट के साथ विश्वसनीय वेबसाइट से डाउनलोड किया जाना चाहिए।
- अपने ब्राउज़र और सिस्टम के अन्य सभी एप्लिकेशन को अद्यतन रखें।
- सटीक समय सिंक के लिए अधिकृत/विश्वसनीय (नेटवर्क टाइम प्रोटोकॉल) एनटीपी कॉन्फ़िगर करें।
- निष्क्रियता के बाद स्क्रीन की छोटी अवधि के ऑटो लॉकआउट को सक्षम करें।
- बायोस पासवर्ड सेटअप करें।
- प्रिंटर, नेटवर्क स्विच और वाई-फाई एक्सेस प्वाइंट जैसे अन्य नेटवर्किंग उपकरणों सहित कंप्यूटर उपकरणों की भौतिक सुरक्षा सुनिश्चित करें।
- ऑपरेटिंग सिस्टम, एप्लिकेशन सॉफ़्टवेयर और ड्राइवर स्थापित करने के लिए मूल उपकरण निर्माता या संगठन द्वारा प्रदान की गई सीडी का उपयोग करें।
- विशेषाधिकार प्राप्त (एडमिन) खातों और अन्य उपयोगकर्ताओं के लिए मजबूत पासवर्ड (विशेष वर्णों के साथ अल्फ़ान्यूमेरिक) का उपयोग करें।
- समय-समय पर अपने कंप्यूटर डेटा का बैकअप किसी सुरक्षित स्थान पर ले और समय-समय पर परीक्षण करें कि क्या यह सही ढंग से पुनर्स्थापित हो रहा है।

क्या न करें

- नियमित गतिविधियों के लिए व्यवस्थापक उपयोगकर्ता खाते का उपयोग न करें।
- ब्राउज़र या किसी तृतीय-पक्ष पासवर्ड भंडारण उपयोगिता पर मेरा पासवर्ड याद रखें पर क्लिक न करें।
- किसी भी अज्ञात यूएसबी को अपने कंप्यूटर में प्लग न करें।
- अपने सिस्टम में लॉग इन करने के लिए अपने क्रेडेंशियल किसी के साथ साझा न करें।
- अपनी मशीन को ऑन या खुला न छोड़ें।
- डिफ़ॉल्ट रूप से रिमोट डेस्कटॉप प्रोटोकॉल (आरडीपी) की अनुमति न दें।
- जब तक आवश्यक न हो, नेटवर्क साझा करने की अनुमति न दें और यह विशिष्ट उपयोगकर्ता/मशीनों तक सीमित होना चाहिए।
- पीयर टू पीयर (पी2पी) फ़ाइल शेयरिंग प्रोग्राम उदाहरण के लिए टोरट आदि को इंस्टॉल न करें।
- हार्ड ड्राइव का उसकी पूरी क्षमता से उपयोग न करें।
- जब तक आवश्यक न हो जीपीएस, ब्लूटूथ, एनएफसी और अन्य सेंसर सक्षम न रखें।

योगेश कुमार साव, वरिष्ठ प्रबंधक, सूचना सुरक्षा विभाग, केंद्रीय कार्यालय

भारत में साइबर कानून (आइटी कानून)

साइबर कानून जिसे आइटी कानून भी कहा जाता है, यह कंप्यूटर और इंटरनेट सहित सूचना-प्रौद्योगिकी से संबंधित कानून है । यह कानून सूचना विज्ञान से संबंधित है और सूचना, सॉफ्टवेयर, सूचना सुरक्षा और ई-कॉमर्स के डिजिटल प्रसार का पर्यवेक्षण करता है।

भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अनुसार " साइबर कानून इलेक्ट्रॉनिक दस्तावेजों को कानूनी मान्यता देता है और ई-फाइलिंग और ई-कॉमर्स लेन-देन का समर्थन करने के लिए एक संरचना प्रदान करता है और साइबर अपराधों को कम करने, जांच करने के लिए एक कानूनी संरचना भी प्रदान करता है।"

साइबर कानून क्या है?

साइबर कानून साइबर स्पेस को नियंत्रित करने वाला कानून है। साइबर स्पेस एक बहुत व्यापक शब्द है और इसमें कंप्यूटर, नेटवर्क, सॉफ्टवेयर, डेटा स्टोरेज डिवाइस (जैसे हार्ड डिस्क, यूएसबी डिस्क आदि), इंटरनेट, वेबसाइट, ईमेल और यहां तक कि इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस जैसे सेल फोन, एटीएम मशीन आदि शामिल हैं।

इसमें कानून आचरण के निम्नवत नियम शामिल हैं :

- जिसे केंद्र सरकार द्वारा अनुमोदित किया गया है,
- जो एक निश्चित क्षेत्र पर लागू होते हैं, और
- जिसका उस क्षेत्र के सभी व्यक्तियों को पालन करना चाहिए ।

इन नियमों के उल्लंघन करने पर सरकारी कार्रवाई हो सकती है, यानी कारावास या जुर्माना या मुआवजा देने का आदेश।

साइबर कानून में निम्नलिखित से संबंधित कानून शामिल हैं:

- साइबर अपराध
- इलेक्ट्रॉनिक और डिजिटल हस्ताक्षर
- बौद्धिक संपदा
- डेटा सुरक्षा और गोपनीयता

साइबर अपराध गैरकानूनी कृत्य हैं जहां कंप्यूटर का उपयोग या तो एक उपकरण या लक्ष्य या दोनों के रूप में किया जाता है। इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स (ई-कॉमर्स) और ऑनलाइन शेयर ट्रेडिंग में भारी वृद्धि के कारण साइबर अपराध की घटनाओं में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। आगे इन अपराधों पर विस्तार से चर्चा की गई है। साइबर अपराध और डिजिटल साक्ष्य से संबंधित भारतीय कानून पर व्यापक चर्चा एएससीएल प्रकाशन में "साइबर अपराध" शीर्षक से प्रदान की गई है।

इलेक्ट्रॉनिक अभिलेखों को प्रमाणित करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक हस्ताक्षरों का उपयोग किया जाता है। डिजिटल हस्ताक्षर एक प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक हस्ताक्षर हैं। डिजिटल हस्ताक्षर तीन प्रमुख कानूनी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं - हस्ताक्षर प्रमाणीकरण, संदेश प्रमाणीकरण और संदेश अखंडता। डिजिटल हस्ताक्षर की तकनीक और दक्षता उन्हें हाथ से लिखे हस्ताक्षर की तुलना में अधिक भरोसेमंद बनाती है।

बौद्धिक संपदा का तात्पर्य मानव मस्तिष्क की रचनाओं से है, जैसे कहानी, गीत, पेंटिंग, डिजाइन आदि। साइबर स्पेस से संबंधित बौद्धिक संपदा के पहलू साइबर कानून के अंतर्गत आते हैं। इनमें शामिल हैं:

- कंप्यूटर सॉफ्टवेयर, कंप्यूटर स्रोत कोड, वेबसाइट, सेल फोन सामग्री आदि के संबंध में कॉपीराइट कानून,
- सॉफ्टवेयर और सोर्स कोड लाइसेंस, डोमेन नाम,
- मेटा टैग, मिररिंग, फ्रेमिंग, लिंकिंग आदि के संबंध में ट्रेडमार्क कानून,

सेमीकंडक्टर अर्धचालक कानून इंटीग्रेटेड सर्किट डिजाइन और लेआउट की सुरक्षा से संबंधित है,

- कंप्यूटर हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर के संबंध में पेटेंट कानून।

डेटा संरक्षण और गोपनीयता कानूनों का उद्देश्य व्यक्ति के गोपनीयता अधिकारों और बैंकों, अस्पतालों, ईमेल सेवा प्रदाताओं आदि जैसे डेटा नियंत्रकों के हितों के बीच उचित संतुलन हासिल करना है। ये कानून नई तकनीकों का उपयोग करके डेटा एकत्र, संग्रहीत और प्रसारित करने के कारण गोपनीयता के लिए उत्पन्न चुनौतियों का समाधान करना चाहते हैं।

साइबर कानून की आवश्यकता

ऐसे कई कारण हैं, जिनकी वजह से पारंपरिक कानून के लिए साइबरस्पेस से निपटना बेहद मुश्किल है।

इनमें से कुछ पर नीचे चर्चा की गई है :-

- साइबरस्पेस एक अमूर्त आयाम है जिसे पारंपरिक कानून का उपयोग करके नियंत्रित और विनियमित करना असंभव है।
- साइबरस्पेस न्यायक्षेत्र की सीमाओं का पूर्ण अनादर करता है। भारत में कोई व्यक्ति संयुक्त राज्य अमेरिका में कंप्यूटर पर होस्ट

किए गए बैंक के इलेक्ट्रॉनिक वॉल्ट में सेंध लगा सकता है और मिनटों के भीतर स्विट्जरलैंड में किसी अन्य बैंक में लाखों रुपये स्थानांतरित कर सकता है। उसे बस एक लैपटॉप, कंप्यूटर और एक सेल फोन की आवश्यकता होगी।

- साइबरस्पेस हर सेकंड विशाल ट्रैफ़िक वॉल्यूम को संभालता है। जब हम इसे पढ़ते हैं तब भी दुनिया भर में अरबों ईमेल फैल रहे हैं, हर मिनट लाखों वेबसाइटें एक्सेस की जा रही हैं और बैंकों द्वारा हर दिन दुनिया भर में अरबों डॉलर इलेक्ट्रॉनिक रूप से स्थानांतरित किए जाते हैं।
- साइबरस्पेस सभी की भागीदारी के लिए बिल्कुल खुला है। भूटान में एक दस साल का बच्चा बाली में एक आठ साल के बच्चे के साथ लाइव चैट कर सकता है, बिना उनके बीच की दूरी या गुमनामी की परवाह किए।
- साइबरस्पेस अपने सदस्यों को गुमनाम रहने की अपार संभावनाएं प्रदान करता है। आसानी से उपलब्ध एन्क्रिप्शन सॉफ्टवेयर और स्टेग्नोग्राफ़िक उपकरण जो छवि और ध्वनि फ़ाइलों के भीतर जानकारी को सहजता से छिपाते हैं, साइबर-नागरिकों के बीच आदान-प्रदान की गई जानकारी की गोपनीयता सुनिश्चित करते हैं।
- साइबरस्पेस पहले कभी नहीं देखी गई आर्थिक दक्षता प्रदान करता है। अरबों डॉलर मूल्य के सॉफ़्टवेयर का इंटरनेट पर बिना किसी सरकारी लाइसेंस, शिपिंग और हैंडलिंग शुल्क और किसी भी सीमा शुल्क का भुगतान किए बिना व्यापार किया जा सकता है।
- इलेक्ट्रॉनिक जानकारी साइबर अपराध का मुख्य उद्देश्य बन गई है। इसकी मुख्य विशेषता अत्यधिक गतिशीलता है, जो व्यक्तियों, वस्तुओं या अन्य सेवाओं की गतिशीलता से कहीं अधिक है। अंतरराष्ट्रीय कंप्यूटर नेटवर्क कुछ ही सेकंड में दुनिया भर में बड़ी मात्रा में डेटा स्थानांतरित कर सकते हैं।
- करोड़ों रुपये का एक सॉफ्टवेयर सोर्स कोड या एक फिल्म रिलीज होने के कुछ घंटों के भीतर दुनिया भर में प्रसारित की जा सकती है।
- भौतिक जानकारी (जैसे किताबें, कागजात, सीडी रोम, फ्लॉपी डिस्क) की चोरी को पारंपरिक दंड प्रावधानों द्वारा आसानी से कवर किया जाता है। हालांकि, समस्या तब शुरू होती है जब इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड जल्दी, अस्पष्ट रूप से और अक्सर दूरसंचार सुविधाओं के माध्यम से कॉपी किए जाते हैं। यहां "मूल" जानकारी, ऐसा कहने के लिए, "मालिक" के "कब्जे" में रहती है और फिर भी जानकारी चोरी हो जाती है।

साइबर कानून का महत्व

साइबर कानून महत्वपूर्ण है क्योंकि यह इंटरनेट, वर्ल्ड वाइड वेब और साइबरस्पेस से संबंधित लेन-देन और गतिविधियों के लगभग सभी पहलुओं को छूता है। प्रारंभ में ऐसा लग सकता है कि साइबर कानून एक बहुत ही तकनीकी क्षेत्र है और इसका साइबरस्पेस की अधिकांश गतिविधियों से कोई लेना-देना नहीं है। लेकिन वास्तविकता यह है कि सत्य से बढ़कर कुछ भी नहीं हो सकता। चाहे हमें उसका एहसास हो या न हो, साइबरस्पेस में हर क्रिया और हर प्रतिक्रिया के कुछ कानूनी और साइबर कानूनी दृष्टिकोण होते हैं।

साइबर कानून के प्रकार

कई प्रकार के साइबर कानून हैं,जिनमें से प्रत्येक डिजिटल गतिविधियों और साइबर सुरक्षा के विशिष्ट पहलुओं को संबोधित करते हैं । यहां **साइबर कानूनों की कुछ सामान्य श्रेणियां दी गई हैं:**

1. **गोपनीयता कानून:** गोपनीयता कानून व्यक्तियों की व्यक्तिगत जानकारी के ऑनलाइन संग्रह, उपयोग और सुरक्षा को नियंत्रित करते हैं। उदाहरणस्वरूप यूरोप में सामान्य डेटा संरक्षण विनियमन (जीडीपीआर) और कैलिफोर्निया उपभोक्ता गोपनीयता अधिनियम (संयुक्त राज्य अमेरिका में सीसीपीए) ।
2. **साइबर अपराध कानून:** साइबर अपराध कानून हैकिंग, पहचान की चोरी, ऑनलाइन धोखाधड़ी और साइबरबुलिंग सहित ऑनलाइन होने वाली आपराधिक गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं । ये कानून अपराध, दंड, जांच और अभियोजन के लिए प्रक्रियाओं को परिभाषित करते हैं।
3. **डेटा उल्लंघन अधिसूचना कानून:** डेटा उल्लंघन अधिसूचना कानून यह अनिवार्य करते हैं कि डेटा उल्लंघन होने पर संगठन प्रभावित व्यक्तियों और अधिकारियों को सूचित करें। इन कानूनों का उद्देश्य पारदर्शिता सुनिश्चित करना और व्यक्तियों को खुद की सुरक्षा के लिए आवश्यक कार्रवाई करने में मदद करना है।
4. **बौद्धिक संपदा कानून:** बौद्धिक संपदा कानून डिजिटल सामग्री की रक्षा करते हैं यानी डिजिटल दायरे में पेटेंट, ट्रेडमार्क और कॉपीराइट । वे कॉपीराइट उल्लंघन और ऑनलाइन चोरी जैसे मुद्दों का समाधान करते हैं।
5. **साइबर सुरक्षा कानून:** साइबर सुरक्षा कानूनों के लिए संगठनों को अपने डिजिटल बुनियादी ढांचे और संवेदनशील डेटा की सुरक्षा के लिए उपायों को लागू करने की आवश्यकता होती है। ये कानून प्रायः डेटा सुरक्षा प्रथाओं के लिए अक्सर मानक और आवश्यकताएं निर्धारित करते हैं ।
6. **ई-कॉमर्स और ऑनलाइन अनुबंध:** ई-कॉमर्स और ऑनलाइन अनुबंधों से संबंधित कानून ऑनलाइन लेन-देन, इलेक्ट्रॉनिक हस्ताक्षर और उपभोक्ता अधिकारों के लिए कानूनी

ढांचा स्थापित करते हैं। वे डिजिटल बाज़ार में विवादों को हल करने के लिए एक आधार प्रदान करते हैं।

7. **सोशल मीडिया और ऑनलाइन सामग्री विनियम:** सोशल मीडिया और ऑनलाइन सामग्री को नियंत्रित करने वाले विनियम घृणास्पद भाषण, मानहानि और हानिकारक सामग्री जैसे मुद्दों का समाधान करते हैं। वे ऐसी सामग्री को हटाने या प्रतिबंधित करने के लिए दिशानिर्देश निर्धारित करते हैं।

8. **कंप्यूटर अपराध कानून:** विशेष रूप से कंप्यूटर अपराध कानून कंप्यूटर सिस्टम और नेटवर्क से जुड़े लक्षित अपराध है। इनमें अनधिकृत पहुंच, मैलवेयर वितरण और महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे पर साइबर हमले शामिल हैं।

9. **क्रिप्टोकरेंसी और ब्लॉकचेन विनियम:** जैसे-जैसे डिजिटल मुद्राएं और ब्लॉकचेन तकनीक प्रमुखता प्राप्त करती है, विनियम क्रिप्टोकरेंसी ट्रेडिंग, जैसे मुद्दों का समाधान करते हैं।

10. **अंतरराष्ट्रीय साइबर सुरक्षा समझौते:** कुछ कानून और समझौते साइबर अपराधों से निपटने और साइबर सुरक्षा सर्वोत्तम प्रथाओं को बढ़ावा देने में अंतरराष्ट्रीय सहयोग पर ध्यान केंद्रित करते हैं। उदाहरणस्वरूप साइबर अपराध पर बुडापेस्ट कन्वेंशन और देशों के बीच द्विपक्षीय साइबर सुरक्षा समझौते शामिल हैं।

साइबर कानून के लाभ

आइटी अधिनियम 2000, इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड के माध्यम से किए गए लेन-देन और संचार में वृद्धि को देखते हुए, अधिनियम सरकारी विभागों को डिजिटल प्रारूप में आधिकारिक दस्तावेजों को दाखिल करने, बनाने और बनाए रखने को स्वीकार करने के लिए सशक्त बनाने का प्रयास करता है। अधिनियम ने डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड/संचार के प्रमाणीकरण और उत्पत्ति के लिए एक कानूनी ढांचे का भी प्रस्ताव दिया है। साइबर कानून के लाभ निम्नलिखित हैं :-

- साइबर कानून हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर दोनों सुरक्षा प्रदान करता है।
- भारत में ई-कॉमर्स के परिप्रेक्ष्य से, आइटी अधिनियम 2000 और इसके प्रावधानों में कई सकारात्मक पहलू शामिल हैं। सबसे पहले, ई-व्यवसायों के लिए इन प्रावधानों का निहितार्थ यह होगा कि ई-मेल अब हमारे देश में संचार का एक वैध और कानूनी रूप होगा जिसे कानून की अदालत में विधिवत प्रस्तुत और अनुमोदित किया जा सकेगा।
- कंपनियां अब अधिनियम द्वारा प्रदान किए गए कानूनी बुनियादी ढांचे का उपयोग करके इलेक्ट्रॉनिक वाणिज्य करने में सक्षम होंगी।
- अधिनियम में डिजिटल हस्ताक्षरों को कानूनी वैधता और मंजूरी दी गई है।
- यह अधिनियम डिजिटल हस्ताक्षर प्रमाणपत्र जारी करने के लिए प्रमाणन प्राधिकारी बनने के व्यवसाय में कॉरपोरेट कंपनियों के प्रवेश के लिए दरवाजे खोलता है।
- यह अधिनियम अब सरकार को वेब पर अधिसूचना जारी करने की अनुमति देता है और इस प्रकार ई-गवर्नेंस की शुरुआत करता है।
- अधिनियम कंपनियों को किसी भी कार्यालय, प्राधिकरण, निकाय या स्वामित्व वाली या नियंत्रित एजेंसी के साथ कोई भी फॉर्म, आवेदन या कोई अन्य दस्तावेज़ दाखिल करने में सक्षम बनाता है। ऐसे इलेक्ट्रॉनिक फॉर्म के माध्यम से संबंधित सरकार द्वारा निर्धारित किया जा सकता है।
- आइटी अधिनियम सुरक्षा के महत्वपूर्ण मुद्दों को भी संबोधित करता है, जो इलेक्ट्रॉनिक लेन-देन की सफलता के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। अधिनियम ने सुरक्षित डिजिटल हस्ताक्षर की अवधारणा को एक कानूनी परिभाषा दी है, जिसे बाद की तारीख में सरकार द्वारा निर्धारित सुरक्षा प्रक्रिया की एक प्रणाली के माध्यम से पारित करना आवश्यक होगा।
- आइटी अधिनियम, 2000 के तहत, यदि कोई उनके कंप्यूटर सिस्टम या नेटवर्क में सेंध लगाता है और नुकसान पहुंचाता है या डेटा कॉपी करता है तो कॉरपोरेट्स के लिए वैधानिक उपाय करना अब संभव हो गया है। अधिनियम द्वारा प्रदान किया गया उपाय मौद्रिक क्षति के रूप में है, जो 1 करोड़ रु. से अधिक नहीं है।

आइटी अधिनियम, 2000 के उप-भाग

आइटी अधिनियम, 2000 के कुछ उप-भाग हैं जो इंटरनेट उपयोगकर्ताओं को सशक्त बनाते हैं और साइबरस्पेस को सुरक्षित रखने का प्रयास करते हैं।

➢ धारा 65 - कंप्यूटर स्रोत दस्तावेज़ों के साथ छेड़छाड़

ऐसा व्यक्ति जो जानबूझकर किसी कंप्यूटर स्रोत कोड (जैसे प्रोग्राम, कंप्यूटर कमांड, डिज़ाइन और लेआउट) को छुपाता है, नष्ट करता है या बदलता है, जब इसे कानून द्वारा बनाए रखा जाना आवश्यक होता है, तो वह अपराध करता है। उसे 3 साल की कैद या 2 लाख रुपये का जुर्माना या दोनों के साथ दंडित किया जा सकता है।

➢ धारा 66 - किसी अन्य व्यक्ति का पासवर्ड उपयोग करना

यदि कोई व्यक्ति धोखाधड़ी से किसी अन्य व्यक्ति के पासवर्ड, डिजिटल हस्ताक्षर या अन्य विशिष्ट पहचान का उपयोग करता है, तो उसे 3 साल तक की कैद या/ और 1 लाख रुपये के जुर्माना का सामना करना पड़ सकता है।

➢ **धारा 66डी - कंप्यूटर संसाधन का उपयोग करके धोखाधड़ी**

यदि कोई व्यक्ति कंप्यूटर संसाधन या संचार उपकरण का उपयोग करके किसी को धोखा देता है, तो उसे 3 साल तक की कैद या/और 1 लाख रुपये तक का जुर्माना हो सकता है।

➢ **धारा 66ई - दूसरों की निजी तस्वीरें प्रकाशित करना**

यदि कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति की सहमति या जानकारी के बिना उसके निजी अंगों की तस्वीरें प्रसारित या प्रकाशित करता है, तो उस व्यक्ति को 3 साल तक की कैद या 2 लाख रुपये तक का जुर्माना या दोनों हो सकता है।

➢ **धारा 66एफ - साइबर आतंकवाद के कृत्य**

एक व्यक्ति को आजीवन कारावास की सजा हो सकती है। यदि वह राष्ट्र की एकता, अखंडता, सुरक्षा या संप्रभुता को खतरे में डालने के उद्देश्य से किसी अधिकृत व्यक्ति को कंप्यूटर संसाधन तक पहुंच से वंचित करता है या प्राधिकरण के बिना कंप्यूटर संसाधन में प्रवेश/पहुंच का प्रयास करता है।

➢ **धारा 67 - बाल पोर्न प्रकाशित करना या बच्चों को ऑनलाइन शिकार बनाना**

यदि कोई व्यक्ति स्पष्ट यौन कृत्य में किसी बच्चे की तस्वीरें खींचता है, प्रकाशित करता है या प्रसारित करता है या 18 वर्ष से कम उम्र के किसी को भी यौन कृत्य के लिए प्रेरित करता है, तो उस व्यक्ति को 7 साल तक की कैद हो सकती है या 10 लाख रुपये तक का जुर्माना या दोनों हो सकता है।

➢ **धारा 69 - वेबसाइटों को ब्लॉक करने की शक्ति**

यदि सरकार को देश की संप्रभुता और अखंडता के हित में यह आवश्यक लगता है, तो वह उत्पन्न, प्रसारित, प्राप्त या संग्रहीत किसी भी जानकारी को इंटरसेप्ट, मॉनिटर या डिक्रिप्ट कर सकती है। धारा 69ए के तहत केंद्र सरकार किसी भी जानकारी को सार्वजनिक पहुंच से भी रोक सकती है।

➢ **धारा 43ए - कॉरपोरेट स्तर पर डेटा सुरक्षा**

यदि कोई कॉरपोरेट निकाय उचित सुरक्षा प्रथाओं को लागू करने में लापरवाही बरतता है, जिससे किसी व्यक्ति को गलत हानि या लाभ होता है, तो ऐसा कॉरपोरेट निकाय पीड़ित व्यक्ति को हर्जाना देने के लिए उत्तरदायी होगा।

❖ साइबर रेगुलेशन अपीलीय न्यायाधिकरण (प्रक्रिया) नियम, 2000 भी 17 अक्टूबर 2000 को लागू हुआ। ये नियम साइबर रेगुलेशन अपीलीय न्यायाधिकरण (सीआरएटी) की नियुक्ति और कामकाज को निर्धारित करते हैं, जिनकी प्राथमिक भूमिका न्यायनिर्णयन अधिकारियों के आदेशों के खिलाफ अपील सुनना है।

निष्कर्ष

सीमाओं के पार डिजिटल दुनिया की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए साइबर कानून बहुत महत्वपूर्ण है। संक्षेप में कहें तो, यद्यपि एक अपराध मुक्त समाज आदर्श है और केवल कल्पना लोक में ही अस्तित्व में रहता है, फिर भी अपराधियों को न्यूनतम रखने के लिए नियमों का निरंतर अद्यतन होना चाहिए। विशेष रूप से ऐसे समाज में जो प्रौद्योगिकी पर अधिक से अधिक निर्भर है, इलेक्ट्रॉनिक कानून तोड़ने पर आधारित अपराध बढ़ना निश्चित है और कानून बनाने वालों को उन्हें दूर रखने के लिए धोखेबाजों की तुलना में अतिरिक्त प्रयास करना होगा।

प्रौद्योगिकी हमेशा एक दोधारी तलवार होती है और इसका उपयोग दोनों उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है – अच्छा या बुरा। स्टेग्नोग्राफ़ी, ट्रोजन हॉर्स, स्केवेंजिंग (और यहां तक कि डॉस या डीडीओएस) सभी प्रौद्योगिकियां हैं और स्वयं अपराध नहीं हैं, लेकिन अवैध इरादे से गलत हाथों में पड़ना जो उनका शोषण करना या उनका दुरुपयोग करना चाहते हैं, वे साइबर की श्रेणी में आते हैं।

अत: यह सुनिश्चित करने के लिए शासकों और कानून निर्माताओं का दृढ़ प्रयास होना चाहिए कि प्रौद्योगिकी स्वस्थ तरीके से विकसित हो और उसका उपयोग कानूनी और नैतिक व्यावसायिक विकास के लिए किया जाए। यह तीन हितधारकों का कर्तव्य होना चाहिए: i) शासक, नियामक, कानून निर्माता और एजेंट ii) इंटरनेट या नेटवर्क सेवा आपूर्तिकर्ता या बैंक व अन्य मध्यस्थ और iii) उपयोगकर्ताओं को अनुमत सीमाओं के भीतर अपनी-अपनी भूमिका निभाते हुए सूचना सुरक्षा का ध्यान रखना होगा और देश के कानून का पालन सुनिश्चित करना होगा।

देवाशिष कुमार, प्रबंधक, डिजिटल बैंकिंग विभाग, केंद्रीय कार्यालय

डिजिटल बैंकिंग की दुनिया में आइओबी के साथ

परिचय:

आज की भागदौड़ भरी दुनिया में, समय सबसे बड़ा ख़ज़ाना है। बैंक में कतारों में लगना, कागजी कार्रवाई करना और हाथ से फाइनेंस प्रबंधन करना अतीत की कहानी लगती है। अब डिजिटल बैंकिंग का दौर आया है, जो आपके हाथों में आराम, सुरक्षा और दक्षता प्रदान करता है। इण्डियन ओवरसीज़ बैंक (आइओबी) इस क्रांति के मोर्चे पर खड़ा है, आपको डिजिटल टूल्स का एक विशाल समूह प्रदान कर रहा है, जिससे आप आसानी से अपने फाइनेंस को प्रबंधित कर सकते हैं और अपने दैनिक लेन-देन को सुचारू रूप से चला सकते हैं।

इंटरनेट बैंकिंग की शक्ति का अनुभव करें:

आइओबी का इंटरनेट बैंकिंग प्लेटफॉर्म आपकी सभी वित्तीय जरूरतों का एकल विपणन केन्द्र है। आप इसे अपने डेबिट कार्ड का उपयोग करके ऑनलाइन पंजीकरण और सक्रिय कर सकते हैं, जिससे शाखा में आने की आवश्यकता समाप्त हो जाती है। फंड ट्रांसफर और यूटिलिटी भुगतान से लेकर जमा खोलने और प्रबंधन करने तक, इंटरनेट बैंकिंग आपको अपने फाइनेंस पर पूर्ण नियंत्रण प्रदान करता है। टैक्स, 1000 से अधिक व्यापारियों के लिए बिल भुगतान और सुविधाजनक डेबिट कार्ड प्रबंधन सुविधाओं जैसे ब्लॉक करना, अनब्लॉक करना और लिमिट समायोजन के साथ अपने वित्तीय दायित्वों को सरल बनाएं। एनपीएस, एसएसवाई, एसजीबी और पीपीएफ़ जैसी सरकारी योजनाओं के लिए आवेदन करके या अपने जमा पर डिमांड लोन का लाभ उठा सकते हैं । सीधे प्लेटफॉर्म के माध्यम से आईपीओ में निवेश करें और व्यापक रिकॉर्ड रखने के लिए, ई-स्टेटमेंट, जमा/ऋण ब्याज प्रमाणपत्र डाउनलोड करें और यहां तक कि सिंगापुर के लिए विदेशी बहिर्गमन प्रबंधन करें - यह सब आपके घर या कार्यालय के आराम के साथ करें ।

आइओबी मोबाइल ऐप के साथ चलते-फिरते बैंकिंग:

इंटरनेट बैंकिंग की सभी कार्यक्षमताओं - फंड ट्रांसफर, यूटिलिटी भुगतान और यहां तक कि आईपीओ में निवेश करने का आनंद बस कुछ टैप से सकते हैं । अपने क्रेडिट कार्ड बकाए का आसानी से भुगतान करें, आवर्ती भुगतान के लिए स्थायी निर्देश निर्धारित करें और कभी भी, कहीं भी खाता विवरण उत्पन्न करें। क्या आपको एक नए डेबिट कार्ड की आवश्यकता है? सीधे ऐप के माध्यम से आवेदन करें और अपने पुराने कार्ड को बदलें। अपने एटीएम, पीओएस और ई-कॉमर्स लिमिट को प्रबंधित करें और मार्केटप्लेस के माध्यम से ट्रेंडिंग उत्पादों की एक श्रृंखला तक पहुंच के साथ कैश बैक पॉइंट्स की एक दुनिया को अनलॉक करें। तत्काल क्यूआर-सक्षम यूपीआई भुगतान करें और कैशलेस लेन-देन की बेजोड़ सुविधा का अनुभव करें।

भीम आइओबी यूपीआई के साथ यूपीआई क्रांति में शामिल हों:

भीम आइओबी यूपीआई के साथ, पैसे भेजना और प्राप्त करना अब और भी आसान है। अपने डेबिट कार्ड या आधार नंबर का उपयोग करके स्व-पंजीकरण करें और अपना पिन सेट करें और यूपीआई की अंतर-संचालनीयता का लाभ उठाने के लिए किसी भी बैंक खाते को लिंक करें। लंबे खाता नंबर और आइएफ़एससी कोड को अलविदा कहें! किसी भी यूपीआई आईडी, बैंक खाते या आइएफ़एससी कोड पर तुरंत फंड ट्रांसफर करें। "कलेक्ट रिक्वेस्ट" सुविधा का उपयोग करके पैसे का अनुरोध करें, जिससे खाता विवरण की आवश्यकता समाप्त हो जाती है। किसी भी क्यूआर कोड को स्कैन करें और सीधे अपने लिंक्ड बैंक खाते से भुगतान करें। बिल, सब्सक्रिप्शन और अन्य नियमित भुगतान के लिए स्थायी अनुदेश स्थापित करें, जिससे आपकी वित्तीय दिनचर्या सरल हो जाए। बिना पिन दर्ज किए 500 रुपये तक के लेन-देन के लिए यूपीआई लाइट की गति और सुविधा का आनंद लें।

फास्टैग के साथ बिना किसी परेशानी के यात्रा:

आइओबी के फास्टैग समाधान के साथ टोल बूथ को पीछे छोड़ दें। बिना रुके टोल प्लाज़ा के माध्यम से ड्राइव करें, नकदी की आवश्यकता को समाप्त करें और इलेक्ट्रॉनिक भुगतान की दक्षता का आनंद लें। हर लेन-देन के लिए समय पर एसएमएस अलर्ट प्राप्त करें और सुविधाजनक वेब पोर्टल के माध्यम से अपने फास्टैग खातों का प्रबंधन करें। परिवार और दोस्तों के लिए एक वॉलेट के तहत अतिरिक्त टैग प्राप्त करें, यह सुनिश्चित करते हुए कि हर कोई फास्टैग की सहायता से सुगम सवारी का आनंद ले। अपने फास्टैग खाते को ऑनलाइन या ऑफलाइन टॉप अप करें, और आइओबी खाताधारकों के लिए, ऑटो टॉप-अप सुविधा भी है ।

आइओबी पीओएस के साथ व्यवसायों को रूपांतरित करें:

एक व्यवसाय के स्वामी के रूप में, भुगतान स्वीकार करना आसान होना चाहिए, न कि परेशानी। आइओबी पीओएस आपकी सभी भुगतान आवश्यकताओं के लिए एक व्यापक समाधान प्रदान करता है। सभी प्रमुख डेबिट और क्रेडिट कार्ड और शून्य लागत पर यूपीआई क्यूआर भुगतान स्वीकार करता है । 4जी सिम या वाईफाई विकल्पों के साथ सहज कनेक्टिविटी का आनंद लें और सीधे अपने खाते में अगले दिन के ऑटो निपटान से लाभ उठाएं। त्वरित ऑनबोर्डिंग प्राप्त करें और आइओबी की सर्वश्रेष्ठ सेवा का अनुभव करें। पॉकेट-फ्रेंडली किराया और कम लेन-देन शुल्क आइओबी पीओएस को एक किफायती विकल्प बनाते हैं, जबकि तत्काल सक्रियण सुनिश्चित करता है कि आप कुछ ही समय में इस सुविधा का लाभ उठा लें ।

भीम आइओबी यूपीआई-क्यूआर के साथ कैशलेस सुविधा का अनुभव करें:

अपना व्यक्तिगत भीम आइओबी यूपीआई-क्यूआर तुरंत और बिना किसी अतिरिक्त लागत के सृजित कर सकते हैं । नकदी से निपटने के दैनिक बोझ को समाप्त करें और ग्राहक भुगतान का तत्काल क्रेडिट अपने लिंक्ड बैंक खाते में प्राप्त करें। दैनिक लेन-देन के विस्तृत विवरण प्राप्त करें, दिन के अंत में खाता मिलान पर लगने वाले समय की बचत करें। चालू खाते की जमा राशि के लिए शाखा जाने की आवश्यकता नहीं है - आपके ग्राहक किसी भी भीम यूपीआई सक्षम ऐप का उपयोग करके आसानी से आपको भुगतान कर सकते हैं।

आइओबी पे: ऑनलाइन भुगतान संग्रह को सरल बनायें:

चाहे आप एक व्यवसाय के स्वामी हों या एक व्यक्ति, आइओबी पे ऑनलाइन भुगतान संग्रह को सरल बनाता है। व्यापारी, यहां तक कि जिनके पास वेबसाइट नहीं है, किसी भी प्रकार के ग्राहक से उनके पसंदीदा डिजिटल मोड - स्मार्टफोन, कंप्यूटर या टैबलेट का उपयोग करके भुगतान स्वीकार कर सकते हैं। ग्राहकों को स्मार्टफोन, कंप्यूटर या टैबलेट का उपयोग करके उनके पसंदीदा डिजिटल मोड से भुगतान करने की सुविधा दें। प्रति लेन-देन पर प्रतिस्पर्धी शुल्क का आनंद लें, जो आपके पैसे बचाता है और ऑनलाइन भुगतान को व्यापारियों और ग्राहकों दोनों के लिए किफायती बनाता है। आसान ट्रैकिंग और मिलान का आनंद लें - व्यापारी आसानी से ...भुगतान ट्रैक कर सकते हैं और खाते का मिलान कर सकते हैं, जिससे उनके वित्तीय प्रबंधन को सरल बनाया जा सकता है।

शिक्षा को आसान बनाएं आइओबी पे - शिक्षा संस्करण के साथ:

शैक्षणिक संस्थानों के लिए, आइओबी पे शुल्क प्रबंधन को सुव्यवस्थित करने और दक्षता बढ़ाने के लिए एक अनुकूलित समाधान प्रदान करता है।

- स्वचालित प्रणाली: एक सुरक्षित भुगतान गेटवे और विविध भुगतान विधियों के साथ एक सर्व-समावेशी स्वचालित प्रणाली शुल्क संग्रह को सरल बनाती है और प्रशासनिक बोझ को कम करती है।
- आसान ऑनबोर्डिंग: एक परेशानी मुक्त सेटअप प्रक्रिया का आनंद लें,

अपने संस्थान को जल्दी और कुशलता से चालू करें।

- उपयोगकर्ता-अनुकूल शुल्क प्रबंधन: वेब और मोबाइल ऐप-आधारित प्लेटफॉर्म के माध्यम से छात्र शुल्क को आसानी से प्रबंधित करें, जिसे कहीं से भी एक्सेस किया जा सकता है।
- समावेशी मंच: स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों, कोचिंग कक्षाओं और प्लेस्कूल के लिए आदर्श, विभिन्न शैक्षिक परिदृश्यों को पूरा करता है।
- हितधारक कनेक्टिविटी: शिक्षकों, प्रबंधन, कर्मचारियों, माता-पिता और छात्रों को जोड़ता है, संस्थान के भीतर पारदर्शिता और संचार को बढ़ावा देता है।
- अनुकूलन विकल्प: अपने भुगतान पृष्ठ को अपने ब्रांड लोगो के साथ अनुकूलित करें, अपने ऑनलाइन उपस्थिति में एक पेशेवर स्पर्श दें।
- शुल्क प्रबंधन सुविधाएँ: जटिल शुल्क मॉडलों को लचीले किस्त विकल्पों के साथ प्रबंधित करें, ऑनलाइन शुल्क रसीदें जनरेट करें, रिपोर्टिंग और नियंत्रण के लिए भूमिका-आधारित डैशबोर्ड एक्सेस का आनंद लें।

डेबिट कार्ड के साथ सुविधा का आनंद लें:

आइओबी डेबिट कार्ड फायदों की एक दुनिया खोलते हैं, जिससे रोजमर्रा के लेन-देन सुगम होते हैं।

- बढ़ी हुई सीमाएं: 1,00,000 रुपये तक की नकदी निकासी, 3,50,000 रुपये तक का ई-कॉमर्स और 5,00,000 रुपये तक के पीओएस लेन-देन के लिए दैनिक सीमा का आनंद लें, जिससे आपको लचीलापन और वित्तीय शक्ति मिले।
- संपर्क रहित भुगतान: पीओएस टर्मिनलों पर 5,000 रुपये प्रति लेन-देन तक संपर्क रहित भुगतान करें, एक तेज और सुरक्षित अनुभव का आनंद लें।
- 24/7 ग्राहक सहायता: किसी भी समय, कहीं भी विश्वसनीय ग्राहक सहायता प्राप्त करें, जब भी आपको आवश्यकता हो, सहायता सुनिश्चित करें।
- वैश्विक स्वीकृति: भारत और विदेशों में (चयनित कार्ड वेरिएंट और नेटवर्क के लिए) खरीदारी करें और नकदी निकालें, यात्रा के दौरान सुविधा प्रदान करें।
- व्यापारी ऑफ़र और रिवार्ड कार्यक्रम: चुनिंदा कार्ड वेरिएंट के साथ विशेष व्यापारी ऑफ़र और रिवार्ड कार्यक्रमों का आनंद लें, अपने लाभों को अधिकतम करें।
- बीमा कवर और मूल्य वर्धित सेवाएं: चुनिंदा कार्ड वेरिएंट हवाईअड्डे के लाउंज तक निःशुल्क पहुंच, सामान सहायता, और त्वरित आव्रजन, वार्षिक स्वास्थ्य जांच, ओटीटी सदस्यता आदि सहित लाभ प्रदान करते हैं, आपके दैनिक जीवन में मूल्य जोड़ते हैं।

क्रेडिट कार्ड - संभावनाओं को अनलॉक करने की आपकी कुंजी:

आइओबी क्रेडिट कार्ड वित्तीय लचीलेपन और विशेष लाभों की एक दुनिया खोलते हैं:

रिवार्ड कार्यक्रम: आइओबी क्रेडिट कार्ड के हर स्वाइप पर रोमांचक रिवॉर्ड प्वाइंट अर्जित करें, लाभ की एक दुनिया को अनलॉक करें। अपनी पसंद के स्टोर्स पर यात्रा वाउचर, मर्चेंडाइज, इलेक्ट्रॉनिक्स, रोमांचक मूवी टिकट और यहां तक कि शॉपिंग स्प्री के लिए अपने अंक रिडीम करें। कुछ कार्ड डाइनिंग, फ्यूल या ट्रैवल जैसी विशिष्ट श्रेणियों पर त्वरित रिवॉर्ड प्वाइंट देते हैं, आपके रिवॉर्ड को आपकी लाइफस्टाइल के अनुरूप बनाते हैं।

आराम से यात्रा करें: हवाईअड्डे के लाउंज को अपने दूसरे घर में बदलें । चुनिंदा आइओबी क्रेडिट कार्ड के साथ निःशुल्क पहुंच का आनंद लें। यात्रा करते समय प्राथमिकता चेक-इन, सामान सहायता और शीघ्र इमिग्रेशन की सुविधा और आराम का अनुभव करें। कुछ कार्ड यात्रा बीमा और निःशुल्क हवाईअड्डे स्थानांतरण भी प्रदान कर एक तनाव मुक्त यात्रा अनुभव प्रदान करते हैं।

मनोरंजन और लाइफस्टाइल के लाभ: आइओबी क्रेडिट कार्ड मनोरंजन और लाइफस्टाइल की दुनिया में आपको ढेरों ऑफर देता है । मूवी डिस्काउंट, डाइनिंग ऑफर, प्रीमियम जिम सदस्यता तक पहुंच और लोकप्रिय स्ट्रीमिंग सेवाओं की सदस्यता का आनंद लें। अपने आप को और अपने प्रियजनों को यादगार अनुभवों और अपने दैनिक जीवन को समृद्ध बनाएं।

वित्तीय सुरक्षा: व्यापक बीमा कवर के साथ मन की शांति का आनंद लें, जो चुनिंदा आइओबी क्रेडिट कार्ड पर पेश किया जाता है। व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा, खोए हुए कार्ड की देयता, खरीद सुरक्षा और विस्तारित वारंटी लाभ का आनंद लें, अपने और अपने परिवार के लिए मन की शांति प्रदान करें।

वैश्विक स्वीकृति: आत्मविश्वास के साथ वैश्विक स्तर पर जाएं! आइओबी क्रेडिट कार्ड दुनिया भर में व्यापक रूप से स्वीकृत हैं, जिससे आप यात्रा करते समय आसानी से खरीदारी कर सकते हैं और नकदी निकाल सकते हैं। विश्वसनीय वित्तीय संसाधनों तक पहुंच का आनंद लें, चाहे आप कहीं भी घूमें।

आसान प्रबंधन: अपने आइओबी क्रेडिट कार्ड को ऑनलाइन या आइओबी मोबाइल ऐप के माध्यम से आसानी से प्रबंधित करें। अपने खातों का विवरण देखें, अपने खर्च पर नज़र रखें, भुगतान करें और अपने खाते के विवरण को अपडेट करें - ये सब आपकी उंगलियों पर। किसी भी सहायता के लिए 24/7 ग्राहक सहायता लें।

सही कार्ड चुनना: विभिन्न प्रकार के आइओबी क्रेडिट कार्ड उपलब्ध होने के साथ, अपनी पसंद को अपनी अनूठी जरूरतों और जीवनशैली के अनुरूप बनाएं। चाहे आप लगातार यात्रा करते हों,खाने या खरीददारी के शौकीन हों, आपके लिए सही संयोजन को अनलॉक करने के लिए रिवॉर्ड, विशेषाधिकार और वित्तीय सुरक्षा का एक आदर्श संयोजन वाले कार्ड मौजूद है।

निष्कर्ष:

आइओबी के विविध डिजिटल समाधानों के साथ बैंकिंग के भविष्य का अनुभव करें। इंटरनेट बैंकिंग से लेकर मोबाइल ऐप तक यूपीआई भुगतान और फास्टैग तक, आइओबी आपको आपके वित्त का आसानी से, सुरक्षित और कुशलता से प्रबंधन करने के लिए सुविधाजनक और शक्तिशाली उपकरण प्रदान करता है। चाहे आप एक व्यक्तिगत बैंकिंग ग्राहक हैं या एक व्यवसाय के स्वामी, आइओबी के पास आपके दैनिक लेन-देन को सुव्यवस्थित करने और संभावनाओं की एक दुनिया को अनलॉक करने के लिए सही डिजिटल टूल हैं। आज ही आइओबी के डिजिटल बैंकिंग समाधानों को अपनाएं और अपनी वित्तीय दुनिया को सरल, सुरक्षित और सुखद बनाएं! आप निम्नलिखित कदम उठा सकते हैं:

- आइओबी की आधिकारिक वेबसाइट या मोबाइल ऐप पर जाएं: विस्तृत जानकारी प्राप्त करें, विभिन्न समाधानों को ब्राउज़ करें और अपने लिए सही विकल्प चुनें।
- अपने खाते को ऑनलाइन पंजीकृत करें: तेज़ और आसान प्रक्रिया के माध्यम से इंटरनेट बैंकिंग या मोबाइल ऐप तक पहुंच प्राप्त करें।
- अपने डेबिट या क्रेडिट कार्ड के लिए आवेदन करें: कैशलेस लेन-देन का आनंद लें, रिवॉर्ड अर्जित करें और वित्तीय लचीलापन बढ़ाएं।
- यूपीआई के साथ अपने भुगतान को आसान बनाएं: भीम आइओबी यूपीआई के साथ त्वरित, सुरक्षित और आसान फंड ट्रांसफर का आनंद लें।
- फास्टैग के साथ टोल बूथ की परेशानी को खत्म करें: बिना रुके गुजरें और अपने यात्रा अनुभव को सुचारू बनाएं।
- भीम आइओबी यूपीआई-क्यूआर के साथ कैशलेस भुगतान स्वीकार करें: अपने व्यवसाय को एक आधुनिक स्पर्श दें और ग्राहकों को सुविधाजनक भुगतान विकल्प प्रदान करें।
- आइओबी पे के साथ ऑनलाइन भुगतान संग्रह का लाभ उठाएं: सुरक्षित और कुशल तरीके से शुल्क, सदस्यता और अन्य भुगतान प्राप्त करें।

आइओबी के साथ, बैंकिंग अब आपकी उंगलियों पर है! आज ही कदम उठाएं और भविष्य का अनुभव करें जहां वित्तीय प्रबंधन सरल, स्मार्ट और सुरक्षित है।

रजनी बाला, प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़

भाषा में अनुवाद की प्रासंगिकता

भाषा परंपरागत और अर्जित संपत्ति है। जिस प्रकार मनुष्य पारम्परिक विचार-विनिमय से लाभान्वित होता है। उसी प्रकार भाषा का विकास भी आदान-प्रदान से होता है। अर्जन की प्रकृति के कारण भाषा का विकास और परिष्कार होता है। आज बहुभाषिकता की दुनिया में अनुवाद कार्य दो भिन्न भाषा भाषियों के बीच सेतु के समान है। आज ज्यों-ज्यों संसार के विभिन्न भागों के लोग एक दूसरे के निकट आ रहे हैं तथा भाषाओं एवं राजनीति की सीमाओं को भुलकर एक दूसरे को समझने, जानने का प्रयत्न कर रहे हैं त्यों-त्यों अनुवाद की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। भाषा परिवर्तनशील है और यह परिवर्तन कई कारणों से होता है फलत: भाषा में नये शब्दों का निमार्ण भी होता है नए शब्द या तो उसी भाषा के आधार पर या दूसरी भाषा से अनुदित होकर प्रयोग में लाए जाते हैं। इस परिवर्तन से भाषा की अभिव्यंजना शक्ति, माधुर्य तथा ओज की दृष्टि से उँची उठ सकती है या नीचे भी जा सकती है। अनुवाद (Translation) शब्द संस्कृत का है जिसके मूल में 'वद्' धातु है। 'वद' शब्द में, बाद में अनुवर्तिता आदि अर्थो में प्रयुक्त होने वाले 'अनु' उपसर्ग लगने से 'अनुवाद' शब्द बना । अनुवाद का मूल अर्थ है "किसी के कहने के पश्चात कहना" अथवा पुन: कथन । कोश के अनुसार अनुवाद का अर्थ है-- " पहले कहे गये अर्थ को फिर से कहना ।" अंग्रेजी में अनुवाद के लिए Translation शब्द का प्रयोग होता है। 'Translation' शब्द लैटिन शब्द 'Trans'(पार) तथा 'Lation '(ले जाना) शब्दों के योग से बना है। जिसका अर्थ एक भाषा के पार दूसरी भाषा में ले जाना। या एक भाषा से दूसरी भाषा में बदलना।

जब से पश्चिमी देशों से परिचय हुआ है वैश्वीकरण के युग में अनुवाद की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण हो गयी है । सभी देशों की भाषा जनसामान्य तक पहुंचाने का एक ही माध्यम है- अनुवाद । ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति होने से आज विश्व सिमट कर छोटा होता जा रहा है। यातायात और संचार के साधनों में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है जिसके फलस्वरूप हम भौगोलिक सीमाओं को पार कर बड़े-बड़े और दूर-दूर के देशों से संबंध जोड़ रहें हैं। इसके फलस्वरूप हमारे ज्ञान का विस्तार होता जा रहा है। कई भाषा-भाषी लोगों और समुदायों के साथ हम जुड़ते जा रहे हैं। जिससे हमें 'विश्वबंधुत्व' की भावना को विकसित करने में सहायता प्राप्त हो रही है । प्राचीन भारत में गुरु की बातों को सुनकर शिष्य उसे दोहराते थे। यही अनुवाद की प्रारंभिक परंम्परा थी ।

भाषा और साहित्य के विकास में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और भाषा तथा साहित्य संस्कृति की अभिव्यक्ति के प्रमुख माध्यम होते हैं। अतः हम कह सकते है कि भाषा संस्कृति के विकास का एक बड़ा माध्यम है। साहित्य की यात्रा का यह चक्र निरंतर चलता रहता है जिससे संस्कृति और सभ्यता के विकास में गति मिलती रहती है।

अनुवाद की प्रक्रिया में दो भाषाओं की अनिवार्यता है। दूसरा भावों और विचारों में समानता हो और यह समानता स्त्रोत भाषा के समतुल्य लक्ष्य भाषा में उपलब्ध होने पर ही हो सकती है। मनुष्य एक बुद्धिजीवी प्राणी है। वह अपने परिवेश के अतिरिक्त और भी बहुत कुछ जानने की कोशिश करता है। इसलिए वह अपने परिचित समाज से निकलकर अपरिचित समाज में जाकर वहाँ की भाषा-बोली, रहन-सहन, आचार-विचार, रीति-रिवाज, खान-पान आदि कई चीजों को जानना, समझना और सीखना चाहता है। यही प्रयास उसकी जिज्ञासा शक्ति को प्रेरित करते हैं और इसका शुभारंभ भाषा, बोली से ही होता है। सत्य कहा गया है कि– "चार कोस में पानी बदले आठ कोष पर वाणी।" इसके आधार पर हम कह सकते हैं कि दूसरे की भाषा और बोली को जानने के लिए हमें अनुवाद का सहारा लेना ही पड़ता है। अनुवाद के द्वारा हम विश्व की सभी भाषा ओं को जान सकते हैं।

हिन्दी में अनुवाद का प्रारंभ संस्कृत के प्राचीन साहित्य से होता है। इसके बाद बौद्ध, जैन और इस्लामी ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद हुआ, लेकिन श्रीमद्भागवत को मुंशी सदासुख लाल कृत 'सुखसागर' खूब लोकप्रिय अनुवाद माना जाता है। उसी प्रकार लल्लूजीलाल का 'प्रेमसागर' खड़ी बोली में प्रचलित अनुवाद है। अंग्रेजी शासन काल में पश्चिमी साहित्य का हिन्दी अनुवाद भी काफी लोगों को पसंद आया। इसके अलावा अनेक संस्कृत काव्य नाटक हिन्दी में अनुदित हुए। आजादी के बाद हर क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने, अपना स्थान सुरक्षित करने और राष्ट्र विस्तार के लिए हिन्दी अनुवादों का सहारा लिया गया। पहले ये हिन्दी को आधार भाषा बनाने लगे। उससे लेकर भारत की अन्य सभी भाषाओं में अनुवाद होने लगा। शुरुआत में अंग्रेजी का सहारा लिया जाता था। पर देखा गया कि भारतीय भाषाओं में हिन्दी ही सहज भाषा है। आगे चलकर अन्य भारतीय भाषाओं में भी अनुवाद होने लगा। आज हिन्दी अनुवाद की गौरवशाली स्थिति बन गई है। अर्थात अनुवाद ने हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाया है और भारतीय साहित्य की समृद्धि का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

भाषा, साहित्य और संस्कृति के विकास में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भाषा, साहित्य तथा संस्कृति अभिव्यक्ति के प्रमुख माध्यम हैं। भाषा संस्कृति के विकास का एक बड़ा माध्यम है। साहित्य की यात्रा का यह चक्र निरंतर चलता रहता है तथा संस्कृति और सभ्यता के विकास में गति प्रदान करता है। साहित्य के द्वारा सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताओं की अभिव्यक्ति होती है और सामाजिक तथा सांस्कृतिक मानकों की स्थापना भी होती है। भाषा ही मानव चेतना की अभिव्यक्ति का माध्यम है। संस्कृति के साथ भाषा का संश्लिष्ट संबंध है, क्योंकि भाषा मनोभावों की अभिव्यक्ति होने के कारण संस्कृति का अंग होती है और उसे वह निरुपित भी करती है। अतः भाषा और साहित्य के विकास से ही संस्कृति का विकास होता है। भाषा दोनों संस्कृतियों के बीच सामंजस्य स्थापित करने में सहायता प्रदान करती है। दो विभिन्न समाजों के द्वारा बोली जाने वाली भाषाएँ एक दूसरे को इस प्रकार प्रभावित करती हैं।

अनुवाद की समस्याएँ तथा समाधान

एक भाषा में अभिव्यक्त विषयों, भावनाओं तथा संवेदनाओं को जहाँ तक संभव हो उसी की प्रयुक्त भाषा-शैली में दूसरी भाषा में रूपांतरित करना अनुवाद कहलाता है। मगर यह कार्य जितना सरल दिखाई देता है उतना है नहीं । स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद जी ने भी कहा है- "एक प्रकार से मौलिक लेख लिखना आसान है, पर किसी दूसरी भाषा से अनुवाद करना बहुत कठिन होता है। मेरा निजी अनुभव है कि मैं अंग्रेजी से हिन्दी में और हिन्दी से उतनी आसानी से अनुवाद नहीं कर सकता, जितनी आसानी से इन दोनों भाषाओं में लिख या बोल सकता हूँ।" क्योंकि दो अलग-अलग भाषाओं की अपनी-अपनी प्रकृति होती है। अपनी शब्द-संपदा होती है। अपनी विशिष्ट भाषिक संरचना, शैली-भंगिमा होती है।

- शब्द प्रयोग की समस्या:- कभी-कभी एक ही भाषाओं के दो शब्द मिल जाते है जिसका अर्थ अलग-अलग होता है। जैसे-मराठी में 'नवरा' का अर्थ पति है जबकि गुजराती में निठल्ले को 'नवरा' कहते है।
- मुहावरे-कहावतों की समस्या:- यद्यपि मुहावरे और कहावते मनुष्य के जीवन के अनुभावों को संक्षिप्ति, प्रभावशाली रूप में अभिव्यक्त करने का साधन रही है। परन्तु हर मुहावरे या कहावत एक-सी नहीं हो सकती ।
- अलंकार की समस्या:- एक भाषा के अलंकार उस भाषा के शब्द को सौन्दर्य प्रदान करते है। "कनक-कनक" में यमक अलंकार दुहरे अर्थ में प्रयोग अनुवाद के लिए एक गंभीर समस्या बन जाती है।
- शैली की समस्या:- हर भाषा की अपनी शैली होती है। परन्तु अगर एक भाषा में उपलब्ध शैली विशेषताएँ दूसरी में न मिले तो अनुवाद करने में परेशानी होती है। जैसे, हिन्दी की तीन शैलियाँ संस्कृत-निष्ठ हिदी, हिन्दुस्तानी और बातचीत।

समाधान :

- भाषा का ज्ञान:- अनुवादक की सर्वप्रथम आवश्यकता भाषाओं का समुचित ज्ञान होता है क्योंकि उसके सामने दो अलग-अलग भाषाओं की प्रकृति,प्रवृति,संस्कृति, अभिव्यक्ति शक्ति आदि बातों से वाकिफ होना चाहिए, जिससे भाषा की वाक्य-रचना, शब्दों की चयन-प्रक्रिया, अभिव्यक्ति की सक्षम परख और वाक्य-विन्यास एवं शैलियों पर सांस्कृतिक प्रभाव का गहन अध्ययन हो ताकि अपने दायित्वों को अच्छी तरह निभा सके।
- **विषय का ज्ञान:-** अनुवादक को अनुवाद सामग्री के विषय का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। अगर उसे विषय का अच्छी तरह ज्ञान नही होगा तो वह मूल रचना के साथ सही न्याय नहीं कर पायेगा।
- **अभिव्यक्तिगत तटस्थता:-** उत्तम अनुवाद अनुवादक के रूचि के साथ उसकी योग्यता, विषय-वस्तु की समझ, भाषाओं की निपुणता आदि बातों पर बहुत कुछ निर्भर करता है। अच्छे और सफल अनुवाद की पहचान यही कि पाठक को पढ़ते समय ऐसा न महसूस हो कि वह अनुवाद पढ़ रहा है । उसमें अपने से कुछ न जोड़कर तटस्थता का ध्यान रखना चाहिए। जैसे- अंग्रेजी का वाक्य - To give blank cheque, हिन्दी अनुवाद 'कोरा चेक देना यह गलत है बल्कि 'खुली छूट देना' आदि ।
- **सांस्कृतिक शब्दों का चयन :** अनुवाद में सांस्कृतिक शब्दों का चयन भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। अंग्रेजी शब्द प्रोसेशन के सांस्कृतिक और सामाजिक अनेक अर्थ हैं। प्रोसेशन अधिकांशत: राजनीतिक पृष्ठभूमि में अत्यधिक होता है । राजनीतिक संदर्भ में पप्रोसेशन का अर्थ प्राय: जुलूस या प्रदर्शन माना जाता है। लेकिन मैरिज प्रोसेशन में प्रोसेशन के लिए 'बारात' शब्द अधिक सटीक है।
- **लिप्यंतरण :** अनुवाद में लिप्यंतरण का भी विशेष महत्व है और अनुवादक को लिप्यंतरण पद्धति को अपनाना चाहिए। लिप्यंतरण का वैज्ञानिक अनुवाद में विशेष महत्व है। जो लोग वैज्ञानिक प्रक्रिया से जुड़े हुए हैं वे अनुवाद के धरातल पर अग्रेंजी और हिन्दी की विज्ञानपरक अनुवाद स्थिति से भली भांति परिचित होगें । जिस गति से अंग्रेजी में विज्ञान लेखन हो रहा है उस गति से वैज्ञानिक अनुवाद नहीं । अत: अनुवाद में किसी भाषा के क्लिष्ट शब्द को अपनाने के स्थान पर मूल भाषा के शब्दों में ही लिप्यंतरित करने की जरूरत होती है जिससे पाठक के मन में शब्दों को लेकर भ्रम की स्थिति न उत्पन्न हो । उदाहरण के लिए-इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन । इन शब्दों को यदि हिन्दी के शब्दों में रूपांतरित किया जाए तो भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

सारांश - भारत बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक राष्ट्र है। यह बहुभाषिकता शक्ति के रूप में भारत की अपनी पहचान है। अतः अनुवाद की सृजनात्मक भूमिका का महत्व तो है ही, साथ ही इसकी प्रासंगिकता को भी नकारा नहीं जा सकता है। पहले अनुवाद एक सीमित दायरे तक ही व्याप्त था। यह केवल पौराणिक, धार्मिक और साहित्यिक क्षेत्र तक ही सीमित था किन्तु आधुनिक युग में इसका क्षेत्र अत्यंत व्यापक हो गया है। भूमंडलीकरण और उदारीकरण से इसने अपनी सीमाओं को पार कर विभिन्न कार्य क्षेत्रों में अपना महत्व बना लिया है। इसी कारण उसकी प्रासंगिकता और बढ़ गई है। चिकित्सा, वाणिज्य- व्यापार, विज्ञान, प्रौधोगिकी आदि कई क्षेत्रों और विषयों पर जो अनुसंधान और शोध के कार्य हो रहें हैं, उनमे अनुवाद भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारतीय साहित्य और भाषाओं में परस्पर अनुवाद से भारत की सही तस्वीर मिल जाती है। जनसंचार के क्षेत्र रेडियो, दूरदर्शन आदि में हम जो कुछ भी देखते या सुनते हैं उसमे अनुवाद की विशेष भूमिका है । जिस विषय का कार्य क्षेत्र विश्व की एकता का विकास हो, जिसमे राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने की शक्ति हो और जिसमे विभिन्न समुदायों के लोगों को समझने तथा उनमे सद्भावना लाने का सामर्थ्य हो उस विषय को दूसरे नंबर के विषय का दर्ज़ा देना उचित नहीं होगा । अत: आज के युग के मांग की उपज 'अनुवाद' है। संसार का समग्र ज्ञान पाने के लिए जीवन सीमित है और यह समग्र ज्ञान-विज्ञान किसी एक भाषा में समाहित नहीं है। ऐसी स्थिति में अनुवाद का अपना विशेष महत्व है जिसकी कल्पना भाषा के बगैर नहीं की जा सकती।

फणीष मणि त्रिपाठी, प्रबन्धक, केन्द्रीय कार्यालय

फिशिंग- चुनौतियाँ और समाधान

प्रिय ग्राहक,

"सुरक्षा कारणों से आपका बैंक खाता निष्क्रिय किया जा रहा है। अब आप अपने बैंक खाते से लेन-देन नहीं कर सकेंगे। अपना खाता सक्रिय रखने के लिए नीचे दिए लिंक पर तुरंत क्लिक करें।"

सादर, शाखा प्रबन्धक

फिशिंग की दुनिया में आपका स्वागत है! कभी बड़ी धनराशि जीतने का लालच तो कभी बैंक खाता बंद करने का जाल बिछाकर आपको वेबकूफ बनाया जाता है। ठीक मछली मारने वाले की तरह जो रस्सी के आखिरी सिरे में भोजन फंसाकर, पानी में डालकर, धैर्य के साथ बैठ जाता है। जिस मछली ने लालच दिखाई वो उसका शिकार बन जाती है। साइबर दुनिया में भी इसी तर्ज पर धोखाधड़ी की जाती है जिसे फिशिंग कहते हैं। भय, भरोसा और लालच भरे ईमेल और मोबाइल संदेश बड़ी ही चालाकी से तैयार किए जाते हैं। एक ही संदेश में समस्या और समाधान इस तरह परोसा जाता है कि आप शहद की ललचाई मक्खी की तरह उसमें फँस जाते हैं।

ईमेल का विषय इतना आकर्षक और ध्यान खींचने वाला होता है कि आप उसे नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते। ईमेल का डोमेन नेम बड़ी कंपनी के ईमेल से बिल्कुल मेल खाता दिखाई देगा, जैसे- ....@microsoft.com की जगह ....@rnicrosoft.com लिखा होगा। ईमेल में असली कंपनी का लोगो डाल दिया जाता है ताकि शक नहीं हो। ऐसे संदेशों के जरिए आपसे आपके क्रेडिट कार्ड, बैंक खाता या अन्य संवेदनशील सूचनाएँ प्राप्त की जाती हैं या आपकी निजी सूचनाएँ लेकर आपकी पहचान चुरा ली जाती है।

ईमेल, वॉयस फिशिंग और एसएमएस के जरिए फिशिंग करने के अलावा कई बार संगठनों आदि को फिशिंग के जरिए रैनसमवेयर भेजे जाते हैं। इसके तहत एक ऐसा मालवेयर भेजा जाता है जिससे आपकी गोपनीय फाइलों और डाटा को एनक्रिप्ट कर लिया जाता है और उन्हें डिकोड करने के बदले आपसे मुँहमाँगी कीमत मांगी जाती है।

फिशिंग का एक खतरनाक स्वरूप स्पीयर फिशिंग भी है। इसमें ऐसे लोगों को शिकार बनाने की कोशिश की जाती है जो पैसे वाले होते हैं या बड़े अधिकारी होते हैं और महत्वपूर्ण गोपनीय या संवेदनशील सूचनाओं के अभिरक्षक होते हैं। धोखाधड़ी करने वाला पहले सोशल मीडिया पर मौजूद ऐसे लोगों के दोस्तों, प्रियजनों से सम्बन्धित जानकरियां जुटाता है ताकि वो नजदीकी मित्र या सम्बन्धी बन कर उन तक पहुंच सके। फिर इन्हें झांसा देकर कंपनी के ट्रेड सीक्रेट्स, ग्राहकों का डाटा, वित्तीय सूचनाएं आदि चुराने की कोशिश की जाती है।

कभी-कभी साइबर अपराधी कंपनी का सीईओ बनकर फंड ट्रांसफर करने तक का हुक्म दे डालते हैं। इस प्रकार की फिशिंग को व्हेलिंग कहा जाता है। फिशिंग के जरिए आपकी निजी गोपनीय सूचनाएँ हासिल करके आपको ब्लैकमेल किया जा सकता है। इसे डॉक्सिंग कहते हैं जो फिशिंग के दुष्परिणाम के रूप में सामने आ सकता है।

फिशिंग को लेकर चुनौतियाँ

क) बढ़ते मामले- इंटरनेट उपयोगकर्ताओं के लिए फिशिंग एक बड़ी चुनौती है क्योंकि फिशिंग हमले करने वाले चोर नहीं बल्कि शुभचिंतक बनकर आते हैं और लूटकर चले जाते हैं। एक आंकड़े के अनुसार भारत में तीस करोड़ लोग फिशिंग के खतरे के दायरे में रहते हैं। इनमें से 5 लाख लोग फिशिंग का शिकार हो जाते हैं और इनमें से फिशिंग हमले की रिपोर्ट करने वालों का प्रतिशत बेहद कम है। टाइम्स ऑफ इंडिया की एक रिपोर्ट के अनुसार अप्रैल 2020 से मार्च 2023 के दरम्यान फिशिंग व विशिंग की 9 लाख से अधिक घटनाएं हुई हैं। इस अवधि के दौरान फिशिंग के जाल में फँसकर ग्राहकों ने अपने 1500 करोड़ रुपए गंवा दिए हैं। फिशिंग के जरिए धोखाधड़ी करके लाखों, करोड़ों की कमाई हो रही है इसलिए साइबर अपराध की दुनिया में इसका बोलबाला है और मामले दिन-ब-दिन बढ़ते जा रहे हैं। नई पीढ़ी का डिजिटल बैंकिंग के प्रति अधिक रूझान है लेकिन जानकारी और सजगता के अभाव में ये साइबर अपराधियों के शिकंजे में भी आसानी से आ जाती है।

ख) बदलता रूप-तमाम एहतियातों के बावजूद हैकर और धोखाधड़ी करने वाले नए-नए तरीकों से फिशिंग को अंजाम दे रहे हैं। फर्जी ईमेल, वेबसाइट और लिंक को ऐसे पेश किया जाता है कि असली-नकली में फर्क कर पाना मुश्किल होता है। माइक्रोसॉफ्ट, आरबीआई, आयकर विभाग, बिजली विभाग, आईसीसी विश्व कप, गूगल इत्यादि के नाम पर लोगों पर अनगिनत फिशिंग हमले किए गए हैं। फिशिंग के तरीकों की लंबी लिस्ट है। ईमेल फिशिंग के बारे में जब तक लोगों को आगाह किया जाता है तब तक अन्य प्रकार के फिशिंग के तरीके और रूप आ जाते हैं, जैसे- स्मिशिंग और विशिंग (मोबाइल संदेशों या फोन कॉल के जरिए ठगी), एंगलर फिशिंग (नकली यूआरएल, क्लोन्ड वेबसाइट, सोशल मीडिया पोस्ट्स और ट्वीट्स के जरिए ठगी), व्हेलिंग, क्लोन फिशिंग, पेज हाईजैकिंग इत्यादि।

ग) जागरूकता की कमी- फिशिंग को लेकर बैंकों, भारतीय रिज़र्व बैंक और अन्य विनियामकों की ओर से समय-समय पर लोगों को जागरूक करने की कोशिश की जाती है। संदिग्ध ईमेल और अचैटमेंट नहीं खोलने की चेतावनियां दी जाती हैं। संगठन और कंपनियां स्पैम फिल्टरिंग, बल्क ईमेल कंट्रोल इत्यादि के माध्यम से अपने कर्मचारियों को फिशिंग से सुरक्षित रखने की कोशिश करती अलग-अलग प्लैटफॉर्म्स से पासवर्ड और संवेदनशील सूचनाएं किसी को भी नहीं देने की हियादतें दी जाती हैं। इंटरनेट बैंकिंग व अन्य पासवर्ड्स को मजबूत रखने की सलाह भी दी जाती है लेकिन अक्सर लोग चूक कर बैठते हैं। हैं। यही वजह है कि जागरूकता कार्यक्रमों और पहलों को हमें जारी

रखना होगा। बड़े शहरों में तो जागरूकता है लेकिन टीयर-2 और टीयर-3 शहरों और छोटे गावों-कस्बों तक फिशिंग के बारे में जागरूकता की अब भी कमी है।

घ) फिशिंग के मामलों में कारवाई में सुस्ती - लोकल सर्किल नाम की एक संस्था के सर्वे के अनुसार वित्तीय धोखाधड़ी के शिकार 100 लोगों में से सिर्फ 17 लोगों को ही अपना पैसा मिल पाता है। जबकि बाकी लोगों को कोई समाधान नहीं मिलता है। मामले की रिपोर्ट मिलने के बाद अंतिम रूप से समाधान मिलने में लंबा वक्त लग जाता है। अब भी बड़ी संख्या ऐसे लोगों की है जो फिशिंग का शिकार होने पर भी शर्मिंदगी के डर से उसकी रिपोर्ट नहीं करते।

फिशिंग का समाधान :

1) सजगता और जागरूकता - किसी भी समस्या और चुनौती के समाधान का सबसे कारगर उपाय यही है कि उसके बारे में अधिक से अधिक लोगों में जागरूकता फैलायी जाए। लोगों को ये बताया जाए कि फिशिंग के हमले किन-किन रूपों में किए जा सकते हैं, उनकी पहचान कैसे की जा सकती है। अनजान लोगों से प्राप्त ईमेल, मोबाइल संदेशों, फर्जी लिंक्स से सावधान रहने की आवश्यकता है। पुष्ट स्रोतों से पुष्टि के बाद ही ईमेल या अन्य संदेशों पर आगे कार्रवाई करनी चाहिए। अपना पासवर्ड मजबूत रखें और इसे किसी के साथ भी नहीं साझा करें। फिशिंग के हमले का शिकार होने पर उसकी तुरंत रिपोर्ट करने के साथ-साथ और क्या उपाय उपलब्ध हैं इसके बारे में भी लोगों को बताया जाना चाहिए।

2) मजबूत रक्षा प्रणाली की ज़रूरत - संस्थान या संगठन स्तर पर कर्मचारियों को नियमित रूप से फिशिंग के नए ट्रेंड्स को लेकर सूचनाएं प्रसारित की जानी चाहिए। समय-समय पर क्विज़ या साइबर सिक्योरिटी जागरूकता को लेकर कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए। स्पैम फिल्टर्स, वेब फिल्टर्स, ईमेल सिक्योरिटी, एंटी-वायरस व एंटी-मालवेयर सॉफ्टवेयर और मल्टी फैक्टर प्रामाणिकरण जैसे सुरक्षा उपायों को अपनाया जा सकता है।

3) साइबर हमलों की रिपोर्टिंग – वर्ष 2020 से पहले भारत में साइबर हमलों की रिपोर्टिंग के लिए कोई विशेष व्यवस्था नहीं थी। लेकिन जनवरी 2020 में गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने एक राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल देश को सौंपा जिसमें नागरिक साइबर अपराध से जुड़ी किसी भी घटना को रिपोर्ट कर सकते हैं। साइबर अपराध हेल्पलाइन 1930 पर भी साइबर अपराध की रिपोर्टिंग या शिकायत की जा सकती है।

4) फिशिंग शिकायतों के समाधान के लिए व्यवस्था : बैंक स्तर पर फिशिंग या अन्य साइबर हमलों के समाधान की प्रक्रिया या रिपोर्टिंग को लेकर समय-समय पर स्टाफ प्रशिक्षण आयोजित किया जाना चाहिए। स्पष्ट एस्केलेशन मैट्रिक्स होना चाहिए ताकि समाधान प्रक्रिया से जुड़े स्टाफ सदस्यों को ये पता रहे कि एक स्तर पर समाधान या कार्रवाई में देरी होने पर उन्हें कहां शिकायत करनी है। समाधान प्रक्रिया ऐसी होनी चाहिए जो पैनिक बटन की तरह काम करे। ग्राहक से शिकायत मिलते ही यदि उस पर फौरन कार्रवाई करके बैंकिंग सिस्टम से खोया पैसा वापस आ सकता है तो इसकी पुरज़ोर कोशिश करनी चाहिए। शिकायत पर त्वरित कार्रवाई धोखाधड़ी को सफल होने से रोक सकती है।

5) सख्त कानून की आवश्यकता - अभी साइबर अपराधों पर कार्रवाई और सजा के लिए भारतीय दंड संहिता यानि आईपीसी, 1980 और सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000 के तहत प्रावधान उपलब्ध हैं। आईपीसी में साइबर अपराध को धोखाधड़ी की श्रेणी में ही रखा गया है जिसके लिए कठोर सजा नहीं है। आईटी एक्ट में भी अधिकतम 5 लाख रुपए जुर्माना या तीन साल की सजा अथवा सजा व जुर्माना दोनों का प्रावधान है। हालांकि साइबर अपराध का दायरा और उसकी तीव्रता हर दिन बढ़ती जा रही है। करोड़ों, अरबों की रकम दांव पर लगी होती है। इसे देखते हुए एक सख्त साइबर कानून की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

फिशिंग से बचने के लिए सावधानियाँ

i) पब्लिक वाई-फाई का इस्तेमाल करने से बचें

ii) मजबूत पासवर्ड रखें। अलग-अलग खातों के लिए भिन्न पासवर्ड रखें

iii) नियमित रूप से पासवर्ड बदलते रहें

iv) एंटी वायरस को अपडेट रखें

v) बहु-स्तर प्रमाणीकरण का उपयोग करें

vi) सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर अपने अकाउंट तक पहुंच को सीमित रखें

vii) एप्प को विभिन्न अनुमतियाँ देते हुए सावधान रहें

viii) निजी और कार्यालयी उद्देश्यों के लिए ईमेल अकाउंट अलग-अलग रखें

निष्कर्ष:

हमारे बैंक के विजन और मिशन स्टेटमेंट के केंद्र में ग्राहक और उनकी संतुष्टि है जो आज के युग में काफी हद तक साइबर सुरक्षा पर निर्भर करती है।

विजन स्टेटमेंट

"नीति और गवर्नेंस के उच्चस्थ मानकों को स्थापित करते हुए पीढ़ियों को जोड़ने वाले प्राथमिक बैंक के रूप में उभरना।"

मिशन स्टेटमेंट

"ग्राहकों की संतुष्टि के लिए उन्हें कुशल मैनपावर के साथ फिजिकल व डिजिटल अनुभव के जरिए सर्वोत्कृष्ट बैंकिंग समाधान उपलब्ध कराना। "

संक्षेप में कहें तो हम अपने ग्राहकों को गुणवत्तायुक्त बैंकिंग समाधान देना चाहते हैं ताकि हम उनके साथ अटूट रिश्ता बना सकें। इस लक्ष्य की पूर्ति तभी संभव है जब हम अपने ग्राहकों का पैसा सुरक्षित रखें और उसमें कई गुणा वृद्धि कर सकें। इसके लिए बैंक के सुरक्षा चक्र को मजबूत करने के साथ प्रत्येक स्टाफ सदस्य को ग्राहकों के प्रति जिम्मेदार बनना होगा और ग्राहकों को भी फिशिंग जैसे साइबर हमलों से बचने में सक्षम बनाना होगा।

फिशिंग की फाँस में फँसते वही हैं
जो जागरूक, सजग और चौकन्ने नहीं हैं

श्रीकुमारी वी, प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय तिरुवनंतपुरम

हिंदी : एक समुन्नत भारतीय भाषा

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज का निर्माण मनुष्यों के पारस्परिक सहयोग से होता है। समाज में रहते हुए मानव आपस में अपनी इच्छाओं तथा विचारों का आदान-प्रदान करता है। विचारों को व्यक्त करने के लिए उसे भाषा की आवश्यकता होती है। भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर, सुनकर, लिखकर व पढ़कर अपने मन के भावों या विचारों का आदान-प्रदान करता है। भाषा केवल ध्वनि से व्यक्त नहीं होती। संकेत तथा हाव-भावों से भी व्यक्त होती है जैसे बोलते समय चेहरे की आकृति में परिवर्तन होना, हाथ तथा उँगलियाँ हिलाना आदि। भाषा और संस्कृति के अनुसार हाव-भावों और इशारों के अर्थ में अंतर आ जाता है।

हिंदी भाषा का विकास

संविधान को 26 जनवरी 1950 को अपनाया गया था और इसमें कहा गया था कि अनुच्छेद 343(1) के अनुसार भारतीय संघ की राजभाषा हिंदी एवं लिपि देवनागरी है। संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय स्वरूप (अर्थात 1, 2, 3 आदि) है। किंतु इसके साथ संविधान में यह भी व्यवस्था की गई कि संघ के कार्यकारी, न्यायिक और वैधानिक प्रयोजनों के लिए 1965 तक अंग्रेज़ी का प्रयोग जारी रहेगा । तथापि यह प्रावधान किया गया था कि उक्त अवधि के दौरान भी राष्ट्रपति कतिपय विशिष्ट प्रयोजनों के लिए हिंदी के प्रयोग का प्राधिकार दे सकते हैं। नतीजतन, दक्षिणी राज्यों से इसका कड़ा विरोध हुआ, जहां द्रविड़ भाषाएँ बोली जाती थीं । कानून में अंग्रेजी का उपयोग जारी रखने को प्राथमिकता दी गई, जो अधिक स्वीकार्य थी। अनुच्छेद 351, जो हिंदी भाषा के विकास के लिए एक निर्देशात्मक आदेश है, उसके अनुसार सरकार को भारत की समग्र संस्कृति को व्यक्त करने के माध्यम के रूप में काम करने के लिए हिंदी के प्रसार को बढ़ावा देना होगा।

केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित करने हेतु भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा उठाए गए कदमों के परिणामस्वरूप कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करना अधिक आसान एवं सुविधाजनक हो गया है। इसी क्रम में राजभाषा विभाग द्वारा वेब आधारित सूचना प्रबंधन प्रणाली विकसित की गई है जिससे भारत सरकार के सभी कार्यालयों में हिंदी के उत्तरोत्तर प्रयोग से संबंधित तिमाही प्रगति रिपोर्ट तथा अन्य रिपोर्टें राजभाषा विभाग को त्वरित गति से भेजना आसान हो गया है। सभी मंत्रालयों और विभागों ने अपनी वेबसाइटें हिंदी में भी तैयार कर ली हैं। सरकार के विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों द्वारा संचालित जन कल्याण की विभिन्न योजनाओं की जानकारी आम नागरिकों को हिन्दी में मिलने से गरीब, पिछड़े और कमजोर वर्ग के लोग भी लाभान्वित होते हुए देश की मुख्यधारा से जुड़ रहे हैं।

राजभाषा हिंदी

राजभाषा हिंदी के विकास के लिए खासतौर से राजभाषा विभाग का गठन किया गया है। भारत सरकार का राजभाषा विभाग इस दिशा में प्रयासरत है कि केंद्र सरकार के अधीन कार्यालयों में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में हो। इसी कड़ी में राजभाषा विभाग द्वारा प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया जाता है। 14 सितंबर, 1949 का दिन स्वतंत्र भारत के इतिहास में बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसी दिन संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इस निर्णय को महत्व देने के लिए और हिन्दी के उपयोग को प्रचलित करने के लिए साल 1953 के उपरांत हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है।

राजभाषा विभाग द्वारा सी डैक के सहयोग से तैयार किया गया लर्निंग इंडियन लैंग्वेज विद आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (लीला) एक मोबाइल ऐप है । इस ऐप से देश भर में विभिन्न भाषाओं के माध्यम से जन सामान्य को हिंदी सीखने में सुविधा और सरलता होगी तथा हिंदी भाषा को समझना, सीखना तथा कार्य करना संभव हो सका । पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने इसके लिए राजभाषा विभाग के योगदान की सराहना करते हुए कहा था, "लीला मोबाइल ऐप' के जरिये हिंदी सीखने की ऑनलाइन सुविधा लोगों तक पहुँचाने के लिए मैं राजभाषा विभाग की प्रशंसा करता हूँ।"

राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी

भाषा राष्ट्र के लिए क्यों आवश्यक है? भाषा राष्ट्र की एकता, अखंडता तथा विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यदि राष्ट्र को सशक्त बनाना है तो एक भाषा होनी चाहिए। इससे धार्मिक एवं सांस्कृतिक

एकता बढ़ती है। यह स्वतंत्र तथा समृद्ध राष्ट्र के लिए आवश्यक है। इसलिए प्रत्येक विकसित तथा स्वाभिमानी देश की अपनी एक भाषा अवश्य होती है जिसे राष्ट्रभाषा का गौरव प्राप्त होता है। राष्ट्रभाषा संपूर्ण देश में भावात्मक तथा सांस्कृतिक एकता स्थापित करने का प्रधान साधन होती है। इसे बोलने वालों की संख्या सबसे अधिक होती है। किसी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए परिश्रम तथा संघर्ष करना पड़ता है। हमारी हिंदी भाषा भी कड़े संघर्षों के बाद वर्तमान स्थिति तक पहुंची है। हम निस्संदेह कह सकते हैं कि हिंदी राष्ट्रभाषा के पद धारण करने की अधिकारिणी है।

आम जनता की भाषा हिंदी

हिंदी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है। सामान्य जनता द्वारा बातचीत करने के लिए प्रयुक्त किए जाने की वजह से इसे जनभाषा कहा जाता है। हिंदी भाषा के विकास में संतों, महात्माओं तथा उपदेशकों का योगदान भी कम नहीं आँका जा सकता है। क्योंकि ये आम जनता के अत्यंत निकट होते हैं। इनका जनता पर बहुत बड़ा प्रभाव होता है। इसका प्रमुख कारण हिंदी भाषा की सरलता, सुगमता तथा स्पष्टता है। संतों-महात्माओं ने धर्म तथा संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए एकमात्र सशक्त माध्यम हिंदी को बनाया। फिल्म उद्योग तथा संगीत हिंदी भाषा के आधार पर ही टिका हुआ है। हिंदी भाषा के साथ दिलचस्प बात यह है कि यह जहाँ पर बोली जाती है वहाँ का स्थानीय प्रभाव उस भाषा पर दृष्टिगोचर होता है। हिंदी भाषा की एक विशेषता यह भी है कि हमारे देश में रहने वाले किसी भी प्रांत के रहने वाले हो उनकी कोई भी मातृभाषा हो, वे हिंदी समझते हैं और किसी न किसी रूप में व्यवहार में लाते हैं।

वैज्ञानिक भाषा हिंदी

हर भाषा का एक वैज्ञानिक रूप होता है। हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है। यह जिस प्रकार बोली जाती है, उसी प्रकार लिखी जाती है। इसके उच्चारण व लिखावट में जितनी समानता है, उतनी किसी अन्य भाषा में नहीं। इसमें अंग्रेज़ी अन्य भारतीय भाषाओं के शब्द घुल मिल गये हैं। राजस्थानी, भोजपुरी , मगही तथा मैथिली व्यवहार की दृष्टि से उसकी बोलियाँ मानी जाती हैं। आज वैश्विक स्तर पर यह सिद्ध हो चुका है कि हिन्दी भाषा अपनी लिपि और ध्वन्यात्मकता (उच्चारण) के लिहाज से सबसे शुद्ध और विज्ञान सम्मत भाषा है। हमारे यहां एक अक्षर से एक ही ध्वनि निकलती है और एक बिंदु (अनुस्वार) का भी अपना महत्व है। वेब, विज्ञापन, सिनेमा और बाजार के क्षेत्र में हिंदी की मांग जिस तेजी से बढ़ी है, वैसा किसी और भाषा में नहीं हुआ है । जैसी वैज्ञानिकता आप हिंदी में पाएंगे वैसी विश्व की किसी और भाषा में नहीं है।

साहित्यिक भाषा हिंदी

हिंदी भारत और विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। उसकी जड़ें प्राचीन भारत की संस्कृत भाषा तक जाती हैं , परंतु मध्य युगीन भारत के अवधी, मागधी , अर्धमागधी तथा मारवाड़ी जैसी भाषाओं के साहित्य को हिंदी का आरंभिक साहित्य माना जाता है। हिंदी साहित्य का आरंभ आठवीं शताब्दी से माना जाता है। आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल के दौरान जितनी साहित्यिक सृष्टि हुई हैं, वे सब साहित्यिक भाषा के रूप में हिंदी कीर्तिमान को साबित करने के लायक हैं। हिंदी भाषा में साहित्य को समृद्ध करने वाले समस्त गुण विद्यमान हैं।

विश्व व्यापी भाषा हिंदी

विश्व के मानचित्र में फ्रांस का एक विशेष स्थान है। फ्रांस के पेरिस शहर में 'पेरिस के प्राच्य भाषाओं एवं सभ्यताओं के राष्ट्रीय संस्थान'' में हिंदी में 2 वर्ष का सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम, 3 साल का डिप्लोमा, 4 साल में उच्च डिप्लोमा, 5 साल और 6 साल के उच्च अध्ययन के शिक्षण की भी व्यवस्था है। जापान के टोक्यो और ओसाका विश्वविद्यालयों में हिंदी का छह वर्षीय पाठ्यक्रम है। कनाडा की यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिटिश कोलंबिया में हिंदी का 2 वर्ष का पाठ्यक्रम है। संयुक्त राज्य अमेरिका के 30 विश्वविद्यालयों में उच्च, इंटरमीडिएट एवं प्रारंभिक स्तर पर एक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। नार्वे के ओसलो विश्वविद्यालय में मास्टर डिग्री के लिए हिंदी का पठन-पाठन किया जाता है और स्वीडन के स्टॉकहोम विश्वविद्यालय में हिंदी का आधारभूत पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है। दक्षिण अफ्रीका की यूनिवर्सिटी ऑफ डरबन में [डरबन शहर] में स्नातक और स्नातकोत्तर डिग्री के लिए हिंदी पढ़ाई की व्यवस्था है। चीन के बीजिंग विश्वविद्यालय, ब्रिटेन के लंदन विश्वविद्यालय एवं कैंब्रिज विश्वविद्यालय, जर्मनी के हुम्बोल्ट विश्वविद्यालय, बर्लिन स्थित फ्री विश्वविद्यालय, बर्लिन स्थित ही लीपजिंग विश्वविद्यालय, मार्टिनलूथर विश्वविद्यालय, बान विश्वविद्यालय, हाईडेलबर्ग विश्वविद्यालय, और हैम्बर्ग विश्वविद्यालय में नियमित रुप से हिंदी पढ़ाई जाती है। स्विट्ज़रलैंड में लवसाने और ज्यूरिख के विश्वविद्यालय, इटली के नेपल्स और वेनिस विश्वविद्यालय, हालैंड के लायडन विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया के कैनबरा स्थित विश्वविद्यालय, पाकिस्तान के कई विश्वविद्यालयों स्कूल ऑफ मॉडर्न लैंग्वेजेस में सर्टिफिकेट और डिप्लोमा स्तर पर हिंदी पढ़ाई जाती है। श्रीलंका में डिग्री कोर्स तक हिंदी पढ़ाई जाती है। हमारे पड़ोसी नेपाल के त्रिभुवन विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर और पीएचडी तक की हिंदी सुविधा है। बांग्लादेश में हिंदी का 4 वर्षीय पाठ्यक्रम है। भूटान के 8 स्कूलों तथा बर्मा के मंदिरों, धर्मशालाओं व गैर सरकारी स्कूलों में हिंदी पढ़ाई जाती है। मॉरिशस के लगभग 350 गैर सरकारी स्कूलों में हिंदी की सांध्यकालीन पढ़ाई होती है।

वैश्विक भाषा के रूप में हिंदी की सर्वव्यापकता

भारत की आधिकारिक भाषा होने के अलावा, हिंदी का उपयोग भारत के बाहर रहने वाले लोगों द्वारा दूसरी भाषा के रूप में भी किया जाता है। यह इसे अंतरराष्ट्रीय संचार के लिए एक बहुत उपयोगी भाषा बनाता है। हिंदी बोलने वालों की इतनी बड़ी आबादी होने के कारण, यह भाषा दुनिया भर के स्कूलों में भी आमतौर पर पढ़ाई जाती है। अनुमान है कि

2025 तक भारत जापान से आगे निकल जाएगा। भारत की विकास और नवाचार की विशाल क्षमता ने हिंदी को वैश्विक भाषा के रूप में महत्व दिया है। किसी भाषा को सीखने का सबसे अच्छा लाभ यह है कि यह आपको अन्य भाषाएँ सीखने में मदद करती है। यदि आप हिंदी भाषा सीखने का प्रयास कर रहे हैं, तो स्पेनिश, फ्रेंच या जर्मन जैसी अन्य भाषाएँ अपनी मूल भाषा या उन भाषाओं से आसानी से सीखी जा सकती हैं जो आपने पहले सीखी हैं। हिन्दी भाषा भारतीय संस्कृति एवं अस्मिता का एक अनिवार्य अंग है। हिंदी भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, और यह भारतीय जीवन के विभिन्न पहलुओं, जैसे सरकार, व्यवसाय, शिक्षा और मनोरंजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार

भाषा का विकास उसके साहित्य पर निर्भर करता है। आज के तकनीकी के युग में विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में भी हिंदी में काम को बढ़ावा देना चाहिए ताकि देश की प्रगति में ग्रामीण जनसंख्या सहित सबकी भागीदारी सुनिश्चित हो सके। इसके लिए यह अनिवार्य है कि हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में तकनीकी ज्ञान से संबंधित साहित्य का सरल अनुवाद किया जाए। इसके लिए राजभाषा विभाग ने सरल हिंदी शब्दावली भी तैयार की है। राजभाषा विभाग द्वारा राष्ट्रीय ज्ञान-विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन योजना के द्वारा हिंदी में ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकों के लेखन को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे हमारे विद्यार्थियों को ज्ञान-विज्ञान संबंधी पुस्तकें हिंदी में उपलब्ध होंगी। हिन्दी भाषा के माध्यम से शिक्षित युवाओं को रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध हो सकें, इस दिशा में निरंतर प्रयास भी जरूरी है।भारत में महात्मा गांधी के हिंदी प्रचार आंदोलन के परिणामस्वरूप दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना मद्रास नगर के गोखले हॉल में डॉ सी.पी. रामास्वामी अय्यर की अध्यक्षता में एनी बेसेन्ट ने की थी। गांधीजी जी आजीवन इसके सभापति रहे। उन्होंने देश की अखंडता और एकता के लिए हिंदी के महत्व एवं उसके प्रचार-प्रसार पर बल दिया। हिंदी देश के सामाजिक, राजनीतिक, सांप्रदायिक एवं भाषाई समन्वय और सौहार्द का प्रतीक है।

हिंदी भाषा का उज्ज्वल भविष्य

हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है अगर हिंदी के विकास में कोई बाधा है, तो हम भारतीय स्वयं हैं । जो अंग्रेजी का मोह नहीं छोड़ पाते। हम स्वयं हिंदी की उपेक्षा करते हैं। अंग्रेजों ने जैसे अंग्रेजी को अंतराष्ट्रीय भाषा बनाया उसी तरह अगर हम हिंदी का प्रयोग खुलकर हर जगह करें, पढ़े-पढ़ाएं, हिंदी के प्रति समर्पण रखें तो वह दिन दूर नहीं, जब हिंदी एक स्थापित अंतर्राष्ट्रीय भाषा होगी। हिंदी के लिए वर्तमान परिस्थितियां कहीं आशाजनक हैं, तो कहीं निराशाजनक। तकनीक और प्रगति के मामले में आशाजनक लेकिन अपने निजी स्वरूप और विकास के मामले में निराशा उत्पन्न करने वाली। इसमें जैसे बदलाव आ रहे हैं उससे लगता नहीं कि भविष्य में हिंदी अपने वर्तमान रूप में सुरक्षित रह पाएगी। इसका अंग्रेजी मिश्रित हिंग्लिश धीरे-धीरे औपचारिक स्वीकृति भी पाता जा रहा है। हिंग्लिश में दिनोदिन अंग्रेजी का अनुपात बढ़ता ही जा रहा है। भाषा अस्मिता से जुड़ी है और अस्मिता के प्रश्न जल्दी नहीं मरते। भारतीय अस्मिता की सच्ची वाहिका हिंदी व अन्य भारतीय भाषाएं ही हैं, अंग्रेजी नहीं। भविष्य कई बार हमारी कल्पना और अनुमानों से भी ज्यादा विलक्षण होता है। अभी हमारे सामर्थ्य में यही है कि मौजूदा प्रवृत्तियों और परिवर्तनों को देखते हुए अपनी निराशा को परे रखते हुए आने वाले समय में हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं की बेहतरी के लिए भरसक प्रयत्न करते रहें।

समुन्नत भारतीय भाषा के रूप में हिंदी

हिंदी भाषा की भूमिका के बारे में बताएं तो आम जनता से लेकर भारत के संविधान तक यानि हमारे जीवन के प्रत्येक कोने में हिंदी विद्यमान है। स्कूल, कॉलेज, संचार, यात्रा-प्रबंधन, सरकारी कार्यालय, मंत्रालय, साहित्य, विज्ञान, तकनीकी, सूचना प्रौद्योगिकी, विदेश – सब कहीं विराजमान है हिंदी। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी मातृभाषा है , लेकिन भारत माँ की संतानों के रूप में हमें सामान्यतः एक भाषा की ज़रूरत है। निश्चय ही उस पद की अधिकारिणी, सर्वसम्मत भाषा हिंदी ही रहेगी, जिसे हम अपनी मान सकते हैं। अगर हम हिदी को निज भाषा मान लें, तो कविवर भारतेंदु हरिश्चंद्र की पंक्तियों में :

> **" निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।**
> **बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।**
> **विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।**
> **सब देसन से लै करहू, भाषा माहि प्रचार।।"**

निज यानी अपनी भाषा से ही उन्नति संभव है, क्योंकि यही सारी उन्नतियों का मूलाधार है। मातृभाषा के ज्ञान के बिना हृदय की पीड़ा का निवारण संभव नहीं है। विभिन्न प्रकार की कलाएँ, असीमित शिक्षा तथा अनेक प्रकार का ज्ञान, सभी देशों से जरूर लेना चाहिए, परन्तु उनका प्रचार मातृभाषा में ही करना चाहिए।

अपने विपुल साहित्य, शिक्षा के क्षेत्र में योगदान, कामकाज की भाषा में प्रचुर प्रसार, भाषाई गुणों का समावेश, सरलता व सहजता, वैज्ञानिक लिपि, जन-जन की भाषा, भारत की पहचान, एकता के सूत्र में पिरोने की क्षमता, शब्द-भंडार, विश्व व्यापकता, तकनीकी क्षेत्र में योगदान जैसे हिंदी भाषा की बहुत सारी विशेषताएँ हैं जो इसे एक समुन्नत भारतीय भाषा का स्थान प्रदान करती हैं। अपने देश को उन्नति के धरातल पर पहुँचाने के लिए हिंदी की भूमिका अवश्य ही सराहनीय रहेगी। उन्नत भारतीय भाषा हिंदी के साथ समुन्नत भारत के निर्माण कार्य के लिए हम आगे बढ़ें। प्रत्येक राज्य अपनी मातृभाषा को प्राथमिकता देते हुए राज्य स्तरीय विकास में प्रयत्नरत रहें, अपने देश की सबसे सरल एवं मानक भाषा हिंदी की गरिमा को पहचानते हुए उसकी प्रगामी विकास यात्रा में साथ जुड़ें।

मोनिशा एस के, प्रबन्धक, डिजिटल बैंकिंग विभाग, केन्द्रीय कार्यालय

उभरती प्रौद्योगिकी और आइओबी

डिजिटल परिवर्तन

आइए इस उद्धरण से शुरुआत करें "जिसका प्रौद्योगिकी पर नियंत्रण है वही सुनहरा भविष्य गढ़ सकता है" - नई प्रौद्योगिकियों को अपनाना सर्वोत्तम सार्वजनिक सेवा प्रदान करने के महत्वपूर्ण तरीकों में से एक है। सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक होने के नाते इण्डियन ओवरसीज़ बैंक (आइओबी) बाजार में उपलब्ध विभिन्न नई तकनीकों को अपनाने के साथ-साथ नई तकनीकों को अपना कर डिजिटल रूप से बैंकिंग सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। आइओबी को डिजिटल बैंकिंग शुरू किए हुए दो दशक हो गए हैं और इसने ग्राहक अनुकूल बैंकिंग प्रदान करने के लिए विभिन्न समाधान पेश किए हैं।

डिजिटल उत्पादों को पेश करने और प्रोत्साहित करने के लिए आइओबी के पास एक समर्पित विभाग "डिजिटल बैंकिंग विभाग" (डीबीडी) है। डीबीडी के कुछ प्रमुख उत्पाद डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, आइओबी भीम यूपीआइ, आइओबी पे, फास्टैग, एटीएम आदि हैं जिनके माध्यम से आइओबी डिजिटल बैंकिंग के माध्यम से ग्राहक सेवा प्रदान कर रहा है ।

"मोबाइल बैंकिंग" - वास्तविक समय में आसान एवं निर्बाध बैंकिंग

"मोबाइल बैंकिंग सेवा" शब्द "कहीं भी और कभी भी बैंकिंग सेवाओं" को दर्शाता है, जो ग्राहक को प्रदत्त सेवाओं में इजाफा करने के लिए आइओबी द्वारा प्रदान की जाने वाली प्रमुख सेवाओं में से एक है। आइओबी मोबाइल बैंकिंग सेवाओं के माध्यम से बड़े दृढ़ संकल्प और उत्साह के साथ ग्राहकों को सर्वोत्तम बैंकिंग सेवाएं प्रदान कर रहा है। ग्राहक आइओबी के "आइओबी मोबाइल" मोबाइल बैंकिंग एप्लिकेशन के माध्यम से विभिन्न सेवाएं प्राप्त कर सकते हैं यथा

- **स्व-ऑनबोर्डिंग** - ग्राहक पंजीकृत मोबाइल नंबर के माध्यम से एप्लिकेशन में लॉगिन कर सकते हैं और व्यू यूजर के रूप में पंजीकरण कर सकते हैं । डेबिट कार्ड धारक ग्राहक आइओबी मोबाइल से जुड़ सकते हैं और वित्तीय सेवाओं का उपयोग कर सकते हैं ।
- **शाखा के माध्यम से पंजीकरण** - जिन ग्राहकों के पास डेबिट कार्ड नहीं है, उन्हें शाखा में जाकर और शाखा सेवाओं के माध्यम से पंजीकरण करके मोबाइल बैंकिंग वित्तीय सेवाओं का उपयोग करने की व्यवहार्यता भी दी जाती है।
- **खाता विवरण देखें** - ग्राहक कहीं भी और कभी भी परिचालन, जमा, ऋण खाते के सभी विवरण जैसे शेष राशि, नामांकित व्यक्ति का विवरण, परिपक्वता विवरण, ब्याज विवरण आदि देख सकते हैं ।
- **एम-पासबुक** - ग्राहक कुछ ही क्लिक के साथ मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक, तिथि सीमा और लेनदेन सीमा के आधार पर खाता विवरण ईमेल के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं अथवा पीडीएफ़ प्रारूप में डाउनलोड कर सकते हैं।
- **निधि अंतरण** - ग्राहक आइएमपीएस, एनईएफटी, बैंक ट्रांसफर के माध्यम से लाभार्थी को जोड़कर 24×7×365 आधार पर निधि अंतरित कर सकते हैं। ग्राहक न्यूनतम सीमा लेनदेन के अधीन त्वरित भुगतान के माध्यम से लाभार्थी को जोड़े बिना भी धन विप्रेषित कर सकते हैं।
- **शेड्यूल ट्रांसफर** - ग्राहक लेन-देन शेड्यूल कर सकते हैं, जिससे ऋण चुकौती, किराया, निवेश, क्रेडिट कार्ड भुगतान आदि जैसे नियमित भुगतान के लिए आसान भुगतान किया जा सकता है, जिससे समय पर लेनदेन सुनिश्चित होता है और समय सीमा/विलंब शुल्क से बचा जा सकता है ।
- **यूटिलिटी भुगतान** - ग्राहक बिलों का भुगतान कर सकते हैं, बिल भुगतान इतिहास देख सकते हैं और इस पूर्व में किए गए बिल भुगतान को ट्रैक कर सकते हैं।
- **डिपॉजिट ओपनिंग** - ग्राहक विभिन्न योजनाओं के लिए जमा ब्याज दरों, ओपन डिपॉजिट, प्री-क्लोज डिपॉजिट की गणना कर सकते हैं और सुरक्षित तरीके से पैसे का निवेश सुनिश्चित कर सकते हैं ।
- **यूपीआइ** - ग्राहक तत्काल प्रेषण के लिए यूपीआइ स्कैन और पे और अन्य यूपीआइ सुविधाओं का उपयोग कर सकते हैं।
- **चेक सेवाएँ** - ग्राहक चेक की स्थिति देख सकते हैं, चेक रोक सकते हैं, चेक बुक ऑर्डर कर सकते हैं और दैनिक उपयोग के लिए पीपीएस कार्यात्मकताओं का उपयोग कर सकते हैं।
- **मार्केट प्लेस** - ग्राहक विभिन्न शॉपिंग प्लेटफार्मों में दिए गए ऑफ़र देख सकते हैं, खरीदारी कर सकते हैं और भविष्य की खरीदारी के लिए शानदार रिवॉर्ड पॉइंट प्राप्त कर सकते हैं ।
- **बीमा सेवाएँ** - ग्राहक सरकारी बीमा योजनाओं जैसे पीएमजेजेबीवाई और पीएमएसबीवाई और अन्य निजी बीमा का लाभ उठा सकते हैं, इस प्रकार अप्रत्याशित जोखिमों को कवर करते हुए भविष्य की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है ।
- **निवेश / एएसबीए आइपीओ** - ग्राहक आइपीओ देख सकते हैं, आइपीओ के लिये आवेदन कर सकते हैं, रद्द कर सकते हैं और इस प्रकार बाजार में निवेश सुनिश्चित कर सकते हैं ।

- **डोरस्टेप बैंकिंग** - ग्राहक विभिन्न डोरस्टेप बैंकिंग सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं ।
- **राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली** - ग्राहक एनपीएस के लिए आवेदन कर सकते हैं, योगदान कर सकते हैं, और एसआइपी बना सकते हैं और सेवानिवृत्ति कोष का निर्माण कर सकते हैं ।
- **विभिन्न सेवा अनुरोध** - ग्राहक विभिन्न सेवा अनुरोधों जैसे कि कृषि संबंधी सेवाएं, वॉयस असिस्ट, खाता विवरण के लिए आवेदन आदि से लाभ उठा सकते हैं ।

डिजिटलाइजेशन की उपलब्धियां

मोबाइल बैंकिंग सेवाओं के विकास के साथ डिजिटल क्रांति में एक बड़ा बदलाव देखा जा रहा है । परिवर्तन यात्रा ने न केवल वित्तीय सेवाओं को सुव्यवस्थित किया है बल्कि ग्राहकों के लिए समग्र बैंकिंग अनुभव को भी बढ़ाया है । आइओबी में डिजिटलीकरण के साथ आने वाली कुछ सकारात्मक विशेषताएं यहां दी गई हैं:

- **सुविधा** - हैंडहेल्ड मोबाइल डिवाइस में बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध हैं ।
- **अभिगम्यता** - बैंकिंग सेवाएं 24×7×365 सुलभ रूप से उपलब्ध है ।
- **उन्नत सुरक्षा** - डिवाइस बाइंडिंग, टू-फैक्टर प्रमाणीकरण, सुरक्षित एन्क्रिप्टेड चैनल, बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण के एकीकरण के साथ सुरक्षित एप्लिकेशन जिससे ग्राहकों में विश्वास बढ़ता है ।
- **उपयोगकर्ता के अनुकूल इंटरफेस** - विभिन्न कार्यात्मकताओं को नेविगेट करना और बैंकिंग सेवाएं निष्पादित करना आसान है ।
- **नियामक अनुपालन** - नियामक अनुपालन का पालन ग्राहकों को सेवाओं और सुरक्षा उपायों पर भरोसा दिलाता है ।

निष्कर्ष

बाइंडिंग टेक्नोलॉजी और बैंकिंग सेवा आज के बैंकिंग क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं । मोबाइल उपकरणों पर बैंकिंग सेवाएं प्रदान करने से ग्राहकों की आसानी बढ़ती है और बैंकिंग व्यवसाय का विस्तार होता है जिसके परिणामस्वरूप बैंकिंग सेवाएं 24×7×365 कहीं भी और कभी भी उपलब्ध होती हैं । सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक आइओबी हमेशा ग्राहक सेवा की बेहतरी के लिए नई तकनीकों को अपनाने और बदले में सुरक्षित तरीके से बाजार की आवश्यकताओं को पूरा करने की दिशा में काम कर रहा है ।

राजभाषा प्रश्नोत्तरी का उत्तर

1. (ग)	2. (ग)	3. (ग)	4. (ग)	5. (ख)
6. (ग)	7. (क)	8. (क)	9. (ग)	10. (घ)
11. (ग)	12. (ख)	13. (ग)	14. (घ)	15. (ग)

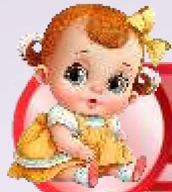

बचपन

यादों की आलमारी टटोलते
आज मुझे सुकून मिला
धूल में लिपटा
मुझे मेरा बचपन मिला
पुराने मटमैले कपड़ों में
नंगे पैर लहराता मिला
कंचे खो-खो कबड्डी खेलता
पतंग उड़ाते मस्तमौला सा मिला
दोस्तो के संग इतराता
चहचाता मिला
उधार की बड़ी सायकल को
कैची मार चलाता मिला
नुक्कड़ की दुकान पे
गटागट पेप्सी पीता मिला
चाचा चौधरी, नागराज, अंगारा
कॉमिक्स का दीवाना मिला
अपनी धुन में मगन
बेफिक्र खिलखिलाता मिला
आंखों में चमक लिया
खुल कर हंसता मुस्कुराता मिला
कुछ पल के लिए, यादों में ही सही
मैं अपने आप से मिला ।

भूषण लांजेवार
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय
नागपुर

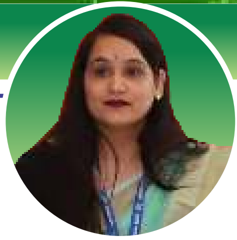

रेणु सरोज, सहायक प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय जयपुर

सरल भाषा में हो न्याय प्रक्रिया

अभी हाल ही में, भारत में दंड संहिता का नाम बदलकर भारतीय न्याय संहिता 2023 कर दिया गया है। जिसमें केंद्र सरकार ने अंग्रेजों के जमाने के 163 साल पुराने कानूनों में कई बदलाव किए हैं। राष्ट्रपति की मंजूरी मिलने के साथ ही नए कानूनों ने भारतीय आपराधिक न्याय प्रणाली को औपनिवेशिक विरासत से मुक्त कर पुलिस और न्यायालयों में भाषा सरल बनाने पर बहस शुरू हो गई है और उसे पुलिस प्रक्रिया में सुधार को जोड़कर देखा जा रहा है। हाल ही में राजस्थान के जयपुर जिले में दिनांक 5 से 7 जनवरी तक अखिल भारतीय डीजीपी कॉन्फ्रेंस में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के साथ केंद्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह और सभी राज्यों के पुलिस महानिदेशक शामिल हुए। चूंकि भाषा गृह मंत्रालय से जुड़ा विषय है तो इस कॉन्फ्रेंस में इस विषय पर चर्चा होना स्वभाविक था।

केंद्र सरकार विधि व्यवस्था के भारतीयकरण के लिए देश भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता व नया भारतीय साक्ष्य अधिनियम लेकर आया है। इसका उद्देश्य कानूनों को अंग्रेजों के राज से निकाल कर भारतीय रूप दिया जाना है। अत: इन कानूनों को हमारी अपनी भाषा में सरल बनाना आवश्यक है। इसी से जुड़ा एक और विषय है, वह है थानों में दर्ज होने वाली प्राथमिकी रिपोर्ट और अदालतों के फ़ैसलों को आम भारतीय नागरिक के समझने लायक बनाना। यह तभी संभव है, जब हम इसको मुगलकाल की भाषा से मुक्त कर दें। अंग्रेजों के जमाने में मुगलों की भाषा का उपयोग होता रहा और आज भी उसे पूरी तरह बदला नहीं गया है।

सही तरीके से कानून के राज का भारतीयकरण करना है, तो आम आदमी के लिए थाने की पहली सीढ़ी एफ़आईआर व न्याय पाने का साधन यानी कोर्ट का फैसला दोनों को सरल भारतीय भाषा में लिखना होगा। इसमें अधिक से अधिक ऐसे शब्दों का प्रयोग हो, जो सबकी अपनी भाषा में हों। न्यायाधीशों के फैसलों और पुलिस प्रक्रिया में ऐसे बहुत से शब्दों का प्रयोग किया जाता है, जो उर्दू एवं फारसी होते हैं। इनको आम आदमी समझ ही नहीं पाता। यह काम संसद से अधिक पुलिस के उच्च अधिकारियों और न्यायिक अधिकारियों के हाथ में है। इस बदलाव के लिए न केवल प्रशिक्षण की व्यवस्था हो, बल्कि थानों और छोटे न्यायालयों का निरीक्षण करने जाएं तो वहाँ प्रयोग की जा रही भाषा पर आवश्यक रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए।

अदालती फैसलों के तमाम उर्दू और फारसी शब्द परेशान करते हैं।

देश के अधिकांश राज्यों की पुलिस द्वारा आज भी कानून व्यवस्था में मुगलकालीन शब्दों का इस्तेमाल किया जा रहा है। कुछ उर्दू-फारसी शब्द, जो उपयोग में लाए जा रहे हैं, उनका हिन्दी अर्थ निम्नानुसार है :

शब्द	हिन्दी अर्थ
अर्ज	प्रस्तुत करना
शहादत	गवाही
हिफाजत	सुरक्षा
सह	साथी
रंजिश	दुश्मनी
अदम तामील	नोटिस सर्व नहीं होना
अहकाम	महत्वपूर्ण
दरखास्त	आवेदन
माल मसरूका	चोरी की संपत्ति
अदम पैरवी	बिना पक्ष रखे
रोजनामचा	दैनिक डायरी
हुलिया	पहचानने

ऐसे कई शब्द है जो आम जनता की समझ से काफी दूर है। देश के अधिकांश राज्यों की पुलिस व्यवस्था एवं कानून व्यवस्था में आज भी मुगलकालीन शब्दों का इस्तेमाल किया जा रहा है। इन उर्दू-फारसी शब्दों का आम भाषा में प्रचलन नहीं होने से नए भर्ती होने वाले पुलिसकर्मियों के साथ लोगों को भी इस शब्दावली को समझने में परेशानी होती है। नए भर्ती होने वाले पुलिसकर्मियों ने अपने हिसाब से कई शब्दों का उपयोग करना बंद कर दिया है। आज भी बड़ी संख्या में उर्दू-फारसी शब्दों को पुलिस कार्यप्रणाली, एफ़आईआर व एफ़आर में उपयोग में लिया जा रहा है।

भाषा को सरल करने के लिए निम्नलिखित पहल की जा सकती है

- उर्दू व फारसी शब्दों के स्थान पर नए सरल शब्द कामकाज में शामिल करवाने के लिए पुलिस को प्रशिक्षण दिया जाए।
- भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता में प्रावधान जोड़ा जाए कि एफ़आईआर, एफ़आर व आरोप पत्र की भाषा हिन्दी होगी।
- राजभाषा विभाग, गृह मंत्राल्य पुलिस के कामकाज में प्रयोग होने वाले उर्दू-फारसी शब्दों की पहचान कर उनके वैकल्पिक शब्दों की शब्दकोश तैयार करें।
- पुलिस के कामकाज में प्रयोग होने वाले सॉफ्टवेयर में ऐसे प्रावधान किए जाएं कि उर्दू व फारसी शब्द लिखते ही उनके वैकल्पिक शब्द स्वत: ही सामने आ जाए।
- विधि से संबंधित पाठ्यक्रम से उर्दू व फारसी शब्दों को हटा दिया जाए।
- वकीलों को भी पुलिस व अदालतों के कामकाज में सरल हिन्दी शब्दों को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षित किया जाए।

- भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता में प्रावधान जोड़ा जाए कि अदालतों के फ़ैसलों में सरल हिन्दी भाषा का प्रयोग किया जाए।
- राजभाषा विभाग अदालतों में प्रयोग होने वाले उर्दू-फारसी शब्दों की पहचान कर उनके वैकल्पिक शब्दों की शब्दकोश तैयार करें।

नई दिल्ली में आयोजित हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस और मुख्यमंत्रियों के सम्मेलन को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि आज हमारे देश की बड़ी आबादी के सामने न्यायिक प्रक्रिया को समझने में भाषा आड़े आती है। 2015 में हमने करीब 1800 ऐसे क़ानूनों को चिन्हित किया था जो अप्रासंगिक हो चुके थे। आगे, प्रधानमंत्री कहते हैं कि बड़ी आबादी न्यायिक प्रक्रिया और फैसलों को नहीं समझ पाती, इसलिए न्याय जनता से जुड़ा होना चाहिए। जनता की भाषा में होना चाहिए। आम लोगों को लोकभाषा और सामान्य भाषा में कानून समझने से न्याय के दरवाजे नहीं खटखटाने पड़ते हैं। देश में मूल रूप से अंग्रेजी बोलने वालों की संख्या मात्र दो से तीन फीसदी के बीच है तो न्यायालय की यह भाषा बने रहने की अनिवार्यता एक विडंबना ही है। अगर न्यायालय के कार्य हिंदी या क्षेत्रीय भाषाओं में हो तो न्यायिक प्रक्रिया के प्रति सामान्त नागरिकों में विश्वास और सम्मान बढ़ेगा। सर्वोच्च न्यायालय सहित हिंदी भाषी प्रदेशों के उच्च न्यायालय के कामकाज में भी हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित करना चाहिए।

केंद्र सरकार ने अंग्रेजों के जमाने के तीन कानूनों को बदलने की पहल की, लेकिन आम नागरिकों से सीधे जुड़ी थानों में दर्ज़ होने वाली एफ़आईआर और अदालतों के फैसलों की भाषा आज भी अच्छे – अच्छे पढे लिखे लोगों को समझ नहीं आती। आम नागरिकों के लिए तो पुलिस जो बताए वही एफ़आईआर के तथ्य और वकील जो बताते हैं वही अदालत का फैसला होता है। वजह है एफ़आईआर व अदालत के फैसलों में इस्तेमाल होने वाले उर्दू व फारसी शब्द। मुगलकाल से चले आ रहे इन शब्दों के प्रयोग का चलन समाप्त करने का प्रयास न अंग्रेजी शासन ने किया और न ही आजाद भारत की सरकारों ने। पुलिस थाने में कागजी कार्रवाई करते वक्त आम आदमी का जब अलामात, दीगर, मसरूका जैसे शब्दों से सामना होता था तो वे समझ से बाहर होते थे। लोगों को सामान्य काम के लिए भी पुलिसकर्मी या वकील की मदद लेनी पड़ती थी। इन्हीं दिक्कतों को देखते हुए एडीजी, रिसर्च एंड डवलपमेंट अधिकारी अनिल कुमार गुप्ता ने बताया कि पुलिस विभाग में जो क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग किया जाता था। उनको ढूंढकर आसान शब्दों की एक शब्दकोश तैयार किया गया है, जिसे जिलों में भेज दिया है। इसका उपयोग भी धीरे –धीरे शुरू हो रहा है। ऐसे करीब 600 से ज्यादा शब्द हैं।

पुलिस की शब्दकोश में बदले गए शब्द

उर्दू – फारसी शब्द	हिन्दी अनुवाद
अलामात	हस्ताक्षर
अदमचैक	असंज्ञेय
मसरूका	जब्त सामान
दीगर	दूसरा
अहकाम	महत्वपूर्ण
अपीलकुनिंदा	याचनाकर्ता
फर्द अफराद	एक व्यक्ति
कलमबंद	लिखित दस्तावेज़
मुद्दई	शिकायतकर्ता
अर्ज कुनिंदा	आवेदक

सरल भाषा के लिए विशेषज्ञों के विचार

न्याय प्रक्रिया में सरल भाषा के प्रयोग को लेकर कुछ विशेषज्ञों से बात की गई। सभी ने सरल भाषा के लिए अपने –अपने विचार प्रस्तुत किए।

- राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के उप निदेशक राजेश श्रीवास्तव ने कहा कि केंद्र ने तीन कानूनों को बदलकर बड़ा कदम उठाया है, लेकिन राजभाषा विभाग ने न्यायालय और पुलिस की भाषा सरल बनाने का काम राज्यों के भरोसे छोड़ रखा है। चूँकि एफ़आईआर और पुलिस के कार्यों में उर्दू व फारसी शब्दों का प्रयोग राज्य का विषय है। पुलिस के इस काम में राजभाषा विभाग दखल नहीं करता है। केंद्र सरकार और राज्य सरकार दोनों ही अपने स्तर पर काम करते हैं।
- सेवानिवृत्त आरपीएस अधिकारी श्री नरपत सिंह राठौड़ ने कहा कि कार्यप्रणाली में उर्दू-फारसी शब्दों को हटाया जाए तो आमजन को सहूलियत मिलेगी। सभी शब्दों को समझने में आसानी रहेगी। जिन शब्दों को समझने में दिक्कत आए, ऐसे शब्दों को हटाना चाहिए।
- राज्य के पहले विधि आयोग के अध्यक्ष रहे सेवानिवृत्त न्यायाधीश श्री विनोद शंकर दवे ने बातचीत के दौरान बताया कि कानून में अब ऐसे शब्दों का प्रयोग नहीं होता, लेकिन अभी पूरी तरह बदलाव नहीं होने के कारण वरिष्ठ अधिकारी अपने से जूनियरों को पुरानी भाषा ही सिखा रहे हैं। सरल भाषा का प्रयोग हो, इसके लिए सबसे ज्यादा जरूरी है मानसिकता को बदला जाए। इन शब्दों के स्थान पर अंग्रेजी को नहीं लाया जाए। आजकल नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी के पढे छात्र आ रहे हैं, जो अंग्रेजी में पढ़ते हैं। इस कारण अंग्रेजी का चलन बढ़ने की आशंका है। इससे आम आदमी के लिए आसान नहीं होगा। भाषा बदलने के नाम पर अर्थ का अनर्थ हो रहा है, जिसका भी ध्यान रखा जाना चाहिए। बदलाव जरूरी है, लेकिन इसे थोपा नहीं जाना चाहिए।

धोखाधड़ी वाले ई-मेल पहचान व बचाव

स्मार्ट उपकरणों के बढ़ते उपयोग और दूर से काम करने वाले कर्मचारियों ने ईमेल के उपयोग को बढ़ाया है। जहां ईमेल का उपयोग करना आसान है, वहीं हमलावरों द्वारा अपने शिकार को दूर से निशाना बनाना भी आसान हो रहा है। नीचे कुछ तकनीकें दी गई हैं, जिनका उपयोग धोखेबाज करते हैं, और कुछ उपाय अपनाकर इनका शिकार होने से बच जा सकता है:

- **फ़िशिंग लिंक:** जालसाज के जाल में न फंसें, किसी संदिग्ध ईमेल में लिंक पर कर्सर रखकर फ़िशिंग लिंक की पहचान की जा सकती है जो वास्तविक यूआरएल दिखाता है। सुनिश्चित करें कि क्लिक न करें, केवल माउस पॉइंटर को उस पर घुमाएँ।
- **यूआरएल शॉर्टनर:** जबकि Bitly, TinyURL जैसी लिंक-शॉर्टिंग सेवाएं छोटे लिंक बनाने के लिए लोकप्रिय और सामान्य उपकरण हैं, मैलवेयर वितरक और फ़िशर अपने लिंक के वास्तविक सोर्स को छिपाने के लिए लिंक शॉर्टिंग का उपयोग करते हैं। सावधान रहें और ऐसे छोटे लिंक पर क्लिक करने से पहले स्रोत को सत्यापित करें।
- **व्यक्तिगत जानकारी के लिए अनुरोध:** बैंक कभी भी आपसे आपके पैन, आधार, एटीएम या पिन जैसी किसी भी व्यक्तिगत जानकारी के साथ ईमेल में जवाब देने के लिए नहीं कहेगा।
- **तत्काल अपील:** यदि आप ईमेल के माध्यम से अपनी व्यक्तिगत जानकारी की पुष्टि, सत्यापन या प्रमाणित करने में विफल रहते हैं तो बैंक कभी भी यह दावा नहीं करेगा कि आपका खाता बंद कर दिया जाएगा।
- **सुरक्षा अपडेट के बारे में ईमेल:** सिस्टम अपग्रेड के कारण बैंक कभी भी ईमेल के माध्यम से महत्वपूर्ण जानकारी की पुष्टि करने की आवश्यकता का दावा नहीं करेगा।
- **नए याद का निरीक्षण करें:** हमेशा अचानक और भिन्न ईमेल सामग्री का निरीक्षण करें, भले ही कार्यालय कर्मचारी/कार्यकारी का ईमेल हो, क्योंकि यह जाली मेल हो सकता है या ईमेल खाते से समझौता किया जा सकता है। संदिग्ध मेल के लिए प्रेषक से किसी अन्य माध्यम से भी सत्यापन करें।
- **वर्तनी और व्याकरण की गलतियाँ:** ईमेल पते की वर्तनी पर ध्यान दें क्योंकि जालसाज़ ईमेल पते में मामूली बदलाव करते हैं।

क्या करें :

1. अपना इनबॉक्स साफ़ रखें, जंक/स्पैम ईमेल फ़िल्टरिंग सिस्टम प्रभावी करें।
2. ईमेल में प्राप्त लिंक से सावधान रहें। ये लिंक आपको किसी वायरस या स्पाइवेयर वाली साइट पर ले जा सकते हैं। यदि आप किसी लिंक के बारे में अनिश्चित हैं जो उन्होंने आपको ईमेल में भेजा है तो स्रोत से पुष्टि करें।
3. अपने ईमेल खाते के लिए मजबूत पासवर्ड का प्रयोग करें। जहां भी संभव हो बहु-कारक प्रमाणीकरण का उपयोग करें।
4. विशेष रूप से वित्तीय वेबसाइटों तक पहुंचने के लिए ईमेल में दिए गए लिंक पर क्लिक करने के बजाय यूआरएल टाइप करके वेबसाइट तक पहुंचें।
5. हमेशा अपने ईमेल अकाउंट से लॉग आउट करें।
6. महत्वपूर्ण जानकारी साझा करते समय उसे पासवर्ड से एन्क्रिप्ट/प्रोटेक्ट करें।

क्या न करें:

1. अज्ञात स्रोतों से प्राप्त अनुलग्नकों को न खोलें और न ही अग्रेषित करें और अपने ई-मेल प्रोग्राम को "ऑटो-ओपन" या "ऑटो-डाउनलोड" अटैचमेंट पर सेट न करें।
2. अपना यूजर आइडी या पासवर्ड किसी अन्य व्यक्ति को न दें और अपना पासवर्ड बार-बार बदलते रहें।
3. अपना ईमेल पता किसी सोशल नेटवर्क साइट, चैट-रूम या वेबपेज पर पोस्ट न करें।
4. आप जो कुछ भी पढ़ते हैं उस पर विश्वास न करें। स्पैम ईमेल में अक्सर गलत विषय पंक्ति होती है जो आपको संदेश खोलने के लिए प्रेरित करती है।
5. अपनी आधिकारिक ईमेल आइडी का उपयोग व्यक्तिगत उपयोग के लिए न करें और अपने कार्यालय का ईमेल पता हर किसी और हर जगह देने से बचें।
6. सार्वजनिक वाई-फ़ाई से कार्यालय ईमेल का उपयोग न करें।
7. जानकारी अपडेट करने के लिए ईमेल में प्राप्त लिंक पर क्लिक न करें।
8. यदि आपको कोई संदिग्ध ईमेल प्राप्त होता है जो बैंक के नाम/लोगो/ समान यूआरएल का उपयोग करता है, तो इसे तुरंत बैंक की सूचना सुरक्षा टीम को अग्रेषित करें।

ज्ञान के मोती

हंसी की फुलझड़ियाँ

मोती

- कोई भी व्यक्ति हमारा मित्र या शत्रु बनकर संसार में नहीं आता, हमारा व्यवहार और शब्द ही लोगों को मित्र और शत्रु बनाते हैं।
- समय अच्छा हो तो आपकी गलती भी मजाक लगती है, समय खराब हो तो मजाक भी गलती बन जाता है।
- कुछ लोगों को ऊँचाई पर पहुंचने की इतनी जल्दी होती है कि छोटे लोगों के हाथ पकड़ने की बजाय बड़े लोगों के पाँव पकड़ना पसंद करते हैं।
- गलतफहमियों के सिलसिले आजकल इतने दिलचस्प है कि, हर ईंट सोचती है कि दिवार मुझ पर टिकी है।
- सिर्फ वो लोग आपकी परवाह करते हैं, जो आपको तब भी सुन सकते है, जब आप चुप होते हैं।
- कठिन परिस्थितियों में संघर्ष करने पर एक बहुमूल्य संपत्ति विकसित होती हैं जिसका नाम है "आत्मबल'।
- ज़िंदगी में सबसे ज्यादा दुख बीता हुआ सुख देता है।
- जो व्यक्ति हर वक्त दुख का रोना रोता है, उसके द्वार पर खड़ा सुख बाहर से ही लौट जाता है।
- कुछ अलग करना हो तो भीड़ से हट के चलिए, भीड़ साहस तो देती है, मगर पहचान छीन लेती है।
- वो बुलंदी किस काम की जनाब... इंसान चढ़े और इंसानियत उतर जाये।
- क्रोध हमेशा मूर्खता से शुरू होकर पश्चाताप पर समाप्त होता है।
- दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार न करें, जो आपको अपने लिए पसंद नहीं।
- भूख से ज़्यादा अपमान जनक कोई और अपमान नहीं है।

बहुत साल पहले एक बाबा ने कहा था -
भगवान तुम्हें इतना देगा कि तुमसे संभाला नहीं जाएगा।
अब समझ में आ रहा है कि बाबा जी उस दिन वज़न की बात कर रहे थे।

पार्टी में एक आदमी मॉर्डन सी लड़की से हंस-हंस कर बात कर रहा था।
उसकी पत्नी उसके पास आकर बोली,
चलिये, मैं घर चल कर आपकी चोटों पर मरहम लगा दूँ।
पति - मगर मुझे तो कहीं चोट ही नहीं लगी है!
पत्नी – हम लोग अभी घर भी तो नहीं पहुंचे हैं!

शादी की 25वीं सालगिरह पर पत्नी पुलकित हो कर पति के गले लग कर बोली -
आप बिलकुल नहीं बदले, आज भी वैसे ही भोले-भाले, शांत स्वभाव के, एकदम पहले जैसे हैं।
पति भावुक हो कर बोला –
"जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग;
चन्दन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग"।

डॉक्टर – इंजेक्शन लिखा था लिया क्यूँ नहीं?
मरीज़ – जी, वो शनिवार है न, लोहे की सुई ख़रीदूँगा तो शनिदेव नाराज़ हो जाएंगे!
डॉक्टर – अभी जा के ले आ ताऊ, नहीं तो यमदेव की नाराज़गी सही न जाएगी तेरे से।

पत्नी – वैक्सीन लगवा आए?
पति – हाँ
पत्नी - दर्द हो रहा है?
पति – नहीं
पत्नी – बाहर से इत्ती बड़ी सुई लगवा आए और दर्द नहीं हो रहा। हमारे तो बातें भी चुभ जाती हैं।

टीचर – 'खुशी का ठिकाना न रहा' मुहावरे का अर्थ बताओ?
बंटी – खुशी के पति ने उसे पार्क में किसी और के साथ देख लिया और खुशी को घर से निकाल दिया, इस तरह खुशी का ठिकाना न रहा।
टीचर – छड़ी कहाँ है मेरी?

टीचर – किसी महान वैज्ञानिक का नाम बताओ।
संता – आलिया भट्ट
टीचर ने मारने के लिए छड़ी उठाई ही थी कि बंता बोला
सर मारिए मत ये तोतला आर्यभट्ट कहना चाह रहा है।

आदर्श गुप्ता, प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ

यतो धर्मः ततो जयः

(विराज गए राम लला विराजमान)

दिनांक 22 जनवरी 2024 को उत्तर प्रदेश के अयोध्या जिले (पूर्व में फैजाबाद) में "अस्यै प्राणा प्रतिष्ठंतु अस्यै प्राणा क्षरंतु च। अस्यै देवत्मर्चायै मामहेति च कश्चन" मंत्रोच्चार से 84 सेकेंड के अभिजीत मुहूर्त में दोपहर 12 बजकर 29 मिनट पर रामलला की श्यामवर्णी प्रतिमा भव्य नव्य मंदिर के गर्भगृह में प्रतिष्ठित हुई और पौष शुक्ल द्वादशी को अभिजित मुहूर्त में रामलला अपनी जन्मभूमि पर बने भव्य और दिव्य घर में विराजमान हुए। विद्वानों ने प्राण-प्रतिष्ठा के मुहूर्त की गणना करते समय इस बात का ध्यान रखा कि मुहुर्त के समय ग्रहों एवं नक्षत्रों की वही स्थिति हो जो कि भगवान राम के जन्म के समय थी। इस अवसर पर मंदिर प्रांगण में 150 परम्पराओं के संत – महात्मा तथा उद्योग, खेल, अभिनय, संगीत, न्याय, सेना आदि क्षेत्रों की विभूतियां भी समारोह की साक्षी बनीं। प्राण-प्रतिष्ठा के अवसर पर केन्द्र सरकार के द्वारा पूरे देश में अर्ध – दिवसीय अवकाश घोषित किया गया और इस अवधि में बैंक, भारतीय रिजर्व बैंक सहित शेयर बाजार की ट्रेडिंग तक बंद रही वहीं उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गोवा सहित कई राज्यों में इस अवसर पर पूर्ण दिवसीय अवकाश घोषित किया गया। मंदिर को गुप्त काल की नागर शैली का पालन करते हुए बनाया गया है। मंदिर निर्माण में किसी भी सीमेंट का उपयोग नहीं किया गया जो इसे दीर्घायु बनाता है। मंदिर में स्टील या लोहे के बजाय, ग्रेनाइट और बलुआ पत्थर का प्रयोग किया गया है जो इसे 1,000 साल तक का जीवनकाल प्रदान करता है। इस अवसर पर नए मंदिर अर्थात गर्भ- गृह में भगवान के नवीनतम विग्रह जो कि 51 इंच की अचल मूर्ति है की प्राण-प्रतिष्ठा की गई है तथापि मंदिर में पहले से मौजूद रामलला की मूर्ति को भी इसी गर्भ-गृह में स्थापित किया गया है और वे मंदिर में चल मूर्ति अर्थात उत्सव मूर्ति के रूप में पूजित होंगे।

`हाल ही में अमेरिकी कंपनी जेफरीज इक्विटी रिसर्च ने अपनी ताजा रिपोर्ट में अयोध्या में सालाना 5 से 10 करोड़ तीर्थयात्री आने का अनुमान लगाया है अर्थात अयोध्या तीर्थयात्रियों के मामले में भारत तथा विश्व के सभी आध्यात्मिक केन्द्रों को पीछे छोड़ने जा रहा है। अयोध्या में पर्यटकों की संख्या बढ़ने से भारत के कुल पर्यटन को

भी प्रोत्साहन मिलेगा अभी देश की जीडीपी में पर्यटन की हिस्सेदारी 6.68 प्रतिशत है जबकि चीन, अमेरिका व अन्य विकसित देशों में यह 8 प्रतिशत से अधिक है। वैसे चाहे कुछ भी हो पौष माह में शुक्ल पक्ष की द्वादशी संवत 2080 दिन सोमवार इस एक दिन ने इतिहास की तमाम गाथाओं को एक नया मोड देते हुए साबित किया कि अयोध्या का संदेश पूरे देश और मानव समाज के लिए है। निश्चित रूप से अनुभूतियों को शब्द देना मुश्किल होता है और भाव भक्ति को केवल चेहरे से पढ़ा जा सकता है जो कि सनातन की पताका को लहराते हुए एक ही संदेश दे रहा है, यतो धर्मः ततो जयः या शायद आज की इस आयोध्या की देखकर लगता है कि राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त के वो शब्द बिल्कुल सही सिद्ध हो गए हैं –

"देख लो, साकेत नगरी है यही,
स्वर्ग से मिलने गगन को जा रही।
भूप को अब और कुछ पाना नहीं।
बस यही संकल्प पूरा एक हो,
शीघ्र ही श्रीराम का अभिषेक हो।

पी. राजशेखर, वरिष्ठ प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलुरु

गुड फ्राइडे

बाइबल के अनुसार, ईसा मसीह को शुक्रवार के दिन सूली पर चढ़ाया गया था, इसीलिए इस दिन को गुड फ्राइडे कहा जाता है। इसे होली फ्राइडे, ब्लैक फ्राइडे या ग्रेट फ्राइडे के नाम से भी जाना जाता है। गुड फ्राइडे ईसाई कैलेंडर में एक महत्वपूर्ण दिन है, क्योंकि यह ईस्टर सप्ताहांत की शुरुआत और पवित्र सप्ताह की समाप्ति का प्रतीक है।

विभिन्न ईसाई संप्रदायों और समुदायों में गुड फ्राइडे मनाने के संबंध में अलग-अलग परंपराएं और रीति-रिवाज हैं। कुछ लोग जुलूसों, बलिदान के पुन: चित्रण या क्रॉस की वंदना में भाग लेते हैं। कई परंपराओं में, गुड फ्राइडे उपवास और संयम का दिन है, क्योंकि इसे आत्म-अनुशासन और आध्यात्मिक प्रतिबिंब के रूप में देखा जाता है।

कुछ परंपराओं में, चर्च की घंटियाँ मौन रहती हैं और ईसा मसीह की मृत्यु से जुड़े दुःख और शोक के प्रतीक के रूप में धार्मिक चिह्नों और पवित्र छवियों पर पर्दा डाला जाता है। ईसाई धर्म के संदर्भ में गुड फ्राइडे के महत्व के ये कई प्रमुख पहलू हैं:

1.चिंतन और पश्चाताप: गुड फ्राइडे ईसा मसीह के बलिदान के महत्व पर विचार करने और मानव जीवन में पाप के प्रभाव को स्वीकार करने का समय है। कई ईसाई पश्चाताप व्यक्त करने के लिए प्रार्थना, ध्यान और आत्म-त्याग के कार्यों के माध्यम से गुड फ्राइडे मनाते हैं। ईसाइयों का मानना है कि सूली पर ईसा मसीह की मृत्यु एक प्रायश्चित कार्य था जिसने मानवता को ईश्वर के साथ मिला दिया। ईसाई धर्मशास्त्र के अनुसार, ईसा मसीह ने स्वेच्छा से मानवता के पापों के लिए खुद का बलिदान दिया, ताकि लोगों उनके पापों के लिए क्षमा प्राप्त करने का मार्ग मिल सके।

2.भविष्यवाणी की पूर्ति: ईसाइयों के लिए, गुड फ्राइडे की घटना उनके मसीहा के संबंध में ओल्ड टेस्टमेंट (Old Testament) की भविष्यवाणी की पूर्ति में गहराई से निहित है। ईसा मसीह की पीड़ा, मृत्यु और पुनरुत्थान को एक उद्धारकर्ता के शास्त्रीय वादे को पूरा करने के रूप में देखा जाता है जो मानवता के लिए मुक्ति और उद्धार लाएगा। इस प्रकार गुड फ्राइडे को ईश्वरीय वादों की पूर्ति और उनके प्रकटीकरण में एक महत्वपूर्ण क्षण के रूप में देखा जाता है।

3. पीड़ा और करुणा: विश्वासी लोग ईसा मसीह की पीड़ा और मृत्यु सहने की इच्छा को मानवता के प्रति उनके गहरे प्रेम की अभिव्यक्ति के रूप में देखते हैं और गुड फ्राइडे सभी लोगों के लिए ईश्वर के प्रेम और ईसा मसीह की करुणा की मार्मिक याद दिलाता है।

4. पाप और मृत्यु पर विजय: जबकि गुड फ्राइडे ईसा मसीह के सूली पर चढ़ने और मृत्यु का प्रतीक है, यह उनके पुनरुत्थान की आशा से भी अविभाज्य रूप से जुड़ा हुआ है। ईसाइयों के लिए, सूली पर चढ़ना कहानी का अंत नहीं है; बल्कि, यह ईस्टर रविवार की विजय की प्रस्तावना है, जब विश्वासी ईसा मसीह के पुनरुत्थान का जश्न मनाते हैं। गुड फ्राइडे की घटनाओं को पाप और मृत्यु पर ईसा मसीह की जीत की बड़ी कथा के अभिन्न अंग के रूप में देखा जाता है, जो विश्वास करने वाले सभी लोगों को आशा, परिवर्तन और नया जीवन प्रदान करता है।

5. चिंतन और पश्चाताप: गुड फ्राइडे गहन आध्यात्मिक चिंतन, पश्चाताप और आत्मनिरीक्षण के लिए स्थान प्रदान करता है। यह ईसा मसीह के बलिदान के महत्व पर विचार करने और मानव जीवन में पाप के प्रभाव को स्वीकार करने का समय है।

अंततः गुड फ्राइडे ईसाई धार्मिक कैलेंडर और दुनिया भर के ईसाइयों के विश्वास और साधना में एक केंद्रीय स्थान रखता है। यह विश्वासियों के लिए गहन आध्यात्मिक चिंतन में संलग्न होने, ईसा मसीह के सूली पर चढ़ने की घटना को याद करने और ईस्टर रविवार को उनके पुनरुत्थान के जश्न की तैयारी करने का समय है। ईसाइयों के लिए, गुड फ्राइडे ईसा मसीह के गहन प्रेम और बलिदान की याद दिलाता है, साथ ही उस आशा और मुक्ति की पुष्टि भी है जो उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान मानवता को प्रदान करती है।

******

शबनम बानो, सहायक प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर

"चाँद ये पैगाम लाया है: माह-ए-रमज़ान आया है"

चाँद की पहली दस्तक से आसमान जगमगाया है,
दुआएं पूरी हो सबकी...माह-ए-रमज़ान आया है ॥

रमज़ान या रमदान इस्लामी कैलेन्डर का नौवाँ महीना है । मुस्लिम समुदाय द्वारा इस महीने को बेहद पवित्र महीना माना जाता है, जो इस्लाम की पाँच बुनियादों यानि स्तंभों में से एक है: कलमा, नमाज़, ज़कात, रोज़ा और हज । इस्लामिक ग्रन्थों के अनुसार इस महीने इस्लाम धर्म की प्रमुख किताब "कुरान" नाज़िल हुई थी । रमज़ान के दौरान रोजा रखना, नमाज की पाबंदी करना, ज़कात (दान), सदका (ईश्वर के नाम पर दी गई वस्तु) आदि करना बेहद जरूरी होता है । रोजे का मतलब सिर्फ भूखे रहना ही नहीं होता बल्कि अपने विचारों को पवित्र रखना भी है । रोजा हमें जब्ते नफ्स (खुद पर काबू रखने) की तरबियत देता है और हममें परहेजगारी पैदा करता है । रमज़ान में पूरे महीने रोज़े रखने के बाद ईद मनाई जाती है ।

माह-ए-रमज़ान की कुछ विशेषताएँ:

1- **रोज़े (उपवास) :** रमज़ान में रखा जाने वाला उपवास जिसे रोज़ा कहते हैं । रमजान के इन 30 दिनों में पहले 10 दिन रहमत के, अगले 10 दिन बरकत के और आखिरी 10 दिन मगफिरत (माफी) के माने जाते हैं ।

2- **सहरी और इफ्तार :** रोज़े को शुरू करने से पहले सहरी (सूर्योदय से पहले खाया जाने वाला भोजन) की जाती है और रोज़े की नियत की जाती है । शाम को इफ्तार (सूर्यास्त के बाद खाया जाने वाला नाश्ता) में खजूर खाकर रोज़ा पूरा किया जाता है और अल्लाह का शुक्र अदा किया जाता है । रोज़ा पूरा होने के बाद शाम की नमाज़ अदा की जाती है ।

3- **नमाज़ :** इस्लाम के अनुसार नमाज़ ईश्वर के प्रति कृतज्ञता को दर्शाती है और मुसलमानों को पाँच वक्त की नमाज़ पढ़ना अनिवार्य है । पाँच वक्त की नमाज़ के अलावा रमज़ान के महीने में कुछ खास नमाज़ भी अदा की जाती है ।

4- **तराबीह :** इस महीने को इबादत का महीना कहा जाता है रमज़ान शुरू होने की चाँद रात से ही मुस्लिम समुदाय में अल्लाह की इबादत शुरू कर दी जाती है । इस दौरान रमज़ान का चाँद नज़र आने के बाद नमाज़ अदा की जाती है और अल्लाह का शुक्रिया अदा किया जाता है । तराबीह रमज़ान के महीने में अतिरिक्त नमाज़ है । यह इशा (रात) की नमाज़ के बाद पढ़ी जाने वाली सामूहिक नमाज़ है ।

5- **कुरान की तिलाबत:** माह-ए-रमज़ान में मुस्लिम समुदाय द्वारा अधिक से अधिक कुरान की तिलाबत (कुरान पढ़ना) की जाती है ।

6- **ज़कात (दान) देना :** इस्लाम में ज़कात का अर्थ दान देना है और यह इस्लाम के पाँच मूल स्तंभों में से एक माना जाता है और हर मुसलमान को अपनी कमाई या धन संपत्ति अनुसार वार्षिक आय का 2.5% ज़कात अदायगी करना अनिवार्य है ।

रमज़ान कैलेंडर - वर्ष 2024 (1445 एच)(सहरी और इफ्तार)

चेन्नै सहरी / इफ्तार

1	मंगल	4.39 / 6.26	16	बुध	4.29 / 6.27
2	बुध	4.37 / 6.26	17	गुरु	4.26 / 6.27
3	गुरु	4.37 / 6.26	18	शुक्र	4.26 / 6.27
4	शुक्र	4.37 / 6.26	19	शनि	4.26 / 6.27
5	शनि	4.35 / 6.27	20	रवि	4.26 / 6.27
6	रवि	4.35 / 6.27	21	सोम	4.24 / 6.28
7	सोम	4.35 / 6.27	22	मंगल	4.24 / 6.28
8	मंगल	4.33 / 6.26	23	बुध	4.24 / 6.28
9	बुध	4.33 / 6.26	24	गुरु	4.21 / 6.28
10	गुरु	4.33 / 6.26	25	शुक्र	4.21 / 6.28
11	शुक्र	4.31 / 6.26	26	शनि	4.21 / 6.28
12	शनि	4.31 / 6.26	27	रवि	4.20 / 6.28
13	रवि	4.31 / 6.26	28	सोम	4.20 / 6.28
14	सोम	4.29 / 6.27	29	मंगल	4.20 / 6.28
15	मंगल	4.29 / 6.27	30	बुध	4.18 / 6.28

नई दिल्ली सहरी / इफ्तार

1	मंगल	5.16 / 6.29	16	बुध	4.57 / 6.37
2	बुध	5.14 / 6.29	17	गुरु	4.56 / 6.38
3	गुरु	5.13 / 6.30	18	शुक्र	4.55 / 6.38
4	शुक्र	5.12 / 6.30	19	शनि	4.54 / 6.39
5	शनि	5.11 / 6.31	20	रवि	4.52 / 6.39
6	रवि	5.10 / 6.31	21	सोम	4.51 / 6.40
7	सोम	6.08 / 6.32	22	मंगल	4.50 / 6.40
8	मंगल	5.07 / 6.33	23	बुध	4.49 / 6.41
9	बुध	5.06 / 6.33	24	गुरु	4.47 / 6.42
10	गुरु	5.05 / 6.34	25	शुक्र	4.46 / 6.42
11	शुक्र	5.04 / 6.34	26	शनि	4.45 / 6.43
12	शनि	5.02 / 6.35	27	रवि	4.43 / 6.43
13	रवि	5.01 / 6.35	28	सोम	4.42 / 6.44
14	सोम	5.00 / 6.36	29	मंगल	4.41 / 6.44
15	मंगल	4.59 / 6.37	30	बुध	4.40 / 6.45

मुंबई सहरी / इफ्तार

1	मंगल	5.12 / 6.27	16	बुध	4.54 / 6.36
2	बुध	5.11 / 6.27	17	गुरु	4.52 / 6.37
3	गुरु	5.10 / 6.28	18	शुक्र	4.51 / 6.37
4	शुक्र	5.09 / 6.29	19	शनि	4.50 / 6.38
5	शनि	5.07 / 6.29	20	रवि	4.48 / 6.38
6	रवि	5.06 / 6.30	21	सोम	4.47 / 6.39
7	सोम	5.05 / 6.31	22	मंगल	4.46 / 6.40
8	मंगल	5.04 / 6.31	23	बुध	4.44 / 6.40
9	बुध	5.03 / 6.32	24	गुरु	4.43 / 6.41
10	गुरु	5.01 / 6.32	25	शुक्र	4.42 / 6.41
11	शुक्र	5.00 / 6.33	26	शनि	4.40 / 6.42
12	शनि	4.59 / 6.34	27	रवि	4.39 / 6.43
13	रवि	4.57 / 6.34	28	सोम	4.38 / 6.43
14	सोम	4.56 / 6.35	29	मंगल	4.36 / 6.44
15	मंगल	4.55 / 6.35	30	बुध	4.35 / 6.44

कोलकाता सहरी / इफ्तार

1	मंगल	4.28 / 5.49	16	बुध	4.12 / 5.54
2	बुध	4.27 / 5.50	17	गुरु	4.12 / 5.55
3	गुरु	4.26 / 5.50	18	शुक्र	4.11 / 5.55
4	शुक्र	4.25 / 5.50	19	शनि	4.10 / 5.56
5	शनि	4.24 / 5.51	20	रवि	4.09 / 5.56
6	रवि	4.23 / 5.51	21	सोम	4.08 / 5.56
7	सोम	4.22 / 5.52	22	मंगल	4.07 / 5.57
8	मंगल	4.21 / 5.52	23	बुध	4.06 / 5.57
9	बुध	4.20 / 5.53	24	गुरु	4.05 / 5.57
10	गुरु	4.19 / 5.53	25	शुक्र	4.04 / 5.58
11	शुक्र	4.18 / 5.53	26	शनि	4.03 / 5.58
12	शनि	4.16 / 5.54	27	रवि	4.02 / 5.59
13	रवि	4.15 / 5.54	28	सोम	4.02 / 5.59
14	सोम	4.14 / 5.54	29	मंगल	4.00 / 5.59
15	मंगल	4.13 / 5.54	30	बुध	3.59 / 6.00

बेंगलुरु सहरी / इफ्तार

1	मंगल	5.20 / 6.31	16	बुध	5.10 / 6.33
2	बुध	5.18 / 6.31	17	गुरु	5.10 / 6.33
3	गुरु	5.18 / 6.31	18	शुक्र	5.09 / 6.33
4	शुक्र	5.17 / 6.31	19	शनि	5.07 / 6.33
5	शनि	5.17 / 6.31	20	रवि	5.07 / 6.33
6	रवि	5.16 / 6.31	21	सोम	5.06 / 6.33
7	सोम	5.16 / 6.31	22	मंगल	5.06 / 6.33
8	मंगल	5.16 / 5.32	23	बुध	5.04 / 6.33
9	बुध	5.16 / 6.32	24	गुरु	5.04 / 6.33
10	गुरु	5.14 / 6.32	25	शुक्र	5.04 / 6.33
11	शुक्र	5.13 / 6.32	26	शनि	5.02 / 6.33
12	शनि	5.13 / 6.32	27	रवि	5.02 / 6.33
13	रवि	5.13 / 6.32	28	सोम	5.01 / 6.33
14	सोम	5.11 / 6.33	29	मंगल	5.01 / 6.33
15	मंगल	5.11 / 6.33	30	बुध	4.59 / 6.33

हैदराबाद सहरी / इफ्तार

1	मंगल	5.05 / 6.31	16	बुध	4.53 / 6.34
2	बुध	5.04 / 6.31	17	गुरु	4.51 / 6.34
3	गुरु	5.03 / 6.31	18	शुक्र	4.51 / 6.35
4	शुक्र	5.02 / 6.31	19	शनि	4.50 / 6.34
5	शनि	5.02 / 6.32	20	रवि	4.49 / 6.35
6	रवि	5.01 / 6.32	21	सोम	4.48 / 6.35
7	सोम	5.00 / 6.32	22	मंगल	4.48 / 6.34
8	मंगल	5.00 / 6.32	23	बुध	4.46 / 6.35
9	बुध	5.00 / 6.32	24	गुरु	4.46 / 6.35
10	गुरु	4.58 / 6.33	25	शुक्र	4.45 / 6.36
11	शुक्र	4.57 / 6.34	26	शनि	4.44 / 6.36
12	शनि	4.56 / 6.33	27	रवि	4.43 / 6.36
13	रवि	4.55 / 6.34	28	सोम	4.42 / 6.36
14	सोम	4.54 / 6.34	29	मंगल	4.42 / 6.36
15	मंगल	4.54 / 6.35	30	बुध	4.42 / 6.36

नेहा रंजन, प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल

वेड इन इंडिया

वेडिंग यानी विवाह, जिसे शादी भी कहा जाता है, दो लोगों के बीच एक सामाजिक या धार्मिक मान्यता प्राप्त बंधन या संस्कार है। प्राचीन काल में जो विवाह दो परिवार और शुभचिंतकों के बीच का महोत्सव हुआ करता था कालांतर में सामाजिक प्रतिष्ठा को दर्शाने का एक ज़रिया बन गया है । शादी का दिन हर इंसान के लिए बहुत खास होता है। जीवन में इस क्षण का इंतजार लोग कई सालों से करते हैं, जिसे यादगार बनाने के लिए लोग हर मुमकिन कोशिश करते हैं। पहले ज्यादातर शादियां घरों पर ही हो जाया करती थीं, मगर अब लोग अपनी शादी के लिए एक परफेक्ट लोकेशन की तलाश करते हैं। जहां उनकी शादी का हर इवेंट एक लाइफ टाइम मोमेंट बन जाए, इसलिए लोग अब शादियों के लिए डेस्टिनेशन वेडिंग का ऑप्शन चुनते हैं। मौजूदा समय में विवाह एक संस्कार भर न रह कर समाज में अपनी वित्तीय धाक और साख जमाने का माध्यम बन कर उभरा है । स्थिति यह है कि भारत में माता-पिता अपने बच्चों की शादी के लिए उस समय से ही बचत करना शुरू कर देते हैं, जब उनका बच्चा बहुत छोटा होता है, ताकि बाद में उनकी शादी पर अच्छे से खर्च किया जा सके । यह भारतीय परिवारों में सबसे विशेष अवसरों में से एक माना जाता है । अब, विशेष अवसरों में विशेष लागत शामिल है । बिना उचित योजना के शादी का आयोजन करने से भारतीय परिवारों और मिडिल-क्लास आय समूहों की बचत में भारी कमी आती है । महंगाई के बावजूद, पिछले कुछ सालों में भारतीय मिडिल-क्लास शादी की औसत लागत कई गुना बढ़ गई है । इसमें अतिशयोक्ति नहीं है नहीं कि विवाह की योजना बनाने वाली कई छोटी बड़ी कंपनियाँ मशरूम के खेतों सी उग आयी हैं । आज की तारीख में ऐसी कंपनियों के लिए यह कारोबार कई बिलियन डॉलर की इंडस्ट्री में परिवर्तित हो गया है और अभी भी आगे बढ़ रहा है !

इसी बीच उच्च माध्यम वर्गीय भारतीयों के बीच डेस्टिनेशन वैडिंग (किसी विशेष देश में जा कर विवाह) करने का चलन चल निकला है । डेस्टिनेशन वेडिंग वह होती है जहां लड़की या लड़के के निवास स्थान की जगह किसी तीसरी जगह शादी का आयोजन किया जाता है जो अक्सर छुट्टियों की तरह लगता है । ये एक ऐसा स्थान होता पर जहां अधिकांश आमंत्रित मेहमानों को यात्रा करनी होती है और अक्सर कई दिनों तक रुकना पड़ता है । 2009 की मंदी के दौरान, पारंपरिक शादियों की तुलना में गंतव्य शादियों में वृद्धि जारी रही । विदेश के महंगे होटलों, महलों या हवेलियों जैसे प्रतिष्ठित स्थानों पर आयोजित होने वाली शादियाँ 21वीं सदी में तेजी से लोकप्रिय हो गई हैं ।

केपीएमजी की एक रिपोर्ट के मुताबिक, कुछ साल पहले भारतीय शादी बाजार में सालाना 3-4 लाख करोड़ रुपये का कारोबार होने का अनुमान लगाया गया था और मौजूदा आंकड़े इससे भी ज्यादा माने जा रहे हैं । यह दर्शाता है कि भारत की वेडिंग इंडस्ट्री देश की इकोनॉमी के लिए कितना महत्वपूर्ण है । कंफेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (CAIT) द्वारा किए गए एक सर्वे के अनुसार इस साल केवल 23 नवंबर से 15 दिसंबर के बीच देश भर में करीब 35 लाख शादियां होने की उम्मीद थी, जिससे वेडिंग इंडस्ट्री में एक महत्वपूर्ण आर्थिक उछाल देखने को मिला । कैट के सर्वे में शादी से संबंधित खरीदारी और सेवाओं में लगभग 4.25 ट्रिलियन रुपये के फ्लो का अनुमान लगाया गया है । इस खर्च का एक बड़ा हिस्सा विदेशों में आयोजित भव्य गंतव्य शादियों के दौरान होता है ।

भारतीय वेडिंग इंडस्ट्री एक मजबूत सेक्टर के रूप में विकसित हुई है, जिसमें पिछले कुछ सालों में तेजी से ग्रोथ देखी गई है। इसमें हॉस्पिटेलिटी, कपड़ा, ज्वेलरी और इवेंट प्लानिंग सहित कई सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है । भव्य और पर्सनलाइज्ड शादियों की मांग ने विक्रेताओं और प्रोफेशनल्स के लिए भी नए अवसर खोले हैं । सीएआइटी के मुताबिक इन शादियों से रिटेल सेक्टर में 4.74 लाख करोड़ रुपये ($51 बिलियन) के कारोबार का अनुमान है । पिछले साल इसी अवधि के दौरान लगभग 32 लाख शादियों के लिए 3.75 लाख करोड़ रुपये का बिजनेस हुआ था । यह एक महत्वपूर्ण ग्रोथ को दर्शाता है ।

भारतीय शादियों में पहले केवल काम की चीजें (यानि जिनकी शादी के आयोजन में आवश्यकता हो) बिकती थीं । लेकिन अब इसका विस्तार हो गया है । अब भारतीय शादी के सफलतापूर्वक आयोजन हेतु पेंटिंग, ज्वेलरी, साड़ी, लहंगा-चुनरी, फर्नीचर, रेडीमेड कपड़े, जूते, शादी और ग्रीटिंग कार्ड, सूखे मेवे, मिठाई, फल, पूजा सामग्री, खाद्यान्न, इलेक्ट्रॉनिक्स और गिफ्ट आइटम्स खूब बिकते हैं । इसलिए इन सामानों के बिजनेस में तेजी आने की उम्मीद है। वहीं बैंक्वेट हॉल, इवेंट मैनेजमेंट, कैटरिंग, ट्रैवल सर्विस, हॉस्पिटैलिटी और अन्य सर्विस सेक्टर के भी फलने-फूलने का अनुमान है । भारतीय परिवार शादियों के लिए मालदीव, थाईलैंड, बाली, श्रीलंका और तुर्की ज्यादा पसंद कर रहे हैं । पश्चिम एशिया या खाड़ी के देश भी भारतीय शादियों के लिए एक पॉपुलर डेस्टिनेशन बना हुआ है । इसके अलावा पुर्तगाल,बुडापेस्ट, इटली भी भारतीय डेस्टिनेशन वेडिंग के लिए यूरोप में कुछ पॉपुलर स्थान हैं । वहां भारतीयों को वह सब कुछ मिल जाता है, जो वह चाहते हैं ।

इकॉनमिक टाइम्स के मुताबिक किसी टॉप-टियर भारतीय डेस्टिनेशन पर फाइव स्टार होटल में 200 मेहमानों के लिए दो दिन की डेस्टिनेशन वेडिंग का आयोजन $365,706 से $609,510 तक हो सकता है । यदि शादी किसी फॉरेन लोकेशन पर आयोजित की जाती है, तो लागत दोगुनी से ज्यादा होने की संभावना रहती है ऐसे में अर्थव्यवस्थकीय लाभ जो भारत के हिस्से आना था अनायास ही किसी विदेशी मुल्क को प्राप्त हो जाता है ।

इसी विषय को गंभीरता प्रदान करने के उद्देश्य से माननीय प्रधानमंत्री जी ने कहा- 'क्या फॉरेन वेडिंग जरूरी है?' हम बात कर रहे हैं हाल ही में इस विषय पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के उत्तराखंड की राजधानी देहरादून में आयोजित दो दिवसीय उत्तराखंड वैश्विक निवेशक शिखर सम्मेलन की, जिसके उद्घाटन के दौरान प्रधानमंत्री ने कहा कि, 'भारत सरकार 21वीं सदी के आधुनिक कनेक्टिविटी के इंफ्रास्ट्रक्चर पर उत्तराखंड में अभूतपूर्व इन्वेस्टमेंट कर रही है ।' प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में कहा, 'देश के धनाढ्यों, मिलेनियर्स -बिलेनियर्स से कहना चाहता हूं कि हमारे यहां माना जाता है, कहा जाता है कि शादी के जोड़े ईश्वर बनाता है । ईश्वर तय करता है ये कि किसकी जोड़ी किसके साथ बनेगी । मैं समझ नही पा रहा हूं कि जब जोड़े ईश्वर बना रहा है तो जोड़ा अपने जीवन की यात्रा की शुरुआत उस ईश्वर के चरणों में करने की बजाय विदेश में जाकर के क्यों करते हैं । मैं तो चाहता हूं मेरे देश के नौजवानों को मेक इन इंडिया जैसा एक मूवमेंट चलना चाहिए, वेड इन इंडिया ।'

प्रधानमंत्री ने आगे कहा, 'भारत के लिए, भारत की कंपनियों के लिए, भारतीय निवेशकों के लिए मैं समझता हूं ये अभूतपूर्व समय है। अगले कुछ वर्षों में भारत, दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था बनने जा रहा है । स्थिर सरकार, सपोर्टिव पॉलिसी सिस्टम, रिफॉर्म से ट्रांसफॉर्म की मानसिकता और विकसित होने का आत्मविश्वास, ऐसा संयोग पहली बार बना है । मैं कहता हूं कि यही समय है, सही समय है। ये भारत का समय है ।"

उन्होंने देशवासियों से यह आह्वाहन है कि शादी हिन्दुस्तान में करें । ये दुनिया के देशों में शादी करना आजकल का फैशन हो गया है । कम से कम आने वाले पांच साल में आपके परिवार की एक डेस्टिनेशन शादी उत्तराखंड में करिये । अगर एक साल में पांच हजार भी शादियां यहां होने लग जाए न, नया इंफ्रास्ट्रकचर खड़ा हो जाएगा, दुनिया के लिए ये बहुत बड़ा वेडिंग डेस्टिनेशन बन जाएगा ।'

यहाँ उल्लेखनीय है यह मुद्दा भारतीय परिपेक्ष में काफी समय से चर्चा का विषय बना हुआ था मगर ये चर्चा का मुख्य मुद्द तब बना जब हाल ही में कलाकार रणदीप हुड्डा और लिन लैशराम की शादी मणिपुर की राजधानी इम्फ़ाल में पारंपरिक मैतेई शादी रीति-रिवाज़ों के साथ हुई है । अपने विवाह का भारतीय परंपरा से संबंध जोड़ते हुए नव युगल ने कहा कि हमने अपना विवाह महाभारत से प्रेरणा लेते हुए किया है । उन्होंने बताया कि महाभारत के पात्र अर्जुन ने मणिपुरी योद्धा राजकुमारी चित्रांगदा से इसी पद्धति से शादी की थी । उन्होंने आगे कहा कि हम इस यात्रा पर निकलने के लिए तैयार हैं, हम संस्कृतियों के इस मिलन के लिए आपका आशीर्वाद और प्यार चाहते हैं, जिसके लिए हम हमेशा ऋणी और आभारी रहेंगे ।

समय की मांग है कि आज हम सभी मिलकर अपने देश की अर्थव्यवस्था को बढ़ाने का प्रयास करें । अगर डेस्टिनेशन वेडिंग विदेशों की जगह भारत के अलग – अलग खूबसूरत व प्रसिद्ध जगहों पर होगी तो इससे देश का पैसा देश में ही रहेगा और इससे देश के लोकल व्यापारियों को भी फायदा होगा। सीएआइटी ने देश के संपन्न और अमीर वर्ग को भारत में ही शादियां करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए कहा कि देश में होने वाली शादियों से लोग अपनी परंपरा से जुड़े रहेंगे और साथ ही यह अर्थव्यवस्था को बूस्ट करने में भी मदद करेगा ।

राजभाषा आयोग

संविधान के अनुच्छेद 344(1) के अनुसार संविधान के प्रारंभ से पाँच वर्ष की समाप्ति पर राष्ट्रपति द्वारा एक आयोग का गठन किया जाएगा। भारत के राष्ट्रपति ने भारत के संविधान के इस अनुच्छेद द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए 7 जून 1955 को श्री बी.जी. खेर की अध्यक्षता में निम्नांकित विषयों पर सिफारिशें करने के लिए राजभाषा आयोग का गठन किया।

अपनी सिफारिशें करते समय आयोग को इस बात का ध्यान रखना था कि उन सिफारिशों से भारत की औद्योगिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक प्रगति में किसी प्रकार की बाधा न पहुंचे और सरकारी नौकरियों के मामले में हिन्दीतर क्षेत्रों के लोगों के उचित अधिकार और हित सुरक्षित रहें। आयोग ने अपने विचारार्थ विषय के विभिन्न पहलुओं से आधुनिक भाषा, भारतीय भाषाओं का स्वरूप, पारिभाषिक शब्दावली, संघ की भाषा और शिक्षा पद्धति, सरकारी प्रशासन में भाषा, कानून और न्यायालयों की भाषा, संघ की भाषा, लोक सेवाओं की परीक्षाएं, हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं का प्रचार और विकास, राष्ट्रीय भाषा संबधी कार्यक्रम को कार्य रूप देने के लिए संस्थाओं आदि की व्यवस्था आदि के बारे में विस्तार से विवेचन तथा विचार विमर्श करने के पश्चात 31 जुलाई 1956 को अपना प्रतिवेदन राष्ट्रपति को प्रस्तुत किया।

1) किस अनुच्छेद के तहत अध्यक्ष सदन के किसी सदस्य को अपनी मातृभाषा बोलने की अनुमति दे सकता है?
क) अनुच्छेद 110 (1) ख) अनुच्छेद 122 (2)
ग) अनुच्छेद 120 (1) घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

2) वर्तमान में संविधान की आठवीं अनुसूची में कितनी भाषाएँ सूचीबद्ध है?
क) 24 ख) 21
ग) 22 घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

3) निम्नलिखित में से कौन मालदीव की अधिकारिक भाषा है?
क) दारी ख) जोंगखा
ग) मलयालम घ) दिवेही

4) निम्नलिखित में से कौन सी भाषा अंडमान और निकोबार से संबंधित नहीं है?
क) जारवा ख) शोम्पेन
ग) टोटो घ) ओन्गे

5) बोडो, डोंगरी, संथाली और मैथिली संविधान में किस संशोधन में मान्यता प्राप्त भाषाओं की सूची शामिल है?
क) 73 वाँ संविधान संशोधन अधिनियम 1992
ख) 92 वाँ संविधान संशोधन अधिनियम 2003
ग) 103 वाँ संविधान संशोधन अधिनियम 2018
घ) 101 वाँ संविधान संशोधन अधिनियम 2016

6) कोंकणी .... अधिकारिक भाषा है?
क) चंडीगढ़ ख) दादरा और नागर हवेली
ग) दमन और दीव घ) दिल्ली

7) निम्नलिखित में से कौन सी भाषा त्रिपुरा में सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है?
क) बंगाली ख) चकमा
ग) कोक बोरोक घ) अंग्रेजी

8) बोडो भाषा मुख्य रूप से भारत के निम्नलिखित में से किस राज्य में बोली जाती है
क) असम ख) झारखंड
ग) हिमाचल प्रदेश घ) कर्नाटक

9) अंग्रेजी किस राज्य / केंद्र शासित प्रदेश की अधिकारिक भाषा है?
क) गोवा ख) पुदुचेरी
ग) नागालैंड घ) त्रिपुरा

10) भारत का राष्ट्रीय गीत, "वंदे मातरम" की रचना .... भाषा में की गई थी?
क) पाली ख) उर्दू
ग) हिंदी घ) संस्कृत

11) 2017 में भारत सरकार ने निम्नलिखित में से किस भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा नहीं दिया था?
क) मलयालम ख) कन्नड़
ग) प्राकृत घ) संस्कृत

12) तिरहुता लिपि का प्रयोग किस भाषा को लिखने के लिए किया जाता है?
क) मणिपुरी ख) मैथिली
ग) सिंधी घ) कोंकणी

13) भारत की जनगणना 2011 के अनुसार, भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट 22 भाषाओं में कौन सी भाषा बहुत कम लोगों द्वारा बोली जाती है?
क) नेपाली ख) मणिपुरी
ग) संस्कृत घ) सिंधी

14) भारतीय संविधान के किस अनुच्छेद के अनुसार उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालय में सभी कार्यवाहियाँ अंग्रेजी भाषा में होंगी?
क) अनुच्छेद 343 ख) अनुच्छेद 344
ग) अनुच्छेद 346 घ) अनुच्छेद 348

15) भारतीय संविधान के अनुसार हिंदी भारत की ....है।
क) राज्यभाषा ख) राष्ट्रभाषा
ग) राजभाषा घ) संपर्क भाषा

नोट : राजभाषा प्रश्नोत्तरी के उत्तर के लिए पृष्ठ संख्या 49 देखें

संकलनकर्ता:
बरुन चौधरी
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर

हमारे बैंक की गृह पत्रिका वाणी का 138वां संस्करण राजभाषा विशेषांक पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। पत्रिका का अवलोकन करने पर उसकी उत्कृष्ठता एवं श्रेष्ठ संपादकता परिलक्षित होती है । पत्रिका में संकलित माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार एवं सभी कार्यपालकों के संदेश प्रेरणादायी हैं और पाठकों के बीच नवीन ऊर्जा का संचार करते हैं। 'भारत की अध्यक्षता में जी-20 का सफल आयोजन' एवं 'डिजिटल मार्केटिंग' शीर्षक वाला लेख बेहद ज्ञानवर्धक था। साहित्य का सफरनामा के अंतर्गत 'आदमी को समझने के लिए सामने से नहीं कोण से देखना चाहिए' एवं विशेष आलेख के अंतर्गत 'चंद्रयान 3 : चाँद पर भारत' नामक आलेख बेहद रूचिकर हैं। 'वाणी' पत्रिका के बेहतरीन एवं रोचक अंक के प्रकाशन हेतु संपूर्ण संपादक मंडल को हार्दिक बधाई!

अंजनी कुमार
मुख्य क्षेत्रीय प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता-II

हमें आपके बैंक की तिमाही गृह पत्रिका 'वाणी' का सितंबर, 2023 अंक प्राप्त हुआ। इस अंक में आपके बैंक स्तर पर राजभाषा विषयक गतिविधियों को प्रमुखता से दर्शाया गया है। साथ ही, प्रासंगिक बैंकिंग विषयों पर सारगर्भित आलेख भी प्रकाशित किए गए हैं। पत्रिका के इस अंक में राजभाषा कार्यान्वयन के विविध पहलुओं और आयामों को विस्तार से रेखांकित किया गया है तथा विविध क्षेत्रों में राजभाषा के प्रसार को भी बखूबी दर्शाया गया है।

श्री एस.पी. महेश कुमार, महा प्रबंधक के आलेख 'आंध्र प्रदेश का भाषाई परिदृश्य और हिंदी' में बताया गया है कि किस तरह दक्षिण भारतीय भाषाएं हिंदी की विकास यात्रा की सहभागी रही हैं। श्री योगेश कुमार साव के आलेख 'डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण विधेयक, 2023' में डेटा की सुरक्षा और महत्व को प्रभावी ढंग से रेखांकित किया गया है। सुश्री नेहा रंजन के आलेख 'हिंदी विश्व भाषा की ओर' में वैश्विक स्तर पर हिंदी की बढ़ती स्वीकार्यता और महत्व को रेखांकित किया गया है।

राजभाषा विशेषांक में हिंदी और राजभाषा से संबंधित उपयोगी आलेखों का प्रकाशन, राजभाषा विषयक कार्यक्रमों की प्रभावी प्रस्तुति तथा विशेष रूप से राजभाषा गतिविधियों से युक्त वार्षिक कैलेंडर का प्रकाशन सराहनीय है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए पूरी संपादकीय टीम को हार्दिक बधाई एवं आगामी अंक के लिए ढेर सारी शुभकामनाएं!

संजय सिंह
प्रमुख - राजभाषा एवं संसदीय समिति
बैंक ऑफ बड़ौदा

हमें आपके बैंक की गृह पत्रिका वाणी प्राप्त हुई। पत्रिका की रूपरेखा एवं साज-सज्जा अत्यंत ही आकर्षक है। इस अंक को आपने 'राजभाषा विशेषांक' के रूप में जारी किया है जो इसमें निहित रोचक लेखों से स्वत: ही स्पष्ट हो रहा है। इस अंक से निश्चित ही पाठक लाभांवित होंगे। विशेष रूप से देखा जाए तो तकनीकी एवं बैंकिंग विषयों पर समाहित लेख जैसे 'भारत की अध्यक्षता में जी-20 का सफल आयोजन', 'डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण विधेयक, 2023' एवं 'हिंदी विश्व भाषा की ओर' इसे और भी ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय बनाते हैं। पत्रिका एक बेहतरीन एवं रोचक अंक के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई!

ई.रमेश
सहायक महा प्रबंधक
प्रधान कार्यालय, केनरा बैंक

आपकी गृह पत्रिका 'वाणी' का 138वॉ अंक, राजभाषा विशेषांक प्राप्त हुआ। पत्रिका पाकर बहुत खुशी हुई। विभिन्न विषयों के आलेख पढ़े। मीडिया, जी-20, भाषाई परिदृश्य, चंद्रायान 3 : चाँद पर भारत, साहित्य का सफरनामा, प्रवासी भारतीय, डिजिटल इंडिया आदि विषयों पर प्रस्तुतीकरण सुंदर रही। विशेषत: डिजिटल इंडिया तथा तमिल के बीच अंतर संबंध की बात मुझे बहुत प्रासंगिक लगी। एक ओर हिंदी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है तो दूसरी ओर वह सभी भारतीय भाषाओं की बहन होने के नाते विभिन्न भाषाओं के उपयोगी और प्रचलिए शब्दों को अपने में समाहित करके सही मायनों में भारत की संपर्क भाषा होने की महती भूमिका निभा रही है। आशा है हिंदी इसी तरह भारतीय भाषाओं को साथ लेकर आगे बढ़ेगी। 'वाणी' पत्रिका के लेखन और संपादन से जुड़े आप सभी को साधुवाद और भविष्य के लिए शुभकामनाएं!

डॉ श्रावणी भट्टाचार्य
सहायक प्राध्यापक व प्रमुख, भाषा विभाग
स्टेला मेरीस कॉलेज, चेन्नै

माननीय राष्ट्रपति **श्रीमती द्रौपदी मुर्मू** द्वारा पीएमएफएमई योजना के अंतर्गत बैंक को प्रदत्त **"सर्वोतम बैंक का पुरस्कार"** ग्रहण करते हुए मुख्य क्षेत्रीय प्रबंधक - दिल्ली, **श्री अनिल कुमार**

01 एवं 02 दिसंबर 2023 को चेन्नै में क्षेत्रीय प्रबन्धकों के लिए आयोजित सम्मेलन में उपस्थित हैं - एमडी व सीईओ **श्री अजय कुमार श्रीवास्तव,** कार्यपालक निदेशक गण एवं महा प्रबन्धक गण

पी एम विश्वकर्मा

भारत की आत्मा का निर्माण

ऋण की मात्रा

₹3* लाख तक

- प्रथम ऋण किश्त ₹1 लाख तक
- दूसरी ऋण किश्त ₹2 लाख तक
- कोई संपार्श्विक प्रतिभूति नहीं
- कोई गारंटी नहीं

अभी आवेदन करें

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक
Indian Overseas Bank
आपकी प्रगति का सच्चा साथी
Good People to grow with

www.iob.in   हमें फॉलो करें @IOBindia   1800 890 4445